अहिंसक-नैतिक चेतना का अग्रदूत पाक्षिक

# अणुव्रत

वर्ष : 55 ■ अंक : 6 ■ 16-31 जनवरी, 2010

संपादक : डॉ. महेन्द्र कर्णावट
सहयोगी संपादक : निर्मल एम. रांका

*अणुव्रत में प्रकाशित रचनाकारों द्वारा व्यक्त विचारों से संपादक/प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है।*

**❒ सदस्यता शुल्क :**

- एक प्रति : बारह रु.
- वार्षिक : 300 रु.
- त्रैवार्षिक : 700 रु.
- दस वर्षीय : 2000 रु.

**❒ विज्ञापन सहयोग :**

- द्वितीय मुख पृष्ठ 'रंगीन' : 10,000 रु.
- तृतीय मुख पृष्ठ 'रंगीन' : 10,000 रु.
- चतुर्थ मुख पृष्ठ 'रंगीन' : 10,000 रु.
- साधारण पृष्ठ 'पूरा' : 3,000 रु.
- साधारण पृष्ठ 'आधा' : 2,000 रु.

**❒ सम्पर्क सूत्र :**

**अणुव्रत महासमिति**
**210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,**
**नई दिल्ली 110002**

दूरभाष : (011) 23233345
फैक्स : (011) 23239963

E-mail : anuvrat_mahasamiti@yahoo.com
Website : anuvratinfo.org

## इस अंक में


| | | |
|---|---|---|
| ◆ यथा प्रजा तथा राजा | *आचार्य तुलसी* | 3 |
| ◆ क्या हम स्वतंत्र हैं | *आचार्य महाप्रज्ञ* | 5 |
| ◆ नवनिर्माण की बाट जोहता भारत | *सुनील* | 8 |
| ◆ आखिर कब ? मेरा भारत महान | *रमेश हिरण* | 10 |
| ◆ जरा ! याद करो कुर्बानी | *अशोक सहजानन्द* | 12 |
| ◆ आक्रमणकारी नहीं सहयोगी बनें | *भूरचंद जैन* | 14 |
| ◆ विश्व शांति का पैगाम है अहिंसा | *साध्वी कनकरेखा* | 16 |
| ◆ धर्म निरपेक्षता क्या, कैसे, क्यों? | *प्रो. योगेश चन्द्र शर्मा* | 18 |
| ◆ स्वस्थ जीवन और पंच तत्त्व, पंच रंग संतुलन | *मुनि किशनलाल* | 22 |
| ◆ राष्ट्रीय शर्म दिवस | *जसविंदर शर्मा* | 24 |
| ◆ नैतिक मूल्यों का ह्रास | *कुसुम जैन* | 25 |
| ◆ आंगन से कचहरी | *तारा सुराना* | 26 |
| ◆ भारतीय संस्कृति | *रूप नारायण काबरा* | 27 |
| ◆ आचार्य काका कालेलकर : 125वां जयंती वर्ष | | 30 |
| ◆ अणुव्रत लेखक पुरस्कार-2008 | *अणुव्रत डेस्क* | 33 |


## ■ स्तंभ


| | |
|---|---|
| ◆ संपादकीय | 2 |
| ◆ राष्ट्र चिंतन | 7 |
| ◆ कविता | 15, 28, 29 |
| ◆ झाँकी है हिन्दुस्तान की | 32 |
| ◆ अणुव्रत आंदोलन | 35-40 |

# जनतंत्र की मर्यादा का सवाल

भारतीय गणतंत्र के छठे दशक के उत्तरार्द्ध में कुछ सवाल उठे हैं जो जनतंत्र की मर्यादाओं से जुड़े हुए हैं। जनतंत्र का मायना है जनता के लिए, जनता के द्वारा, जनता का शासन। पर इन वर्षों में जनता द्वारा निर्वाचित जन प्रतिनिधियों ने जो उदाहरण प्रस्तुत किये हैं, उससे जनतंत्र का रथ गलत दिशा में बढ़ा है। चुनाव के समय सुख-दुख में बराबर भागीदारी निभाने का वायदा करने वाले जनप्रतिनिधियों की कथनी और करनी में भारी अंतर दिखाई दे रहा है। अपनी करनी पर राजनेताओं को शर्म आती है या नहीं पर जनता जरूर शर्मसार हुई है

- मधु कोड़ा ने जिस तरह से मुख्यमंत्रित्व काल में चारों हाथों से सम्पत्ति बटोर भ्रष्टाचार के बेताज बादशाह का पद हथियाया उससे लगता है कि राजनीति भ्रष्टाचार की पहली सीढ़ी बन गई है।
- एस.एम. कृष्णा, शशि थरूर, सुलतान अहमद इत्यादि केन्द्रीय मंत्रियों ने राजकीय खर्च पर पाँच सितारा होटलों में महीनों रह कर जिस तरह से सरकारी खजाने को खाली किया और विदेशी संस्कृति का सुख भोगा उससे इन्हें नहीं लगता कि हमारे देश की आधी आबादी को दो वक्त की रोटी तक नहीं मिलती है।
- सांसद निधि का उपयोग कुछ ले-देकर हो रहा है। सांसद और विधायक उन्हीं कार्यों की स्वीकृति दे रहे हैं जहाँ से कुछ मिलने की संभावनाएं होती हैं। पूर्व में ग्यारह सांसदों पर इस तरह के आरोप लगे और संसद ने उन्हें निष्कासित किया।
- संसद एवं विधान मंडलों में महत्त्वपूर्ण विषय चर्चा के समय सांसद-विधायकों की अनुपस्थिति का प्रतिशत बढ़ता ही जा रहा है। इस बिन्दु पर संसद में हंगामा भी मचा है। सभी दलों के नेताओं ने अनुपस्थित रह रहे सांसदों से स्पष्टीकरण मांगा और उपस्थित रहने का निर्देश भी दिया पर स्थिति जस की तस है इससे लगता है विधान मंडलों में प्रश्न पूछना भी भ्रष्टाचार का एक माध्यम बन गया है।
- जुलाई 2008 में डॉ. मनमोहन सिंह सरकार के विरुद्ध लाये गये अविश्वास पर विश्वास मत प्राप्त करने के दौरान भाजपा के तीन सांसदों ने नोटों की गड्डियाँ सदन के पटल पर रखीं और कहा कि यह गड्डियाँ सत्ता पक्ष ने दी हैं अर्थात जनतंत्र पर अर्थतंत्र हावी हो रहा है।
- भाषा, जातीयता, प्रांतीयता के नाम पर विधान मंडलों में आये दिन जिस तरह की घटनाएं हो रही हैं उससे तो यही परिलक्षित होता है कि हम अपने स्वार्थ के लिए भारत की अखंडता को भी दांव पर लगाने से नहीं चूक रहे हैं।

उक्त घटनाएं संकेत कर रही हैं कि अर्थबल-बाहुबल-कदाचार-जनतंत्र का पर्याय बनता जा रहा है। भारत जैसे विकासशील एवं गरीब देश में स्वयं को जनता का सेवक कहलाने वाले लोग ही जब अमर्यादित आचरण करते हैं, तो दोष किसे दें? मतदाता को या व्यवस्था को! राजनैतिक दलों के साथ-साथ मतदाताओं की भी जिम्मेदारी है कि वे देश की पीड़ा को समझें और किसी दागी व अपराधिक प्रवृत्ति में लिप्त व्यक्ति को अपना उम्मीदवार न बनाएं, न ही उन्हें अपना मत दें जो स्वहित के लिए जनतंत्र की बलि चढ़ा रहे हैं। लोकतंत्र की अक्षुण्णता के लिए आवश्यक है कि मतदाता दल-धन-जाति-भाषा-सम्प्रदाय-शराब के लोभ को त्याग कर उन चरित्र सम्पन्न व्यक्तियों को अपना जन प्रतिनिधि निर्वाचित करें जो देशहित, संविधान की मर्यादा और जनतंत्र की मर्यादाओं का आदर करते हैं।

■ **डॉ. महेन्द्र कर्णावट**

# यथा प्रजा तथा राजा

**आचार्य तुलसी**

एक प्रश्न मन में उभरता है, क्या देश के राजनेताओं के लिए एक निश्चित योग्यता का निधारण नहीं होना चाहिए? चिकित्सा-क्षेत्र में आने वालों के लिए निश्चित परीक्षाएँ उत्तीर्ण करना आवश्यक है। इंजीनियर बनने या अध्यापक बनने के लिए भी निश्चित योग्यता चाहिए। छोटे-से-छोटे क्लर्क पद के लिए भी कुछ-न-कुछ योग्यता का होना अनिवार्य है। किन्तु दुःखद स्थिति यह है कि देश की राजनीति में आने वालों के लिए किसी भी योग्यता का न निर्धारण है और न आवश्यक ही समझा जा रहा है। कई बार तो ऐसा अनुभव होता है कि जो अन्याय सभी क्षेत्रों में अयोग्य सिद्ध हो जाता है, शायद राजनीति में आने का वही सबसे बड़ी योग्यता हो।

एक व्यंग्य कहीं पढ़ा था मैंने। एक बार स्कूल में अध्यापकों ने अपने छात्रों से पूछा अपने जीवन में तुम क्या बनना पसंद करोगे? एक छात्र ने कहा मैं एक वैज्ञानिक बनना चाहता हूँ, इसीलिए मैं एम॰एस॰सी॰ करना पसंद करूँगा। दूसरे ने कहा मैं इंजीनियरिंग के क्षेत्र में जाना पसंद करूँगा, क्योंकि मैं एक कुशल इंजीनियर बनना चाहता हूँ। इसी प्रकार सबने अपने-अपने मनपसंद विषय बतलाए। फिर अध्यापक महोदय ने उस छात्र की ओर इशारा करते हुए पूछा, जो कक्षा में सबसे अधिक शरारती और उद्दण्ड था। उस छात्र ने कहा श्रीमन्! मेरा मन पढ़ने में बिल्कुल नहीं लगता। आप स्वयं देख रहे हैं कि इसी कक्षा में मेरा तीसरा वर्ष चल रहा है। इस स्थिति में मैं अध्ययन में आगे बढ़ पाऊँगा, यह संभव नहीं है। बिना अध्ययन किए मैं वैज्ञानिक, डॉक्टर, इंजीनियर आदि तो बन नहीं सकता। हाँ, देश का नेता मैं अवश्य बन सकता हूँ। क्योंकि नेता के लिए किसी भी योग्यता का कोई प्रमाण-पत्र भी जरूरी नहीं होता। फिर जिस योग्यता का प्रमाण-पत्र एक नेता को चाहिए, वे सारे गुण मेरे में आप बचपन से देख ही रहे हैं। जहाँ भी उपद्रव या हड़ताल करवाना हो, किसी के विरोध में आंदोलन खड़ा करना हो, अपने समर्थन में नारेबाजी करवानी हो, इन सब कार्यों से मैं सदा अगुआ रहा हूँ। इसलिए मेरे जीवन का उद्देश्य एक नेता बनना ही है।

**सही नेता कौन?**

आज के राजनैतिक चरित्र पर यह व्यंग्य ही नही, कटु सच्चाई भी है। ऐसे-ऐसे राजनेता देश की बागडोर सम्हाले हुए मिल जायेंगे, जो अपने हस्ताक्षर भी बड़ी कठिनाई से कर पाते हैं। न किसी शैक्षणिक योग्यता की अपेक्षा है इस क्षेत्र में और न किसी बौद्धिक अथवा शारीरिक योग्यता की ही। केवल जोड़-तोड़ की योग्यता चाहिए या फिर जातीय अथवा साम्प्रदायिक प्रमाण-पत्र चाहिए। यही कारण है स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद भी जातिवाद, सम्प्रदायवाद, भाषावाद और प्रांतवाद का जहर देश की रगों में खून से भी अधिक मात्रा में प्रवाहित होने लगा है। क्योंकि इन्हीं के आधार पर संसद और विधान सभाओं के उम्मीदवारों का निर्णय होता है, इन्हीं भावनाओं को उभारकर वोटों को अपनी-अपनी ओर खींचा जाता है, इन्हीं के आधार पर मंत्रिपरिषद में प्रतिनिधित्व मिलता है। फिर हम आशा करें कि देश में जातिवाद, भाषावाद, सम्प्रदायवाद नहीं पनपे, क्या यह दुराशा ही नहीं होगी?

जब मैं राजनेताओं की योग्यता के निर्धारण की चर्चा करता हूँ तो उसका संबंध केवल शैक्षणिक उपाधियाँ या बाहरी मानदण्डों से ही नहीं हैं। उसका संबंध आंतरिक चरित्र से भी है। संसद में चुनकर आने वाले व्यक्ति के आंतरिक चरित्र का मूल्यांकन होना भी अति आवश्यक है। उसका व्यक्तिगत जीवन शुद्ध और पवित्र हो, दुर्व्यसनों से मुक्त हो, निर्लोभी हो राष्ट्रीय धन का उपयोग अपने लिए, अपने परिवार और संबंधियों के लिए नहीं करने वाला हो, दल से ऊपर राष्ट्रीय हित जिसके लिए प्रमुख हो, राष्ट्र ही जिसके लिए सर्वस्व हो, वह सही अर्थों में नेता और देश को सर्वतोमुखी समृद्धि की ओर ले जाने वाला होता है। यह तभी संभव हो सकता है जब उसका अपना चरित्र उदात्त होगा, दृष्टि उदार होगी और चिंतन राष्ट्र का व्यापक हित लिए हुए होगा।

प्रश्न हो सकता है, आज के राजनैतिक परिवेश में क्या यह संभव है? मुझे इसमें कोई कठिनाई नहीं लगती। यदि इसमें कठिनाई हो, तो भी उनको दूर किया जाना चाहिए। क्योंकि राष्ट्र की यह एक अपरिहार्य आवश्यकता है। पर यह संभव तभी हो सकता है जब राजनैतिक दल और जनता दोनों इस दिशा में सहकार करें। राजनैतिक दल अपने उम्मीदवारों का चयन जाति या सम्प्रदाय से ऊपर उठाकर

बाह्य-आंतरिक चरित्र-सम्पन्नता के आधार पर करें। उनका उद्देश्य येन-केन-प्रकारेण चुनाव जीतना न होकर, देश को स्वस्थ एवं स्वच्छ नेतृत्त्व-प्रदान करना हो।

**यथा राजा तथा प्रजा**

जनता में इस दृष्टि से बहुत अधिक जिम्मेवारी आती है। किस प्रकार के व्यक्ति चुनकर आयें, वह जनता के निर्णय पर ही निर्भर करता है। आज 'यथा राजा तथा प्रजा' की उक्ति अपने में उतनी अर्थवान नहीं रह गई है, जितनी वह एकतंत्रीय राज्य-व्यवस्था में थी। जनता के प्रतिनिधियों को ही आज राज्य-संचालन करना होता है और वे प्रतिनिधि कौन हों, इसका निर्णय भी जनता को ही करना होता है। इन स्थितियों में 'यथा प्रजा तथा राजा' जैसी प्रजा होगी वैसा ही राज, नेता होगा। जनता यदि गलत एवं भ्रष्ट व्यक्तियों को संसद में चुनकर भेजती हो तो स्वच्छ प्रशासन की आशा करना व्यर्थ है। फिर नेताओं को कोसना भी अपने में कोई माने नहीं रखता। इसलिए जनता को इस दिशा में प्रबुद्ध होना जरूरी है।

जो जनता अपने वोटों को चंद चांदी के टुकड़ों में बेच देती हो, एक-दो बोतल शराब के बदले गलत-सही उम्मीदवारों की परख खो देती हो, सम्प्रदाय या जाति के उन्माद में योग्य-अयोग्य की पहचान खो देती हो, वह जनता योग्य उम्मीदवार को संसद में कैसे भेज पाएगी? लोकतंत्र की नींव ही जनता के मतों पर टिकी होती है। वह मत ही यदि भ्रष्ट हो जाता है तो प्रशासन तो भ्रष्ट होगा ही। आज जो राजनीति में भ्रष्टाचार पनप रहा है, उसके पीछे प्रमुख कारण चुनावों में फैल रही भ्रष्टता ही है। अतः वोट की स्वच्छता पर ध्यान देना अत्यंत आवश्यक है। इसकी सम्पूर्ण जिम्मेवारी जनता पर है। कोई भी राजनैतिक दल अपने मतदाताओं को चाहे किसी भी गलत उपाय से आकृष्ट करना चाहे, यदि देश की जनता उसमें सहयोगी नहीं बनती है तो भ्रष्टाचार आगे नहीं फैल पाएगा, वहीं पर निरुद्ध हो जाएगा। जनता के सहकार से ही भ्रष्टाचार आगे फैलता है।

**राष्ट्र गौण, स्वार्थ प्रमुख**

योग्य उम्मीदवारों को छोड़कर गलत एवं भ्रष्ट लोगों के चुनाव में प्रमुख कारण व्यक्ति का अपना स्वार्थ होता है। वह सोचता है कि योग्य व्यक्तियों के निर्वाचन से मुझे गलत ढंग से कोटा नहीं मिल पाएगा, मेरे गलत आचरणों पर पर्दा नहीं डाला जा सकेगा, मेरी जाति या सम्प्रदाय को बढ़ावा नहीं मिल सकेगा, इत्यादि अनेक स्वार्थसंकुल उद्देश्यों के कारण भी योग्य उम्मीदवारों की उपेक्षा देखी जाती है। विघटन की ओर बढ़ रहे राष्ट्र की इस स्थिति पर गंभीरता से ध्यान दिया जाना जरूरी है। आज स्थिति यह है कि जाति प्रमुख है, राष्ट्र गौण है। सम्प्रदाय प्रमुख है, राष्ट्र उपेक्षित है। भाषा और प्रांत प्रमुख है, राष्ट्र विमुख है। परिणामतः दिन-प्रतिदिन राष्ट्र दुर्बल होता जा रहा है जाति, सम्प्रदाय, भाषा आदि सबल होते जा रहे हैं। एक समय था जब व्यक्ति धर्म के नाम पर गलत कार्य में संलग्न होने में हिचकिचाता था। आज पश्चिम की हवा से धर्म के मूल्य लगभग टूट चुके हैं। राष्ट्रीय मूल्य स्थापित नहीं हो पाये हैं। धर्म और राष्ट्र दोनों ही आस्था के केन्द्र नहीं होने से व्यक्तिगत स्वार्थ प्रमुख बन गए हैं जाति, धर्म, सम्प्रदाय और भाषा के प्रश्न गंभीर होते जा रहे हैं, उत्तर और दक्षिण के भेद की आवाजें सुनाई दे रही हैं। ये सब क्यों हैं? केवल इसलिए कि राष्ट्र की भावात्मक एकता टूट रही है।

**ऐसे-ऐसे राजनेता देश की बागडोर सम्हाले हुए मिल जायेंगे, जो अपने हस्ताक्षर भी बड़ी कठिनाई से कर पाते हैं। न किसी शैक्षणिक योग्यता की अपेक्षा है इस क्षेत्र में और न किसी बौद्धिक अथवा शारीरिक योग्यता की ही। केवल जोड़-तोड़ की योग्यता चाहिए या फिर जातीय अथवा साम्प्रदायिक प्रमाण-पत्र चाहिए।**

**जनता का चरित्र उज्ज्वल हो**

इन सब समस्याओं का एक ही समाधान है, वह है कि जनता का चरित्र उज्ज्वल हो। इस दृष्टि से जनता का ध्यान कुछ बातों की ओर मैं विशेष रूप से आकृष्ट करना चाहूँगा। मतदान जितना स्वस्थ व शुद्ध होता है, लोकतंत्र उतना ही उज्ज्वल होता है। मतदान की शुद्धता के लिए आवश्यक है कि रुपये तथा अन्य प्रलोभन में आकर मतदान नहीं करें। जाति, सम्प्रदाय के आधार पर नहीं किन्तु चरित्र तथा गुणों के आधार पर मतदान का निर्णय करें। चुनाव के समय मद्य एवं मादक द्रव्यों के प्रचलन का प्रतिकार करें, अश्लील प्रचार व मिथ्या आक्षेप से बचें तथा कहीं पर भी अशांति या उपद्रव फैलाने का प्रयत्न नहीं करें। उम्मीदवारों के लिए आवश्यक है कि चुनाव में गलत साधनों से विजयी होने का प्रयत्न नहीं करें, दल-बदल को प्रोत्साहन न दें, सत्ता के लिए नैतिक मूल्यों की हत्या नहीं करें तथा राष्ट्र की भावात्मक एकता के लिए सदैव प्रयत्नशील रहें। राजनैतिक दलों के लिए यह आवश्यक है कि वे अपने उम्मीदवारों के चयन में एक निश्चित मानदंड अवश्य बनायें। उम्मीदवारों के चयन में योग्य व चरित्र-सम्पन्न व्यक्तियों को ही प्रमुखता दें।

वर्षों पूर्व मैंने अणुव्रत- आंदोलन के मंच से समस्त राजनैतिक दलों के प्रमुख प्रतिनिधियों के मध्य एक चुनाव-आचार-संहिता प्रस्तुत की थी। मुझे हर्ष इस बात का हुआ कि सभी दलों ने सर्व-सम्मति से इसकी महत्ता को स्वीकार किया था। किन्तु मुझे यह कहने में कोई संकोच नहीं है कि उसके महत्त्व को स्वीकार करते हुए भी किसी ने भी अपने चुनाव अभियान में इसके पालन की ओर ध्यान नहीं दिया। मैं समझता हूँ कि अब यह एक और अवसर भारतीय जनता के सामने है, जिसमें वह अपने उन्नत चरित्र का परिचय देकर देश के उज्जवल भविष्य में सहायक बन सकती है।

# क्या हम स्वतंत्र हैं

आचार्य महाप्रज्ञ

**कौन व्यक्ति यह कह सकता है कि मैं स्वतंत्र हूँ। स्वतंत्र होना बहुत कठिन काम है। स्वतंत्र वह होता है, जो प्रतिक्रिया का जीवन नहीं जीता, किन्तु क्रिया का जीवन जीता है।**

इस दुनिया में सब प्रकार के लोग जन्म लेते हैं। सब लोग कृपालु भी नहीं होते तो सब लोग क्रूर भी नहीं होते। जहाँ पर महावीर, बुद्ध, राम, कृष्ण जैसे व्यक्ति उत्पन्न हुए हैं, अशोक जैसे महान् व्यक्ति उत्पन्न हुए हैं तो दूसरी ओर उनसे उल्टे व्यक्ति भी उत्पन्न हुए हैं। हिटलर इसी दुनिया में पैदा हुआ था, जिसने पाँच लाख यहूदियों को मरवा डाला। केवल दोष के आधार पर नहीं, किन्तु यहूदी को मारना है, जाति को समाप्त करना है, उस जाति-विद्वेष के आधार पर इतना क्रूर कर्म किया। नादिरशाह भी इसी दुनिया में पैदा हुआ और याह्याखां भी इसी दुनिया में उत्पन्न हुआ।

महान सीरियस, जो आस्ट्रिया का राजा था, इसी दुनिया में उत्पन्न हुआ। उसने लिखा 'मैं गया और गुलामों को मुक्त कराया। यहूदी धर्म को बचाया। दुनिया का भला किया। बंदियों को छोड़ा। खेतों को सींचने की सुविधा दी। जनता के कष्टों को दूर किया।' पचीस सौ वर्ष पहले हुए महान् सीरियस ने यह लिखा साइप्रेस में, तो दूसरी ओर असुर लिखता है कि मैंने अमुक गांव को उजाड़ा, मैंने तीन हजार सैनिकों को जिन्दा जला डाला।

इस प्रकार ये दोनों धाराएँ दुनिया में चलती हैं एक क्रूरता की और एक करुणा की। एक उदारता की और एक संकुचितता की। इस स्थिति से मानवीय स्वतंत्रता का इतिहास इतना दयनीय, इतना करुण और इतना निर्मम रहा कि मनुष्य को बहुत कम स्वतंत्रता मिली है। सारी दुनिया के इतिहास को देखें तो हमें मालूम होगा कि पौने सोलह आना परतंत्रता ही सही है, मुश्किल से एक पैसा मनुष्य को स्वतंत्रता मिली है।

फिर हम क्यों स्वतंत्रता की बात करें? मानवीय व्यथा की करुण कहानी को इस पर तोलें तो ऐसा लगता है कि यह दुनिया जीने के लायक नहीं है। यहाँ वही आदमी जी सकता है, जिसके पास हृदय नहीं है, कामना नहीं है, जो व्यथा को समझने की क्षमता नहीं रखता। अन्यथा इतनी गुलामी, इतनी परतंत्रता, इतनी जकड़न और मनुष्यों को पशु से भी गया-बीता मानने को इतनी तीव्र मनोवृत्ति कि जिसका चित्रण करना भी एक सहृदय व्यक्ति के हृदय में भय पैदा कर देता है।

इस परतंत्रता का आवरण मनुष्य पर क्यों डाला जाता है? कौन डालता है? वह व्यक्ति डालता है, जो स्वयं स्वतंत्र नहीं है और मैं समझता हूँ कि हमारी सबसे बड़ी कठिनाई यही तो है कि किस व्यक्ति को स्वतंत्र माना जाए? केवल शासन थोपना और जेल के सींखचों में बंद कर देना, इतनी ही परतंत्रता की गाथा, व्याख्या और अर्थ नहीं है। जो अपनी मानसिक वृत्तियों के अधीन होकर ऐसा काम करते हैं, वे स्वतंत्र कहाँ है?

यह मानसिक जकड़न, यह संस्कारों की जकड़न, इससे छूट पा रहा है। मदारी लोग बन्दर को पकड़ने के लिए एक छोटे-से बर्तन में चना डाल देते हैं। बन्दर चने के शौकीन होते हैं। चने खाने के लिए वे बर्तन में हाथ डालते हैं। मुट्ठी में चने भरकर वे हाथ बाहर निकालने का प्रयत्न करते हैं। मुट्ठी बन्द होने पर हाथ बाहर नहीं निकलता, क्योंकि बर्तन का मुंह इतना संकरा है कि बन्द मुट्ठी निकालना सरल नहीं और चनों को छोड़ना उन्हें स्वीकार्य नहीं और मुट्ठी को खोले बिना निकालना सिकोरे को मान्य नहीं। दोनों ओर कठिनाई है। वह सोचते हैं कि अन्दर से किसी ने हाथ पकड़ लिया। वहीं के वहीं खड़े रह जाते हैं और पकड़ने वाला तत्काल पकड़ लेता है। यह किसकी पकड़ है? अपनी वृत्ति की, परतंत्रता की पकड़ है। ऐसी पकड़ न जाने कितने लोगों में होती है। कौन व्यक्ति यह कह सकता है कि मैं स्वतंत्र हूँ। स्वतंत्र होना बहुत कठिन काम है। स्वतंत्र वह होता

है, जो प्रतिक्रिया का जीवन नहीं जीता, किन्तु क्रिया का जीवन जीता है, आप देखिए, थोडी-सी बात किसी ने अप्रिय कही और क्रोध आ जाता है। क्या यह क्रिया का जीवन है? क्रिया का नहीं है, किन्तु प्रतिक्रिया का है। व्यक्ति प्रतिबिम्ब का जीवन जी रहा है। सामने जैसा आता है वैसा वह बन जाता है।

सारी दुनिया प्रतिक्रिया का जीवन जी रही है क्या प्रतिक्रिया का जीवन जीने वाला स्वतंत्र हो सकता है? स्वतंत्रता का समर्थन कर सकता है? या स्वतंत्रता का दावा कर सकता है? जो कितना करता है उतना ही झूठ है। हमारे यहाँ अध्यात्म की गाथा गायी गई। उसे इसलिए महत्त्व दिया गया कि अध्यात्म को समझने वाला व्यक्ति प्रतिक्रिया का जीवन नहीं जीता। कोई सामने गाली देता है तो वह हँसता है, मुस्कराता है, क्योंकि वह प्रतिक्रिया का जीवन नहीं जीता। अन्यथा गाली दे तो उसे भी गाली देनी चाहिए, पीटे तो उसे भी पीटना चाहिए और मारे तो उसे भी मारना चाहिए। ईंट से मारे तो पत्थर से जवाब देना चाहिए। उस स्थिति में आध्यात्मिक व्यक्ति क्या करता है? गाली नहीं देता, मारता-पीटता नहीं। पूर्व प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने एक बार कहा था कि कुछ लोग हमें धमकियाँ देते हैं, परन्तु वे धमकियाँ अब कोई काम की नहीं होंगी। हम लोग धमकियों से डरेंगे नहीं और साथ-साथ भारत धमकियाँ देना भी नहीं चाहता। धमकी को धमकी देना भारत नहीं जानता। यह भारत की अपनी प्रकृति की विशेषता है। धमकी के सामने वह झुकता भी नहीं है किन्तु धमकी देना भी नहीं चाहता। यह है स्वतंत्रता, यह है क्रिया का जीवन। अगर धमकी का जबाब धमकी से दिया जाए तो वह होगा प्रतिक्रिया का जीवन। यानी परतंत्रता का जीवन। हमारा जीवन ऐसे बन जाता है जैसे बच्चे का खिलौना। बच्चा खिलौने को चाहे जैसे इधर-उधर कर देता है। हमारा जीवन वैसा ही बन जाता है कि कोई रुलाना चाहे तो हम रो सकते हैं। हँसाना चाहे तो हँस सकते हैं, खिलाना चाहे तो खिल सकते हैं, मुरझाना चाहे तो मुरझा सकते हैं। दो बात प्रशंसा की कहता है हम खिल जाते हैं। दो गालियाँ देता है, हम मुरझा जाते हैं। थोड़ा-सा कुछ दिया, हम खुश हो जाते हैं, और थोड़ी-सी कोई अप्रिय घटना घटी, हम रोने लग जाते हैं। यह हमारा परतंत्रता का जीवन होता है।

हमें केवल शारीरिक, भौतिक, सामाजिक और राष्ट्रीय दृष्टि से ही स्वतंत्रता पर विचार नहीं करना है और भारत ने कभी ऐसा नहीं किया। जो केवल इन बातों पर ही विचार करते हैं, उनका अधूरा दर्शन, अधूरा दृष्टिकोण और अधूरी बात रहती है।

बहुत बड़ी कठिनाई है चरित्र-निर्माण की। या तो हमारे चरित्र का निर्माण होता है भय के आधार पर या हमारे चरित्र का निर्माण होता है प्रशंसा या दण्ड के आधार पर। किन्तु इनसे व्यक्ति का कोई स्वतंत्र व्यक्तित्त्व नहीं बनता, चरित्र का कोई मौलिक आधार नहीं बनता, कोई पृष्ठभूमि नहीं बनती। वे धर्म करते हैं तो भय के आधार पर। वे सोचते हैं कि धर्म नहीं करेंगे तो नरक में चले जाएंगे। नरक में जाने का भय है इसलिए धर्म करते हैं। धर्म का कोई स्वतंत्र मूल्य नहीं है। अगर आज कोई कह दे कि तुम हिंसा करो नरक में नहीं जाओगे तो वे हिंसा करने के लिए तैयार हो जाएंगे। इसलिए शायद कहा गया कि युद्ध जीतोगे तो लक्ष्मी मिलेगी। युद्ध में मरोगे तो देवांगना मिलेगी। यह देवांगना का प्रलोभन भी शायद युद्ध-स्थल में मरने में सहायक रहा।

यदि प्रलोभन के आधार पर हमारे चरित्र का निर्माण नहीं होता, शुद्ध कर्त्तव्य की भावना और आदर्श की निष्ठा के आधार पर हमारे चरित्र का निर्माण होता है तो शायद ऐसी बातें नहीं कही जातीं। बहुत बार यही कहा जाता है कि यह करोगे तो नरक में जाओगे और वह करोगे तो स्वर्ग में जाओगे। ये दोनों हमारे धर्म के कोण बन गये हैं एक भय का और एक प्रलोभन का। एक हाथ में भय का पलड़ा है और एक हाथ में प्रलोभन का पलड़ा है। अगर ये दोनों पलड़े टूट जाएँ तो धर्म भी हमारा टूट जाता है और इसीलिए धर्म टूट रहा है। आज के वैज्ञानिकों और बौद्धिक व्यक्तियों ने जब इस स्वर्ग और नरक की बात को थोड़ा-सा झुठला दिया तो आज धर्म की आस्था भी जरा धुंधली-सी हो गई क्योंकि जो आधार था वह टूटने लगा। अगर किसी का मूल उखड़ जाएगा तो फूल और पत्ती कहाँ टिकेंगे? धर्म का आधार होना चाहिए था, व्यक्ति का स्वतंत्र चिंतन, व्यक्ति का स्वतंत्र आदर्श और स्वतंत्र निष्ठा। जब हम स्वतंत्रता की बात करें तो बहुत गंभीर बात है कि हमारा मस्तिष्क, हमारा मन, हमारा हृदय, हमारी आस्थाएँ स्वतंत्र हों। उसी परिस्थिति में व्यक्ति स्वतंत्र हो सकता है जबकि वह बाहर के वातावरण से प्रभावित न हो। ऐसा कोई वातानुकूलित स्थान दुनियाँ में नहीं है जहाँ सब लोग बैठ जाएँ ओर बाहर का असर न हो। साधारण आदमी इतना भावुक होता है कि उस पर हर परिस्थिति का असर हो जाता है और उस असर के कारण वह प्रतिक्रिया का जीवन जीता चला जाता है। जिस व्यक्ति ने मेरा कुछ बिगाड़ दिया, जब तक मैं प्रतिशोध नहीं ले लेता हूँ तब तक मुझे चैन नहीं पड़ता। दस-बीस वर्ष तक भी उस प्रतिशोध की भावना को भुला नहीं पाता यह प्रतिशोध की तीव्र भावना, प्रतिक्रया की तीव्र भावना होते हुए क्या हम यह कह सकते हैं कि हम स्वतंत्र हैं? हम स्वतंत्र जीवन जीते हैं? हम स्वतंत्रता को समझें और अपने जीवन का निर्माण करें। जब भौगोलिक स्वतंत्रता प्राप्त नहीं होती, नागरिक अपने देश का स्वामी स्वयं नहीं होता तो वह अपने देश का निर्माण नहीं कर सकता। पूर्व बंगाल की जटिलता क्यों बढ़ी? बंगाल इतना उत्पादक देश जहाँ

से कि अरबो रुपयों का जूट निर्यात होता था फिर भी इतना गरीब क्यों रहा? वास्तव में वह सही अर्थ में स्वतंत्र नहीं था। उसकी सारी आमदनी का उपयोग दूसरे स्थान पर हो रहा था, पश्चिमी पाकिस्तान में हो रहा था। इसी प्रतिक्रिया ने बंगाल के निवासियों के मन में एक भावना पैदा की और उस भावना का यह परिणाम आया कि आज बंगलादेश स्वतंत्र हो गया।

**भौगोलिक स्वतंत्रता, राजनैतिक स्वतंत्रता न होने पर व्यक्ति अपने अस्तित्त्व का, अपने देश का निर्माण नहीं कर पाता। जहाँ हमारी चारित्रिक स्वतंत्रता नहीं है, वहाँ व्यक्ति अपने जीवन का निर्माण कैसे पर पाएगा? इसलिए हमें इस विषय पर बहुत गहराई से विचार करना चाहिए और यह सोचना भी बहुत जरूरी है कि हम अपने कर्त्तव्य का, चरित्र और निष्ठा का निर्धारण सिद्धांत के आधार पर करें, दूसरी चीज के आधार पर नहीं।**

आचार्य तुलसी बहुत बार उपदेश देते हैं कि समाज को थोड़ा बदलना चाहिए सामाजिक रूढ़ियों में परिवर्तन आना चाहिए, वैवाहिक प्रदर्शनों में परिवर्तन आना चाहिए जमाने के अनुसार कुछ बातें परिवर्तित होनी चाहिए। लोग यह अनुभव भी करते हैं कि वर्तमान की परिस्थिति में ऐसा होना चाहिए। परन्तु जब दूसरी ओर मुड़ते हैं, देखते हैं तो सोचते हैं कि यह नहीं करेंगे तो पड़ोसी क्या कहेंगे? सगे-संबंधी क्या कहेंगे? गांव क्या कहेगा? इतना धन कमाया और शादी पर भोज भी नहीं दिया?

अब गांव क्या कहेगा, सगे-संबंधी क्या कहेंगे, यह सब सोचते हैं तब सारे सिद्धांत कहीं के कहीं चले जाते हैं। दो चीजें हैं एक सिद्धांत और एक व्यवहार। इनमें दूरी रहती है। इस दूरी का कारण क्या है? सिद्धांत का निर्धारण होता है हमारी बुद्धि के द्वारा और व्यवहार का निर्धारण होता है हमारी रागात्मक भावनाओं के द्वारा। बुद्धि द्वारा होने वाला निर्णय और रागात्मक भावनाओं के द्वारा होने वाला निर्णय पूरा नहीं हो पाता। जब तक हम रागात्मक भावनाओं पर तथा भय, क्रोध आदि आवेगों पर विजय नहीं पाएंगे तब तक बुद्धि और कर्त्तव्य का सामंजस्य होगा नहीं। उनमें खाई या विरोध बना का बना रहेगा। धार्मिक वह होता है, जो रागात्मक वृत्तियों पर भी नियंत्रण पाता है। रागात्मक भावनाओं पर नियंत्रण और सैद्धांतिक दृढ़ता, दोनों में सामंजस्य स्थापित करने के लिए जरूरी है स्वतंत्रता का विकास और स्वतंत्र होने के लिए जरूरी है रागात्मक भावनाओं पर विजय। अगर ऐसा योग मिले तो सचमुच हमारे जीवन में स्वतंत्रता की नयी किरण फूटेगी और हम अपने जीवन में स्वतंत्रता का नया अनुभव कर सकेंगे और उसी स्थिति में स्वतंत्रता हमारे लिए भौतिक और आध्यात्मिक दोनों क्षेत्रों में वरदान बन पाएगी।

## राष्ट्र चिन्तन

◆ भारत के 85 प्रतिशत प्रमुख औद्योगिक इलाके जहर से लबालब हैं। यहाँ के हवा-पानी और जमीन में प्रदूषण का स्तर इंसानी बसावट के कतई नाकाबिल है।

देश के 88 औद्योगिक इलाकों में से 75 को बेहद खतरनाक स्थिति में पाया। सबसे ज्यादा प्रदूषित शहरों की सूची में राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के गाज़ियाबाद का तीसरा, दिल्ली की औद्योगिक बस्तियों का 11 वाँ और नोएड़ा का 12 वाँ स्थान है।

गुजरात के अंकलेश्वर की हालत सबसे खराब है, क्योंकि प्रदूषण से निपटने का इसका ढांचा बेहद कमजोर है। गुजरात के ही वापी का दूसरा स्थान है। दिल्ली और राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र 12 अत्यधिक प्रदूषित श्रेणी के भीतर आते हैं। राज्य सरकारों को चाहिए कि खतरनाक घोषित किए जा चुके शहरों में अब और उद्योग लगाने की इजाजत न दें और इन्हें साफ बनाने के लिए निवेश करें।

**जयराम रमेश,** पर्यावरण मंत्री

◆ कोल इंडिया लिमिटेड सरकारी इंजीनियरिंग, मेडिकल, आईआईटी और एनआईटी में पढ़ने वाले गरीब परिवारों के 100 बच्चों को हर वर्ष छात्रवृत्ति देगी वजीफे की राशि में स्कूल की फीस के साथ हॉस्टल का खर्च भी शामिल होगा।

कोल इंडिया लिमिटेड अखिल भारतीय संस्थान है, इसलिए बीपीएल छात्रवृति योजना का लाभ पूरे देश के छात्रों को मिलना चाहिए। छात्रों की चयन प्रक्रिया में पूरी पारदर्शिता बरती जाएगी।

**श्रीप्रकाश जायसवाल,** केन्द्रीय कोयला मंत्री

◆ हमें इस बात पर प्रसन्नता है कि देश में अब बेकारी की समस्या पर जनता का ध्यान केन्द्रित किया जाने लगा है। यद्यपि ठीक-ठीक आंकड़े इस समय हमारे पास नहीं हैं, लेकिन यह माना जा सकता है कि लगभग 6 करोड़ लोगों के पास खाने के लिए अन्न नहीं है, रहने के लिए घर नहीं हैं और पहनने को वस्त्र नहीं हैं।

**बी.बी. गिरि,** भूतपूर्व श्रम-उद्योग मंत्री

**आजादी के छः दशक बाद भारत की जो तस्वीर उभर रही है वह उस तस्वीर से एकदम भिन्न है जो स्वतंत्रता संग्राम के दौरान देशवासियों ने देखी थी। उस तस्वीर या सपने की प्रासंगिकता भविष्य में भी बनी रहेगी। एक बेहतर भारत बनाने के लिए आवश्यक है कि भारत के वर्तमान स्वरूप पर गहन चिंतन कर परिवर्तन का रास्ता खोजा जाए।**

# नवनिर्माण की बाट जोहता भारत

**सुनील**

भारत की आजादी के आंदोलन का समय इस देश का जबर्दस्त पुनर्जागरण का काल भी था। विचारधाराओं की भिन्नताओं के बावजूद एक आधुनिक, प्रगतिशील, समतापूर्ण और धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र बनाने के बारे में मोटे तौर पर आम सहमति थी। आजादी के आंदोलन के नेता एक ऐसा भारत बनाना चाहते थे, जो लोकतांत्रिक व शिक्षित होगा, जिसमें सबको रोजगार और आगे बढ़ने का अवसर मिलेंगे, सबकी बुनियादी जरूरतें पूरी होंगी, जिसमें धर्म, जाति, भाषा लिंग और किसी अन्य आधार पर भेदभाव नहीं होगा और विभिन्न संप्रदायों के लोग हिलमिल कर रहेंगे। गांव-शहर व अमीर-गरीब की खाई कम होगी। अंग्रेजी का वर्चस्व खत्म होगा और उसकी जगह प्रांतीय भाषाएँ लेंगी। मैकाले की शिक्षा पद्धति बदलेगी तथा देश के सारे बच्चों को मुफ्त शिक्षा की व्यवस्था भी होगी। कुपोषण, भुखमरी, आवासहीनता, बेकारी, अशिक्षा, छूआछूत, जातिभेद और सांप्रदायिकता के अभिशाप से देश मुक्त होगा। अंग्रेजी साम्राज्य की जरूरत के हिसाब से बने प्रशासनिक ढांचे, कानून, न्याय, व्यवस्था, पुलिस आदि को भी बुनियादी रूप से बदला जाएगा।

किंतु देश आजाद होने के बाद माहौल बदल गया। आजाद भारत के शासकों ने दूसरी राह पकड़ ली इससे देश के पुनर्निर्माण और नवनिर्माण का काम नहीं हो पाया। अंग्रेजी राज का प्रशासनिक ढांचा नहीं बदला। नतीजा हुआ कि देश की आम जनता की आकांक्षाएँ पूरी नहीं हुई एवं मुसीबतें बढ़ती चली गई। वह गरीबी, बेरोजगारी, अशिक्षा और जलालत की जिंदगी से बाहर नहीं निकल पाई। देश में गैर बराबरी बढ़ती गई। गलत विकास नीति के कारण जल, जंगल, जमीन पर से लोगों की बेदखली बड़े पैमाने पर होने लगी। दस करोड़ से ज्यादा लोग अभी तक विस्थापित हो चुके हैं। आज भी देश के आधे बच्चे कुपोषित हैं और आधे बच्चे कक्षा 8 तक की शिक्षा हासिल नहीं कर पाते हैं। दुनिया के सबसे ज्यादा अशिक्षित, भूखे व कुपोषित लोग भारत में ही हैं। पिछले कुछ सालों से तो देश में किसानों, बुनकरों और कारीगरों की बड़ी संख्या में आत्महत्याओं का सिलसिला चल पड़ा है। जो बताता है कि संकट कितना घना है।

जहाँ एक ओर सामाजिक जीवन में भी रूढ़ियां, भेदभाव और कट्टरता खत्म नहीं हुआ वहीं दूसरी ओर उनके साथ आधुनिक जीवन के तनाव एवं अलगाव भी जुड़ गए। छूआछूत की प्रथा कमजोर तो हुई लेकिन जाति प्रथा कायम रही, बल्कि कुछ मायनों में यह ज्यादा मजबूत हुई। दलितों व महिलाओं पर अत्याचार आज भी हो रहे हैं। सांप्रदायिकता का जहर अभी भी हमारे सामाजिक व राजनैतिक जीवन में घुला हुआ है। आजादी के बाद एक भी बड़ा धर्म या समाज सुधारक नहीं हुआ बल्कि उनकी जगह अब छोटे, कट्टर सांप्रदायिक नेताओं व उनके अंधभक्त अनुयायियों ने ले ली है। छोटे-छोटे विवाद तुरंत सांप्रदायिक हिंसा और दंगों का रूप ले लेते हैं। सन् 1984 की सिख विरोधी हिंसा, 2002 की गुजरात में मुस्लिम विरोधी हिंसा और 2008 की कंधमाल में ईसाई विरोधी हिंसा भारतीय राष्ट्र के लिए कलंक के समान है।

देश में आतंकवाद, उग्रवाद, नक्सलवाद की समस्या बढ़ती जा रही है, जो एक प्रकार से भारत राष्ट्र और भारतीय लोकतंत्र की विफलता है। भले ही वह पड़ोसी देशों के मुकाबले ज्यादा स्थायी व टिकाऊ साबित हुआ हो, लेकिन भारतीय आवाम की भागीदारी, उसकी समस्याओं को दूर करने और उसकी आकांक्षाओं को पूरा करने की दृष्टि से यह बुरी तरह असफल हुआ है। देश की स्थापित पार्टियाँ परिवारवाद, अवसरवाद, सिद्धांतहीनता, भ्रष्टाचार और पूँजी की गुलामी में बुरी तरह फँस चुकी हैं। जनहित या राष्ट्रहित से उनका ताल्लुक बहुत कम रह गया है। विश्व व्यापार संगठन की सदस्यता भारत-

अमेरिका परमाणु समझौता, अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष, विश्व बैंक एवं एशियाई विकास बैंक के निर्देशन में भारत की आर्थिक नीतियों के बदलाव, आदि से जाहिर है कि केन्द्र व प्रांतों की सरकारें देश की संप्रभुता और जनहित को गिरवी रखने में संकोच नहीं करतीं।

पिछले ढाई दशकों में देश में उभरते जन असंतोष और जन आक्रोश ने अनेक स्वतः स्फूर्त, गैर-दलीय, जनांदोलनों को जन्म दिया है। इन आंदोलनों ने जमीनी स्तर पर लोगों की भागीदारी और संघर्ष की नई मिसालें कायम की हैं। दलित-शोषित तबकों की आवाज उनके माध्यम से सामने भी आई हैं। ज्यादातर जनांदोलन आधुनिक विकास की विसंगतियों से उपजे हैं और उन्होंने आधुनिक विकास पर गहरे सवाल खड़े किए हैं।

लेकिन इन जनांदोलनों की कुछ सीमाएँ सामने आई हैं। अक्सर वे तात्कालिक मांगों को लेकर बहुत छोटे दायरे के आंदोलन रहे हैं। उनको मिलाकर देश में व्यवस्था, परिवर्तन का एक बड़ा आंदोलन खड़ा होगा, यह उम्मीद अभी तक पूरी नहीं हो पाई है। इस बीच में काफी बड़ी संख्या में एनजीओ भी पैदा हुए हैं, जिनमें से ज्यादातर विदेशी धन से परिचालित होते हैं। बड़े स्तर पर व्यवस्था परिवर्तन की न तो उनसे उम्मीद की जा सकती है और न ही यह उनका एजेण्डा है। उल्टे राष्ट्र निर्माण और व्यवस्था परिवर्तन की धुन में लगे लोगों की जमात तैयार करने की जगह पर समाज सेवा या सर्वेक्षण रिपोर्टिंग के काम को एक धंधे के रूप में अपनाकर उन्होंने नुकसान ही किया है।

भारत की हालत बहुत खराब है और यदि बदलाव की कोई बड़ी कोशिश नहीं हुई तो भविष्य और भी बुरा होने वाला है। आज जरूरत इस बात की है कि देश के बारे में सोचने वाले लोगों की एक जमात सामने आए और देश को बचाने और एक नया भारत बनाने का एक राष्ट्रव्यापी आंदोलन खड़ा किया जाए ताकि आजादी के आंदोलन के अधूरे काम को पूरा किया जा सके।

नया भारत बनाने के लिए मोटे तौर पर निम्न तीन सूत्र हो सकते हैं

**1. वैकल्पिक विकास नीति :** जो समता, सादगी, स्वावलंबन पर आधारित हो। जिसमें देश के सारे लोगों को सम्मानजनक रोजगार मिले और उनकी बुनियादी जरूरतें पूरी हों। जल, जंगल, जमीन पर स्थानीय लोगों का अधिकार हो, कंपनीकरण बंद हो तथा शोषण की अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था से हम अपने को अलग करें, गांव, किसान, मजदूर, कारीगर विकास के केन्द्र में हों और उनका शोषण रुके, सबके लिए शिक्षा व स्वास्थ्य की पूरी व्यवस्था हो, पर्यावरण की रक्षा हो, वैकल्पिक तकनीक का विकास हो, छोटी मशीन व छोटे उद्योग पर आधारित औद्योगीकरण हो तथा बाजार पर समाज का नियंत्रण हो।

**2. विविधता की रक्षा और सामाजिक समरसता :** भारत एक विशाल देश है, जिसमें अनेक धर्मों, संप्रदायों, जातियों, कबीलों व भाषाओं के लोग रहते हैं। यह विविधता भारतीय राष्ट्र की ताकत है और इसे एक ढांचे में ढालने के बजाय इसका सम्मान और हिफाजत करनी चाहिए। जाति प्रथा पर प्रहार हो और दलितों, पिछड़ों, आदिवासियों को बराबरी का स्थान मिले। स्त्री-पुरुष में बराबरी भी कायम हो।

**3. लोकतांत्रिक ढांचे में बदलाव :** हमारा लोकतंत्र का ढांचा बहुत हद तक ब्रिटेन से लिया गया है। इसमें भी बुनियादी बदलाव की जरूरत है। इसका काफी विकेन्द्रीकरण करना होगा तथा इसमें जनमत संग्रह, प्रतिनिधि वापसी, नकारात्मक वोट जैसे प्रावधान करने होंगे। न्यायपालिका, पुलिस, प्रशासन के मौजूदा ढांचे को भी बदलना होगा। जनता के दमन के सारे कानूनों, प्रावधानों व ढांचों को खत्म करना होगा। सिविल नाफरमानी या सत्याग्रह को व्यवस्था में पूरी जगह व इज्जत देनी होगी। मीडिया के मौजूदा चरित्र को बदलने के लिए भी जरूरी कदम उठाने होंगे।

इनमें से कुछ उपायों पर मतभेद हो सकते हैं जिन पर चर्चा-बहस की गुंजाइश है। एक मुद्दे पर, एक तबके में या एक सघन क्षेत्र में हम जो काम कर रहे हैं, वह महत्त्वपूर्ण है। लेकिन वह भी क्रांतिकारी बदलाव की एक राष्ट्रव्यापी मुहिम की धारा का हिस्सा बने तो ज्यादा सार्थक होगा। दोनों को एक दूसरे से ताकत मिलेगी। जब पूरा देश गड्ढे में जा रहा हो तो क्या हम चुप बैठे रहेंगे? ऐसे में आने वाला वक्त क्या हमें माफ करेगा?

*– सप्रेस*

# आखिर कब? मेरा भारत महान

**रमेश हिरण**

गणतंत्र दिवस के समारोह में देश में चारों ओर इसकी महानता के गौरवगान गाये जाते हैं तथा परिपक्व होते लोकतंत्र की यशोगाथा का बखान किया जाता है। सहसा जेहन में चिंतन उभरा कि क्या वास्तव में हमारा गणतंत्र परिपक्व हो गया है? और हम इस महान देश के महान निवासी बन पाये हैं? यदि इसका उत्तर सकारात्मक हो तो तो शायद देश की तस्वीर ही दूसरी होती? और भारत आज विकसित देशों की शृंखला में अग्रिम पंक्ति पर स्थित होता, परन्तु लगता है हकीकत इसके विपरीत है।

आधी सदी की लम्बी अवधि गुजरने के पश्चात भी देश अपनी एक विशिष्ट एवं गरिमापूर्ण पहचान कायम करने में कामयाब नहीं हो सका, तो अन्य क्षेत्र की प्रगति के बारे में क्या कहा जाये? अध्यात्म, नैतिकता व चरित्र सम्पन्न राष्ट्र की छवि जो अतीत में निर्मित थी, वह न जाने कहाँ गायब हो गई। इनके विलोपन के बावजूद भी देश यथेष्ट आर्थिक विकास नहीं कर सका? भ्रष्टाचार, चारित्रिक पतन एवं देशप्रेम के गिरते स्तर ने देशवासियों को शेष विश्व के सामने बौना कर दिया। आश्चर्य है कि इतना विशाल देश, इतनी खनिज सम्पदा एवं उपलब्ध संशाधनों की प्रचुरता के बावजूद वांछित विकास नहीं कर पाना, किस कमी का परिचायक है? ऐसा नहीं कि देश में तीक्ष्ण मेधा की कमी है, यदि यह सच होता तो अमेरिका एवं पश्चिमी देशों में भारतीय मस्तिष्क की इतनी प्रतिष्ठा आज नहीं होती? आखिर क्या कमी है, जिससे हम सब कुछ होते हुए भी अन्य देशों से आगे नहीं निकल पाये?

इसका गहराई से अध्ययन करें तो यह स्पष्ट होगा कि इसमें सभी दोषी हैं? शासन ने समस्याओं की गंभीरता को नहीं आंका और समस्याओं को लटकाने की प्रवृत्ति रखी, तो जनता ने भी लापरवाह शासक की भूमिका निभाई। जिससे शासन निरंकुश होता गया और देश समस्याओं के बोझ तले दबता चला गया। आरक्षण एवं जातिगत समीकरणों के चलते देश में शासन करने वाली सरकारों ने देश के व्यापक एवं दूरगामी चिंतन एवं प्रभाव से मुंह मोड़ लिया। केवल सामयिक फौरी कार्यवाही कर समस्या को विकराल बनने के लिए विवश कर दिया, इससे देश में हर छोटी-बड़ी बात पर अनावश्यक हिंसा एवं तनाव पैदा हो जाता, जिससे कानून-व्यवस्था छिन्न-भिन्न हो जाती? सरकार उन्हें रोकने के लिये गोली का प्रयोग करती, जिससे सरकार के प्रति जनता का रोष दोगुना हो जाता और दोनों के मध्य अविश्वास की ऐसी खाई निर्मित होती जिसे पाटने में एक लम्बा समय लग जाता, ऐसी स्थिति में शासन चाहकर भी जनता का हित नहीं कर पाता। परिणामतः देश टूटता जाता और मुख्य समस्याओं के समाधान और विकास से देश पिछड़ जाता है। यही कारण है कि स्वतंत्रता की आधी सदी गुजरने के पश्चात भी सम्पूर्ण देश में बुनियादी सुविधाओं का विस्तार संभव नहीं हो पाया है।

दूसरा बड़ा कारण है देश के नीति-नियंताओं का सम्यग ज्ञान, सम्यग चिंतन एवं व्यापक दृष्टिकोण का अभाव रहा है। जिससे समस्याओं के समाधान के साथ राजनैतिक लाभ-हानि का गणित अधिक काम करता नजर आया तथा देश एवं जनहित गौण हो गये? फिर सही व गलत का निर्णय कौन करे? शासकों की यह मनोदशा वोट बैंक को सुरक्षित रखने, उसे पोषित व सिंचित करने में होने के कारण देश कितना पीछे खिसक जाये उन्हें क्या परवाह? समस्याओं का समाधान फिर दूर की कोड़ी हो जाता है। यही नहीं, सरकारी फाइलों एवं कार्यालयों की मंथर गति समस्या के समाधान की दिशा में अवरोध का ही कार्य करते हैं। ऐसी स्थिति में कई महत्त्वपूर्ण विनिवेश से देश वंचित हो जाता है। उपर्युक्त विश्लेषण से यह स्पष्ट हो जाता है। यही कारण है जो देश को महान बनने से रोकते हैं, परन्तु इस ओर झाँकने की फुर्सत किसे है? सभी अपनी स्वार्थपूर्ति में व्यस्त हैं? फिर देश का हितचिंतक कौन?

इसके बावजूद जब चहुँओर कहा जा रहा है, हमारा देश महान? यह चिंतन का विषय है। आखिर वर्तमान में हमारा देश कितना व किस मायने में महान बन पाया है? इसकी पृष्ठभूमि में छिपे तथ्य क्या कहते हैं। आइये देखें केन्द्र की संप्रंग सरकार के प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने पड़ौसी पाकिस्तान से सम्बन्ध सुधारने के क्रम में पाकिस्तान को कई रियायतें, सुविधाएँ उपलब्ध कराई, बावजूद इसके न तो पाकिस्तान ने आतंकवाद में कमी की है और न ही जम्मू कश्मीर पर

अपना झूठा दावा छोड़ा? जिस कश्मीर का वो भू-भाग दबाये बैठा है, उस पर वह आतंकवाद की फसल बो रहा है, और हम अपना भू-भाग लेने व उस पर कठोर कार्यवाही के स्थान पर उसे और रियायतें उपलब्ध करवा रहे हैं, यह कौन-सा गणित है? वो सम्पूर्ण देश को आतंकवाद की चपेट में लेने की आकांक्षा रखता है, और हम उससे दोस्ती की भीख मांग रहे हैं? क्या सम्पूर्ण प्रभुता सम्पन्न राष्ट्र की पहचान यही है? कैसा है हमारे देश के शीर्षस्थ राजनैतिज्ञों का चिंतन है? वाह! भारत वाह?

देश की सर्वोच्च पंचायत संसद पर हमला करने वाला एक आतंकी अफ़जल पकड़ा गया, देश की अदालत ने उसे फांसी की सजा दी, तो उसकी फांसी रूकवाने के लिए राजनैतिज्ञों ने राजनीतिक बिसात बिछा दी। इससे शर्मनाक बात और क्या होगी कि उस आतंकी की तरफदारी उस नेता ने की, जो देश के सर्वाधिक आतंकग्रस्त राज्य का प्रधान है। शायद ऐसा निकृष्ट उदाहरण भारत में ही संभव है? जहाँ ऐसे राजनेता मौजूद हैं? कितना महान है हमारा भारत? यही नहीं हमारे इस महान देश में क्या-क्या नहीं होता? देश के सांसद, संसद में प्रश्न पूछने की एवज में रिश्वत लेते हैं? सरकार में मंत्री ऐसे अपराधियों को बना दिया जाता है, जिसे अदालत द्वारा दोषी करार दिये जाने पर बड़ी मज़बूरी से पद-त्याग करना पड़े? इससे राजनेताओं व अपराधियों में कितनी सांठ-गांठ रहती है, यह उजागर होता है? देश की पुलिस जिसे हर वर्ष राष्ट्रीय दिवस पर पदकों से सम्मानित किया जाता है, परन्तु उसकी क्या उपलब्धियाँ रहती हैं, यह कोई नहीं जानता? सारा देश जानता है, यदि पुलिस गंभीरता से अपराधी तत्त्वों पर शिकंजा कसे तो आसानी से अपराधों पर नियंत्रण किया जा सकता है? परन्तु ऐसा वो कैसे करें? जबकि उसका हफ्ता सदैव तैयार रहता है।

यह सब क्यों होता है? देश की सरकारी मशीनरी की हालत यह है कि वह किसी समस्या के समाधान में कम उसे लटकाने में अधिक रुचि लेती है। परिणाम वही होता है, जब विस्फोट होता है। जब सरकारी तंत्र की यह हालत है तो कैसे शुभ परिणामों की अपेक्षा की जाये? देश 21 वीं सदी में प्रवेश कर चुका है, परन्तु सरकारी कारिन्दों की मानसिकता अभी भी उन्नीसवीं सदी की है। फिर कैसे देश 21 वहीं सदी में छलांग लगा सकेगा?

जब देश के राजनेता करोड़ों रुपये के भ्रष्टाचार में लिप्त पाये जाते हैं तो सरकारी अफसर भला क्यों पीछे रहें? ऊपर से नीचे तक यह एक ऐसी शृंखला बन चुकी है, जिससे सारा देश प्रभावित है। महामहिम राष्ट्रपति डॉ. कलाम अवश्य इस समस्या के प्रति चिंतित हैं, जिन्हें देश के भविष्य की चिंता है? प्रकृति से छेड़छाड़ में भी हम कम दोषी नहीं हैं, अपने स्वार्थ के कारण वनों की अंधाधुंध कटाई कर पर्यावरण संतुलन बिगाड़ रहे हैं, तो कैसे संतुलित वर्षा होगी? इससे हटकर भी एक ऐसे निष्ठुर कार्य को अंजाम दिया जा रहा है जो कि सारे समीकरणों को तो गड़बड़ा ही रहा है नैतिकता की भी पराकाष्ठा तक पहुँच गया है, वह है भ्रूणहत्या? यह मानव का कौन-सा चरित्र है।

जहाँ सरकारी स्तर पर राष्ट्रीय दिवस पर विशेष उपलब्धियों के लिये विशिष्टजनों को सम्मानित किया जाता है, लगता है उनके पीछे गहरी राजनीति काम करती है। उस सूची में ऐसे व्यक्तियों के नामों को स्वीकृत कर दिया जाता है, जो शासन के चहेते हैं। ईमानदार योग्य व कार्यक्षम व्यक्ति का नाम उस सूची से गायब हो जाता है। कई बार ऐसी हास्यास्पद स्थिति उत्पन्न हो जाती है कि सम्मानित होने वाले व्यक्ति को भी नहीं पता कि उसे किस बात के लिये सम्मानित किया जा रहा है। पत्रकारिता में उत्कृष्ट योगदान का पुरस्कार अखबार डालने वाले हॉकर को दिया जाता है। इससे अधिक शर्मनाक स्थिति शासन के लिये और क्या हो सकती है? ऐसे विरोधाभासों के कारण यह कार्यक्रम अपनी गरिमा खोता जा रहा है? एक वाकया गत गणतंत्र दिवस को सामने आया, जब भीलवाड़ा जिला कलेक्टर व पुलिस अधीक्षक महोदय मंत्रीजी की उपस्थिति में एक थाने को सम्मानित करने के प्रश्न पर अड़ गये? उपस्थित दर्शक इनकी यह स्थिति देखकर दंग रह गया? इससे क्या संदेश जाता होगा? कौन समझाये? क्या कभी ऐसा भी होता है? देश की अदालतें वैसे भी फैसलों के लेट-लतीफी के लिये बदनाम है? यदि संयोग से किसी अपराधी को जेल हो भी जाये, तो यहाँ की जेलों में इतनी दरारें हैं कि कैदी आराम से भाग जाये। इसमें जेल अधिकारियों का भी रोल कितना संदिग्ध होता है, यह जगजाहिर है।

इस सारे विश्लेषण से स्पष्ट हो जाता है कि ऊपर से नीचे तक हम किस धरातल पर स्थित हैं? ओर किस प्रकार के महान भारत का निर्माण कर रहे हैं? अब चिंतन करना है कि क्या ऐसे भारत की कल्पना स्वर्गीय बापू ने की होगी? क्या भारत माता की आत्मा यह देखकर कराहती नहीं होगी? क्या इसी आधार पर हमें हमारे देश पर नाज करना है और कहना है हमारा भारत महान?

यह एक गहन चिंतन का विषय है? देश का प्रबुद्ध वर्ग इस ओर चिंतन करे कि देश की दिशा क्या हो? केवल राजनीतिज्ञों व सरकारी तंत्र के भरोसे यदि देश को छोड़ दिया गया तो, हम देश का अस्तित्व ही समाप्त हो जायेगा? हर देशवासी को अपने देश पर नाज है तथा इसकी सुरक्षा व संरक्षा का कर्तव्यबोध अपने हृदय में रखते हुए इसे विश्व स्तर पर पहुँचाने का प्रयास करें तो कोई शक नहीं कि आने वाले कल में देश विकसित देशों की पंक्ति में सबसे आगे स्थित हो, तब हम सही अर्थों में गर्व से कह सकेंगे "मेरा भारत महान?

***देवरमण, गंगापुर***
***(भीलवाड़ा–राजस्थान)***

# जरा! याद करो कुर्बानी

**अशोक सहजानन्द**

**आज का परिदृश्य शर्मसार करने वाला लगता है। आज तो न केवल हिन्दू और मुसलमान में वरन समूचे समाज को जातियों, उपजातियों के बीच बांटने का एक सुनियोजित कार्यक्रम चल रहा है। जिसका उद्देश्य किसी भी तरह सत्ता के केन्द्र पर काबिज होना है, चाहे वह पंचायत हो या फिर संसद। आज आम जनता को आत्मालोचन की जरूरत है कि कहीं वह किसी का हथियार तो नहीं बन रही है। नेताओं से आत्मालोचन की आशा करना ही व्यर्थ है। ऐसे हजारों लोग हैं जिन्होंने आजादी के यज्ञ में अपने हितों की आहुति दी। उनका पुण्य स्मरण हममें कुछ चेतना जगाये, यही आशा करता हूँ।**

एक सहज जिज्ञासा होती है कि आज स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस जो सच्चे अर्थों में हर भारतीय के लिए प्रमुख त्यौहार होने चाहिएं, हमें आंदोलित नहीं कर पाते? जैसे आज से पैंतीस-चालीस वर्ष पूर्व किया करते थे? क्यों ये अब एक महज खानापूरी या कैलेण्डर की सरकारी लाल घुट्टी मात्र बनकर रह गये हैं।

कारण आइने की तरह साफ है। भ्रष्टाचार तब भी था, पर इतना व्यापक नहीं। भारत के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने तो घोषणा की थी कि काला बाजारियों को लैंप पोस्ट पर फांसी पर चढ़ा दिया जाएगा।

पर पिछले पचपन वर्षों में हुआ यह कि ऐसे ही लोगों की जमात सत्ता के सूत्र संचालन करने वाली बन गयी। अब तो भ्रष्टाचार की कोई खबर लोगों को न तो आश्चर्यचकित कर पाती है और न उद्वेलित। सबने उसे आज के सामाजिक जीवन की अनिवार्यता मान लिया है। वस्तुतः आज राजनीति, भ्रष्टाचार की केन्द्र-बिन्दु है।

पहले भ्रष्टाचार इतना संगठित नहीं था। वह व्यक्तिगत स्तर पर ही व्याप्त था। पर आज भ्रष्टाचार एक संगठित व्यवसाय बन गया है। ऊपर से नीचे तक सबके हिस्से बंधे हुए हैं। पकड़ा जाता है 'गरीब' वातू या छोटा अफसर लेकिन यह भ्रष्टाचार ऊपरी तबके तक किस तरह व्याप्त है, यह सरकारी विभागों के उच्चस्तरीय अफसरों के रंगे हाथों पकड़े जाने की खबरें स्पष्ट करती है। अब घोटाले एक-दो करोड़ के नहीं, हजारों करोड़ के होते हैं।

आज देश की फिक्र ही किसे है? हर नेता और हर दल के लिए जैसे देश और कुछ नहीं, उसके अपने निहित स्वार्थ ही हैं। देश की बात आदर्शवादी लोग करते हैं। जिस तरह से 'धर्म' या 'मजहब' आज मात्र स्वार्थों की पूर्ति का माध्यम बना लिया गया है, उसी तरह देश भी और उसकी गरीब और पददलित जनता भी। 'आरक्षण' के नाम पर नेताओं और दलों ने समाज को विभिन्न वर्गों में बांट दिया है। कितने नेता और दल, दलित या पिछड़े वर्ग के समूहों के लिए गुणवत्ता वाले स्कूल या कॉलेज संचालित करते हैं। क्या मात्र आरक्षण की वैशाखी उन्हें अपने पैरों पर चलने में समर्थ बना सकेगी?

आजादी के पहले महाराष्ट्र के एक गांव में रूधाजी जाधव नामक एक पिता हो गये हैं। वे अपनी योग्यता के बल पर केबिन मैन बने रेलवे में। अपने बेटों को उन्होंने बिना किसी आरक्षण की बैशाखी के समाज में योग्य बनाया। उनके एक पुत्र शासन में मुख्य सचिव पद पर नियुक्त हुए और दूसरे ने रिजर्व बैंक में एक बहुत बड़ी जिम्मेदारी संभाली। 'आमच्या बाप आणि आम्ही' शीर्षक मराठी की एक कृति में रूँधाजी जाधव के जीवन की प्रेरक यशगाथा है। उत्तर भारत के कितने लोगों ने रूँधाजी जाधव की यह कृति पढ़ी। हमारे विचार से प्रत्येक दलित या पिछड़े वर्ग के पिता को ही नहीं, जाति-धर्म के परे वंचित समुदाय के हर पिता को यह पुस्तक पढ़नी चाहिए। वह 'कर्मयोग' की अनूठी पुस्तक है।

नेताओं का काम तो भावनाओं की आग सुलगाकर अपनी रोटियां सेकना है। 'आरक्षण' का रामबाण तभी कारगर होगा जब हम प्राथमिक स्तर से दलित या पिछड़े वर्ग के गरीब वर्ग के बच्चों को ऊपर उठाने के लिए सचमुच मेहनत करेंगे। मंदिरों-मस्जिदों पर करोड़ों रुपए फूंकने से तो बेहतर है कि हर जनपद में उच्च गुणवत्ता वाली शालाओं की स्थापना का सिलसिला शुरू किया जाए, जो अल्पतम खर्च में श्रेष्ठ शिक्षा प्रदान करती हो। अन्यथा विषमता की खाई बढ़ती ही रहेगी। पर यदि यह सोचा जाए कि यह विषमता ही कुछ लोगों को सत्ता तक पहुँचाने की सीढ़ी है, उसे क्यों खत्म किया जाएगा, तो क्या गलत होगा।

वरिष्ठ पत्रकार एवं साहित्यकार पं. दुर्गा प्रसाद शुक्ल ने अपनी चर्चित कृति 'दिवंगत घर के बहाने' में कुछ ऐसे अनाम लोगों के प्रसंगों का उल्लेख किया है, जिन्होंने स्वाधीनता के आंदोलन में भाग लिया। इनमें से एक हैं तानी नामक एक दलित युवती का प्रसंग। महाराष्ट्र के कुछ क्रांतिकारियों ने हथियार खरीदने के लिए एक स्टेशन को लूटने की योजना बनायी। तय किया गया कि चाबी से तिजोरी खोली जाए। पर नकली चाबी बने कैसे? इसमें मदद की एक दलित युवती ने। स्टेशन मास्टर सुरा-सुंदरी का शौकीन था। जब वह नशे में धुत था तो तानी ने एक साबुन की टिकिया पर चाबी का छापा ले लिया और उसे क्रांतिकारियों को दे दिया। वे अपनी योजना में सफल भी हुए। पर पकड़े भी गए। तानी बच गयी, पर उसे संतोष था कि उसने क्रांतिकारियों की कुछ तो मदद की।

नागपुर में सन् 42 की सशस्त्र क्रांति के एक नेता मगनलाल बागड़ी भी थे। वे हिन्दुस्तानी लाल सेना के सर सेनापति थे। हिन्दुस्तानी लाल सेना को खाकसारों का भी समर्थन था। मगन लाल बागड़ी भूमिगत थे। वे भोंसला राजाओं के एक उजाड़ महल में छिपे हुए थे। खाकसार शेख मोहम्मद याकूब उनके मित्र थे। एक दिन मगन लाल बागड़ी को एक गुप्त बैठक में भाग लेने ननापुर आना था। गांव में एक बैलगाड़ी का इंतजाम किया गया और उनकी हिफाजत के लिए याकूब साहब की नवविवाहिता पत्नी को भी बैठा दिया गया। ननापुर की राह में पुलिस वालों ने बैलगाड़ी की तलाशी लेनी चाही। लेकिन याकूब साहब की पत्नी कुलसुम बीबी ने इसका विरोध किया। कहा कि बैलगाड़ी में उनके बीमार पति हैं। गाड़ी का पर्दा हटाकर वे उनकी बेइज्जती न करें। पुलिस वाले मान गये।

यह घटना इस बात की प्रतीक है कि निर्धारित लक्ष्य तक पहुँचने के लिए हिन्दू और मुसलमानों के बीच पूर्ण विश्वास पैदा किया जा सकता था। एक हिन्दू क्रांतिकारी को पुलिस से बचाने के लिए एक नवविवाहिता मुस्लिम युवती उसे अपना पति बताती है और उसे बचा लेती है। बाद में मगन लाल बागड़ी, सबसे पहले कुलसुम से ही राखी बंधवाते थे। इस प्रसंग को पढ़ते हुए आज का परिदृश्य शर्मसार करने वाला लगता है। आज तो न केवल हिन्दू और मुसलमान में वरन समूचे समाज को जातियों, उपजातियों के बीच बांटने का एक सुनियोजित कार्यक्रम चल रहा है। जिसका उद्देश्य किसी भी तरह सत्ता के केन्द्र पर काबिज होना है, चाहे वह पंचायत हो या फिर संसद। आज आम जनता को आत्मालोचन की जरूरत है कि कहीं वह किसी का हथियार तो नहीं बन रही है। नेताओं से आत्मालोचन की आशा करना ही व्यर्थ है। ऐसे हजारों लोग हैं जिन्होंने आजादी के यज्ञ में अपने हितों की आहुति दी, उनका पुण्य स्मरण हममें कुछ चेतना जगायें, यही आशा करता हूँ।

***239 दरीबाकलाँ, दिल्ली–110006***


# भ्रष्टाचार

# ?

## शिष्टाचार बन रहे नासूर भ्रष्टाचार

से जुड़े बिन्दुओं को समाहित करता अणुव्रत पाक्षिक का विशेष अंक।

**रचनाकारों की तथ्यपरक रचनाएँ**
**पाठकों के विचार सादर आमंत्रित।**

# आक्रमणकारी नहीं – सहयोगी बनें

**भूरचंद जैन**

विज्ञान की प्रगति के साथ विश्व भर में चारों ओर विकास ने नई करवट ली है। विकास के नित नये आयामों से सभी देश अपनी समृद्धि को तीव्र वेग से आगे बढ़ाने में जुट गये हैं। जिसके कई सुखद परिणाम भी सामने आये हैं। विज्ञान ने चिकित्सा स्वास्थ्य, कृषि, उद्योग, यातायात, दूरसंचार, युद्ध उपकरणों इत्यादि सभी क्षेत्रों में आशातीत प्रगति की है और इस ओर अभी भी वैज्ञानिकों का प्रयास जारी है। इस कारण आधुनिक भौतिक साधनों ने इन्सानों का जीवन ही बदल दिया है। सभी देश विज्ञान के आधार पर अपने देश को प्रगतिशील, समृद्धशाली, शक्तिशाली बनाने की होड़ में लगे हुए हैं। इस होड़ अर्थात् प्रतिस्पर्धा को लेकर सभी देश अपनी सुरक्षा के लिए अस्त्र-शस्त्रों का उत्पादन करने में जुट गये हैं। इस कारण नित्य नये-नये घातक अस्त्र-शस्त्रों का निर्माण हो रहा है जो कभी भी विनाश के कारण बन सकते हैं। अस्त्र-शस्त्रों की बढ़ती प्रतिस्पर्धा के कारण सम्पूर्ण विश्व चिंतन के सागर में डूबा हुआ है। इससे बचने के लिये सभी देश, जो स्वयं अपनी सुरक्षा के लिये चिंतित होने पर भी अस्त्र-शस्त्र के भंडारण में जुटे हुए होने के बाद भी विश्व शान्ति के लिये निःशस्त्रीकरण का राग अलापते थक नहीं रहे हैं।

विध्वंशकारी अस्त्र-शस्त्रों से विनाश की स्थिति को जानते हुए भी कई देशों ने एक-दूसरे देश पर आक्रमण कर विनाश लीला का खुला तांडव खेला है। जिसके दुष्परिणामों ने असंख्य इन्सानों की जान ली है। वहाँ अनगिनत देश की समृद्धि की झलक दिखाने वाले निर्माण कार्यों को विध्वंश कर दिया है। चारों ओर तबाही मचाने में किसी प्रकार की कमी नहीं रखी है। विकास को विनाश में बदल दिया है। इस आक्रमणकारी नीति से बचने के लिये सभी अपने देश में शान्ति, खुशहाली, समृद्धि के पक्ष में निःशस्त्रीकरण की फिराक में रहते हैं और इसके लिए सभी देशों का जन समर्थन जुटाने में कटिबद्ध हैं। क्योंकि सभी को विनाश का खतरा सामने दिखाई देता है। ऐसी आक्रमणकारी नीति से बचने के लिये और विश्व में शान्ति स्थापित करने हेतु आचार्य तुलसी ने अपने अणुव्रतों में निःशस्त्रीकरण पर अधिक बल देते हुए इसे स्वीकार करने की पहल की है। इसके लिये सभी इन्सानों को एवं देशों को निःशस्त्रीकरण का संकल्प लेने पर जोर दिया है ताकि कभी भी किसी देश पर आक्रमण करने की स्थिति ही नहीं बने।

विश्व में अस्त्र-शस्त्रों की होड़ ही आक्रमणकारी बनाने का माध्यम बनती है। वहाँ इन्सान भी आवेश, आक्रोश, गुस्से, बदले की भावना, किसी को प्रताड़ित करने के उद्देश्य से, किसी का तिरस्कार करने, किसी को दंडित करने के लिये आक्रामक रुख अपनाते हुए आक्रमणकारी होता है तो उसके सामने, सामने वाले के विनाश के अलावा कुछ दिखाई नहीं देता है। आक्रमणकारी की चाह रहती है कि वह जो आक्रमण कर रहा है वह विफल न हो जावे। इस कारण इन्सान-इन्सान में घृणा, द्वेषभाव, ईर्ष्या, दुश्मनी आदि उत्पन्न होती है जो इन्सानों की सुख-शांति, अमनचैन छीनती है। इसी सुख-शान्ति अमन-चैन के साथ एक-दूसरे के प्रति भाईचारे के भाव बनाने के लिए इन्सान को अन्य किसी इन्सान पर आक्रमणकारी नहीं बल्कि सहयोगी बन कर रहने में ही भलाई है। इससे आक्रमणकारी को भी शांति और संतोष मिलता है। बुरे विचार इसके दिल और दिमाग से हट जाते हैं। ऐसी मानसिक शांति पाने के लिये आक्रमणकारी नहीं बनने की सीख आचार्य तुलसी ने देश की आजादी के बाद अणुव्रत आंदोलन चलाकर विश्व को एक नई दिशा दी।

अणुव्रत की आचार संहिता के आधार पर इन्सान यह सोचे कि मैं आक्रमणकारी नहीं बनूंगा और न ही सहयोग दूंगा। इस दृढ़ संकल्प द्वारा वह शांति का शंखनाद करने में कदापि पीछे नहीं रहेगा। वर्तमान में इसकी महत्ती आवश्यकता है। इसी प्रकार एक-दूसरे देश पर आक्रमण करता है तब अन्य देश आपस में लड़ने वाले किसी एक देश की आक्रामक नीति में भागीदार बनता है, उसे मदद देता है, सहयोगी के रूप से दुश्मन समझने वाले देश से युद्ध करता है तब वहाँ सर्वत्र विनाश ही विनाश होने की संभावना बढ़ती है। ऐसी विषम स्थिति में विश्व शांति को कभी भी खतरा उत्पन्न हो सकता है। विनाश की इस स्थिति से अपने को दूर रखने के लिए आक्रामक देश को समर्थन सहयोग नहीं देने का संकल्प अणुव्रतों को आधार मानकर किया जाय तो विश्व शांति की स्थिति बन सकती है और इन्सानों को अकाल मृत्यु, बेमौत मरने से बचाया जा सकता है। वहाँ परिवार और समाज में स्नेह, आत्मीयता, भाईचारे की भावना के साथ सहयोग एवं सहानुभूति कर संकल्प लिया जाय तो इन्सान का जीवन स्वर्गमय बन सकता है। ऐसे इन्सान को सुख, चैन, शान्ति से जीवनयापन करने से कोई रोक नहीं सकता।

***जूनी चौकी का बास,***
***बाड़मेर (राजस्थान)***

# जय जय भारत बोल रे

जगो जवानों देश जगाये पलकें अपनी खोल रे,
संघर्षों की वेला में तू जय-जय भारत बोल रे।

हिन्दू मुस्लिम सिक्ख ईसाई सभी परस्पर भई-भाई
भेद-भाव की खोदे खायी सह न सकेगी ये तरुणाई
गिरी मालाएँ कंठी इसकी ताज हिमालय शान है
गंगा यमुना चरण पखारे मेरा देश महान है
पनप नहीं पाये जयचंदी ताकत फिर इस देश में
मानवता का रूप सजे तू ऐसी बानी बोल रे।

मरना जिसने सीख लिया जीने का अधिकार उसे ही
जो शूलों पर हँसता बढ़ता फूलों का अभिसार उसे ही
मां के हित दुःख सह न सका वो कैसा माँ का बेटा है
मां तो सिसके इधर-उधर ये जाम चढ़ाये बैठा है
खो मत पौरुष आज बैठ तू हिम्मत अपनी हार रे
साहस से विश्वास जगा तू गीत विजय के बोल रहे।

सीख शिवा से नीति रण की पृथ्वीराज से सर संधान
बहनें मिल करें आज रणचण्डी का फिर से आह्वान
विस्मृत मत हो प्रतिक्षण बोले हल्दीघाटी ललाम है
बलि हुआ जो देश धर्म पर - करे विश्व उसे प्रणाम है
गोरे हाथों में फिर - तलवारों की झन-झनकार उठे
काँप उठे अरिदल तू ऐसा राग भैरवी बोल रे।

भगत सिंह हो तुम्हीं - तुममें हकीकतराय है
लाल हो तुम गुरु गोविन्द के बहनें यही पन्ना धाय है
जागे भामाशाह का त्याग जगाओ राणा की तलवार को
मत ढूँढो रे सजी सेज पर अपने पागल प्यार को
विष पीया जिसने हँस-हँस अमर हुआ वही जग में
हटा दूर आसक्त भावना बम् बम् महादेव तू बोल रे।

वैर नहीं सिखाता मज़हब क्यों जाता है भूल रे
असफ़ाक भी गया फांसी पर हँसते-हँसते झूल रे
राखी की लाज बचाने आज हुमायूं आयेगा दौड़ा
आज युद्ध में धाये अकबर ले प्रताप का वह घोड़ा
शान्ति नाद का अर्थ नहीं है कायरता का बोल रे
जब सब मिल जयनाद करे तो हो जाए भू-डोल रे।

●

## तुम भारत के भाल हो

जय बोलो भारत माता की
जय बोलो भाग्य विधाता की

तुम्हीं भोर की प्रथम किरण अरु दिव्य दिवाकर बाल हो
तुम पर है गौरव स्वदेश को - तुम भारत के भाल हो

तुम अंकुर हो उठते तुमसे - धरती माँ की गोद हरी है
बौराई सी लागे बगिया - चले हवाएँ मोद भरी है
गा लोरियाँ देती थपकी - तुमको आज दुलार से
मां की ममता तुम्हे सिखाए - रहना परस्पर प्यार से।
तेरे पग को प्रगति चूमती
लख तुझे दिशाएँ झूमती
खुशियाँ सारी न्यौछावर हैं - तुम हँसो बहारें आ जाएं
अपने को पहचानों - तुम विजयी मणियों की माल हो

ऊँचा है आदर्श हमारा ऊँचा उड़ता सदा निशान है
ध्येय हमारा सबसे ऊँचा - देखें मानव में भगवान है
नहीं ऊँच नीच का भेद परस्पर अपना सभी जहान है
प्यारे मंदिर मस्जिद दोनों - प्यारे रामायण कुरान हैं।

तुम्हीं भोर की प्रथम किरण अरु दिव्य दिवाकर बाल हो
तुम पर है गौरव स्वदेश को - तुम भारत के भाल हो

●

## मुक्तक

सोचो नेता अपने-अपनी भेदभाव की खाई पाट रहे हैं।
पर ये तो खेड़ी अपने-अपनों को ही बांट रहे हैं।।
संभल सको तो संभलो ओ! भारत माँ के बेटों
ये नेता देश को यहाँ दीपक बन चाट रहे हैं।।

सितारे टूट कर गिर रहे ये कैसा संत्रास है।
लोकतंत्र बे कून पड़ा टूट गया विश्वास है।।
कैसे पूरी हो संकल्पना शोषण मुकत समाज की,
जन नेता अमर बेल बन गये अफसर गाज घास है।।

मेरा कातिल से कत्ल हुआ खून बोलेगा वन्देमातरम्।
जालिम के जुल्मो-सितम सह के सब बोलेंगे वंदेमातरम्।।
काट देने से कटी है कभी तहरीर की इबारत - यहाँ,
शिवा की शमशीर बोलेगी जेल की जंजीर बोलेगी वंदेमातरम्।।

■ **बंशीलाल "पारस",**
***ओशो कुंज, ट–14, बापू नगर, भीलवाड़ा – 311001 (राजस्थान)***

# विश्व शांति का पैगाम है–अहिंसा

साध्वी कनकरेखा

महानता का आदर्श है अहिंसा। महापुरुषों के जीवन का आभूषण है अहिंसा। अहिंसा प्रेम का वह सागर है जिसमें डुबकी लगाने वाले हर पल प्रसन्नता का अनुभव करते हैं। अहिंसा चरित्र की वह श्वेत चदरिया है, जिसे धारण करने वाले पवित्र आभामंडल के साथ प्रभु के दरबार की शोभा बढ़ाते हैं। अहिंसा विश्व शांति का वह राजमार्ग है, जिस पर चरणन्यास करने वाले महावीर और गांधी की याद को स्मृति-पटल पर तरोताजा करते रहे हैं।

अहिंसा जीवन का शाश्वत मूल्य है मानव जाति के ऊर्ध्वमुखी चिंतन का सर्वोत्तम विकास बिन्दु है। व्यक्ति से परिवार, परिवार से समाज, राष्ट्र व विश्व-बंधुत्त्व का जो विकास हो रहा है उसके मूल में अहिंसा की भावना काम कर रही है। अहिंसा की परिधि के अंतर्गत समस्त धर्म-दर्शन समाविष्ट हो जाते हैं। सभी धर्म-सम्प्रदायों में अहिंसा तत्त्व को स्वीकारा है। अहिंसा संपूर्ण विश्व का सार्वभौम सिद्धांत है। जैन, बौद्ध, सिख, ईसाई व वैदिक सभी ने किसी न किसी रूप में अहिंसात्मक विचारों का प्रतिपादन किया है। वैदिक साहित्य में वेद सर्वोपरि है ऋग्वेद, यजुर्वेद में क्षमा, मैत्री व सद्भावना का विशेष उल्लेख मिलता है। बौद्ध धर्म के धम्मपद में बुद्ध ने शिष्यों से कहा सबको समान समझो ना कोई छोटा है ना कोई बड़ा। उन्होंने अहिंसा को सर्वोच्च धर्म के रूप में स्वीकारा है। इस्लाम का शाब्दिक अर्थ है शांति। इस शांति की चाह को पाने के लिए उन्होंने दया, करुणा, उदारता व विश्व-बंधुत्त्व की राह दिखाई। उनके अनुसार हम सब खुदा-पुत्र हैं। एक-दूसरे के साथ भाईचारे का व्यवहार करें। इससे आगे जब कदम बढ़ता है ईसाई धर्म की ओर उनका उपदेशामृत सबको नया संदेश देता है ''तुम अपने दुश्मन से भी प्यार करो'' यदि तुम्हारे एक गाल पर कोई थप्पड़ मारे तो दूसरा उसके सामने कर दो, कितना गूढ़ रहस्य छिपा है अहिंसा दर्शन का। और जैन दर्शन तो सबसे हटकर बड़ी ही मार्मिक बात कहता है ''तुम किसी को दुश्मन समझो ही मत।''

मित्ति में सव्व भूएसु वेरं मज्झ न केणई।

समस्त प्राणी जगत के साथ मैत्री का व्यवहार करें। जैन दर्शन के प्रत्येक क्रिया-कलाप में अहिंसा का दर्शन होता है। जैन धर्म में अहिंसा प्रधान है। जिसमें अहिंसा का सूक्ष्म-विवेचन किया गया है। इसको समझकर आचरण करने वाला ही आत्मतत्त्व की चौदह सीढ़ियों का आरोहण कर मोक्षमहल में पहुँच जाता है।

**जीवन का सुरक्षा कवच :**

वर्तमान युग की सबसे जटिल समस्या है हिंसा। जो प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। अभाव, अहंकार, अपराध, नशा आदि अनेक समस्याओं का कारण है हिंसा। जहाँ इसका निवास रहता है वहाँ एक प्रकार का उन्माद पैदा होता है और वह अपराध जगत में प्रवेश कर लेता है। स्वयं की विवेक चेतना पर आवरण आ जाता है, करणीय - अकरणीय का भान भूल जाता है। आज जातिवाद और साम्प्रदायिक उन्माद के आधार पर हिंसा का तांडव नृत्य बढ़ रहा है। अपरिमित आणविक अस्त्रों से भय का वातावरण बढ़ रहा है। आतंकवाद और उग्रवाद के साये में विश्व-मानस अशांति की अनुभूति कर रहा है। राष्ट्रीय अस्मिता की सुरक्षा के लिए प्राणों को हथेली पर रखकर आगे आने वाला कोई नहीं है। ऐसी परिस्थिति में जीवन का सुरक्षा कवच है अहिंसा। जो व्यक्ति को घृणा, ईर्ष्या, वैमनस्य, प्रतिशोध, अनैतिकता आदि कोटों की राहों से बचने के लिए सावधान कर देती है। और साहस के साथ हर व्यक्ति के हृदय में प्रेम, करुणा व नैतिकता के फूल खिला देती है। ढाई हजार वर्ष पूर्व महावीर द्वारा प्रदत्त अहिंसा, अपरिग्रह व अनेकांत के सिद्धांतों की प्रासंगिकता बढ़ती जा रही है। हिंसा का समाधान कभी हिंसा से नहीं होता। हिंसा की जड़ को समाप्त करने का उपाय है अहिंसा।

**हिंसा का एक कारण गरीबी :**

जीवन जीने के लिए रोटी, कपड़ा और मकान की आवश्यकता होती है। जब तक इस आवश्यकता की पूर्ति नहीं होती है तब व्यक्ति हिंसात्मक प्रवृत्ति में लिप्त हो जाता है। उदंडता, उच्छृंखलता, हिंसात्मक तोड़फोड़मूलक प्रवृत्ति बढ़ जाती है। गरीबी की बात तो छोड़ दें, पर कम से कम भूख की समस्या व्यक्ति को न सताएं। ये उग्रवाद और नक्सलवाद किसके आधार पर बने हैं। जिनको भी खाने को नहीं मिला, उन्होंने भूख से व्यथित होकर हथियार उठा लिए, ऐसी स्थिति में गरीबी भुखमरी, बेरोजगारी पर अहिंसा समवाय मंच के द्वारा कुछ गतिविधियाँ प्रारंभ की गई, जिसके कारण इस प्रतिक्रियात्मक हिंसा को रोका जा सके।

**इतिहास का दुर्लभ दस्तावेज :**

गुरुदेव तुलसी व आचार्य महाप्रज्ञ ने बड़ी ही सूझबूझ एवं दूरदर्शिता के साथ ''अहिंसा समवाय मंच'' का गठन

किया। यह चिंतन का मंच है, जहाँ हर समस्या का समाधान खोजा जा सकता है। चिंतन की धरा पर मानवीय चेतना का जागरण करने के लिए आचार्य महाप्रज्ञ ने जीवन के नौंवे दशक में अहिंसा यात्रा का द्वीप प्रज्वलित कर समाज को नई दिशा नया दर्शन दिया। यात्रा के दौरान समूचे देश को मानवता का संदेश मिला। आश्चर्य होता है कि सौ करोड़ की आबादी वाले इस देश में अहिंसा की कमान को थामने वाला कोई नहीं है? कौन अहिंसा माँ की सुरक्षा करेगा? इस विचारणीय चिंतन को आचार्यश्री महाप्रज्ञ की अहिंसा यात्रा के रूप में साकार रूप मिला।

सामाजिक, पारिवारिक व राष्ट्रीय स्तर पर होने वाले हिंसा के वातावरण को समाप्त करने के लिए ही अहिंसा यात्रा का शुभारंभ हुआ। इसका उद्देश्य अहिंसात्मक चेतना का जागरण व नैतिक मूल्यों का विकास। चिंतन की धरती पर अहिंसा का बिरूवा, पल्लवित-पुष्पित करने के लिए अहिंसा यात्रा के द्वारा लोगों में शांति, प्रेम, सौहार्द और सद्भावना का माहौल बना। अहिंसा प्रशिक्षण के चार आयाम हैं

1. अहिंसा प्रशिक्षण इतिहास और सिद्धांत
2. हृदय परिवर्तन
3. अहिंसक जीवन शैली
4. सम्यग् आजीविका प्रशिक्षण

इन चारों आयामों के द्वारा दृष्टिकोण में परिवर्तन है। वरना असम, मणिपुर, मिजोरम आदि में उग्रवाद की घटनाएँ उग्र रूप ले रही हैं। कहीं अपहरण हो रहे हैं तो कहीं लूट-खसौट की वारदातें। इसकी तह में हिंसा और परिग्रह की जड़ें कार्य कर रही हैं। इसके लिए हमें अहिंसा और अपरिग्रह दोनों पर चिंतन करना होगा।

अहिंसा प्रशिक्षण के साथ रोजगार प्रशिक्षण को भी जोड़ दिया गया। क्योंकि हिंसा मत करो इतना कहने मात्र से काम नहीं चलता। यदि हमारे सामने विकल्प है तो उसकी प्रस्तुति भी आवश्यक है। रोजगार प्रशिक्षण का कार्य आज काफी लोकप्रिय बन गया है। इसका विकसित रूप हैदराबाद की बिछड़ी हुई बस्तियाँ आपराधिक लोग जहाँ रहते हैं, उस रास्ते पर से जाने के लिए लोग डरते हैं। वहाँ सिलाई मशीन का प्रशिक्षण, कम्प्यूटर, मोमबत्ती निर्माण आदि का कार्य तेजी से चल रहा है। जीविका निर्वाह के साथ जीवन जीने की कला का प्रशिक्षण जीवन विज्ञान का पाठ्यक्रम भी चलता है। आसन, प्राणायाम, योग व ध्यान की कक्षाएँ भी नियमित रूप से चलती हैं। जो शारीरिक, मानसिक एवं भावनात्मक रूप से स्वस्थता प्रदान करता है। आज उन्हीं बस्तियों का काया-कल्प जैसा हो गया है। धीरे-धीरे लोग हिंसा से विरत होने लगे हैं। यह मानवीय एकता का अनुपम प्रयास है। सहयोग और सौहार्द की यह भावना समाज को हिंसा से मुक्त बनाने में अपनी अहं भूमिका अदा करेगी।

**करुणा, दया, सेवा, सहिष्णुता, सरलता आदि सद्गुणों से मानव-मस्तिष्क को जागृत कर मानव संस्कृति को सुरम्य बनाया जा सकता है। सत्यशील, संयम और समता की जननी अहिंसा के गौरव को बढ़ा सकते हैं। अहिंसा का आदर्श जीवन जी सकते हैं। जीवन का हर नया पल सुख और शांति की हरीतिमा फैलाता रहे। विश्वशांति का पैगाम है अहिंसा।**

**अहिंसा अमृत है :**

''अहिंसा वह अमृत है, जो समाज व राष्ट्र को जीवित रखता है।'' अहिंसा पुरुष आचार्य महाप्रज्ञ का यह अमृत पाथेय सबके भीतर एक नई ऊर्जा पैदा करता है। अहिंसा एक अजस्र अमृत धारा है जिससे क्रोध, अहंकार, लोभ व निषेधात्मक भावों के विष को समाप्त कर दिया जाता है। विराट विश्व के समस्त जीवों को मैत्री रूपी अमृत रस का पान करवाया जाता है। जहाँ मैत्री की उपेक्षा होती है वहाँ पारिवारिक कलह, मानवीय संबंधों में कटुता और जातीय संघर्ष से सारा वातावरण उद्वेलित हो जाता है। क्योंकि हिंसा स्वयं में प्रवृत्ति नहीं परिणाम है, कर्मवाद की भाषा में हिंसा का कारण है पूर्वकृत कर्म का विपाक। और विज्ञान की दृष्टि से रासायनिक असंतुलन। संतुलित जीवन शैली के लिए आदमी की चेतना का रूपांतरण जरूरी है। शरीर-शास्त्रियों का कहना है कि हमारे मस्तिष्क में अरबों-खरबों न्यूरॉन्स और उनके कनेक्शन है, उसमें हिंसा को बढ़ावा देने वाला तंत्र भी है और अहिंसा की प्रेरणा देने वाला तंत्र भी है। जब हमारी भावधारा बदलती है तो विचार और व्यवहार में भी परिवर्तन आता है। और उस समय हमारी अंतःस्रावी ग्रंथियों से स्राव पैदा होता है, हारमोन्स का निर्माण होता है और वे ही रसायन मस्तिष्क में जाते हैं और उसी के आधार पर चरित्र बनता है। चरित्र बदलने से स्वभाव बदलता और उससे ही हृदय परिवर्तन होता है। श्वासप्रेक्षा के माध्यम से भी प्राणतत्त्व को सक्रिय कर व्यक्ति प्राणधारा के द्वारा चित्तवृत्तियों में परिवर्तन ला सकता है। करुणा, दया, सेवा, सहिष्णुता, सरलता आदि सद्गुणों से मानव-मस्तिष्क को जागृत कर मानव संस्कृति को सुरम्य बनाया जा सकता है। सत्यशील, संयम और समता की जननी अहिंसा के गौरव को बढ़ा सकते हैं। अहिंसा का आदर्श जीवन जी सकते हैं। जीवन का हर नया पल सुख और शांति की हरीतिमा फैलाता रहे। विश्वशांति का पैगाम है अहिंसा।

# धर्म निरपेक्षता – क्या, कैसे, क्यों?

**प्रो. योगेश चन्द्र शर्मा**

भारतीय संविधान में मूलतः ''धर्म निरपेक्ष'' शब्द नहीं था। फिर भी सम्पूर्ण संविधान में धर्म निरपेक्ष की भावना सर्वत्र विद्यमान थी। बाद में संवैधानिक संशोधन के द्वारा इस शब्द को जब संविधान में जोड़ा गया, तब यह भावना संवैधानिक दृष्टि से और अधिक मजबूत हो गई। मोटे रूप में धर्म निरपेक्षता का अर्थ होता है धर्म और राज्य का पृथक्करण। दूसरे शब्दों में राज्य का अपना कोई निजी धर्म नहीं होता और किसी भी धर्म में वह हस्तक्षेप नहीं करता। राज्य की दृष्टि में सभी धर्म समान होते हैं और इसलिए वह केवल प्रशासनिक दृष्टि से कार्य करता है, धार्मिक दृष्टि से नहीं।

मध्यकाल में यूरोप में धर्म के आधार पर बेहद अत्याचार हुए। राजा, पोप के इशारों पर नाचते थे और इसलिए उन दिनों वास्तविक शासक पोप ही हुआ करता था। पोप की आलोचना या निन्दा करने वाले व्यक्तियों का जीवित रहना कठिन था। उन्हें अग्नि में जीवित जलाने की भी अनेक घटनाएँ हुई। अत्याचार की इस चरम स्थिति का परिणाम यह हुआ कि धीरे-धीरे पोप विरोधी भावनाएँ विकसित हुईं। तब एक के स्थान पर दो पोप बने एक वह पोप, जो पहले से ही कार्यरत था और दूसरा फ्रांस के राजा के द्वारा नियुक्त पोप। जब इससे अव्यवस्था बढ़ी तो बीच बचाव के लिए उन दोनों को हटाकर तीसरा पोप नियुक्त कर दिया गया। मगर वे दोनों हटे नहीं। कुछ समय तक तीनों पोप काम करते रहे। तब इस अराजकता और अव्यवस्था से बचने के लिए विद्वानों ने एक नई विचारधारा को जन्म दिया। वह विचारधारा थी ''सैक्यूलर राज्य'' की, अर्थात् राज्य और धर्म एक दूसरे के कार्यों में हस्तक्षेप न करें। बाद में जब राज्य की शक्तियों में समाजवादी विचारधारा के अंतर्गत वृद्धि होने लगी, तब यह माना गया कि विशेष आवश्यकता पड़ने पर राज्य धर्म में हस्तक्षेप कर सकता है, परन्तु किसी भी परिस्थिति में धर्म, राज्य में हस्तक्षेप नहीं कर सकता। इससे धीरे-धीरे धर्म और राज्य के पृथक्करण की विचारधारा पनपी। इस विचारधारा के बावजूद यूरोप के अधिसंख्यक राज्य कभी भी पूर्णरूप से और सही अर्थों में धर्म निरपेक्ष (सैक्यूलर) नहीं बन पाये। वहाँ पर अनेक पार्टियाँ अब भी धर्म के आधार पर बनी हुई हैं और उस आधार पर वे वोट भी बटोरती हैं। इंग्लैंड में केवल प्रोटेस्टेंट धर्मावलम्बी ही राजा हो सकता है। वह किसी रोमन कैथोलिक धर्मावलम्बी से विवाह भी नहीं कर सकता। इंग्लैंड का राजा अपने देश की धर्मसभा का अध्यक्ष भी होता है तथा परंपरा के अनुसार वहाँ के प्रमुख धर्माधिकारियों की नियुक्ति भी राजा के द्वारा ही की जाती है। यूरोप के अधिकांश देशों में प्रमुख राजनीतिक और प्रशासनिक कार्यों का प्रारंभ ईसाई धर्म की परंपराओं के अनुसार किया जाता है। इंग्लैंड तथा कुछ अन्य देशों की संसद में तो इस प्रकार के धार्मिक कार्यों के लिए बाकायदा धर्माधिकारी का पद भी है।

अंग्रेजी के इसी शब्द ''सैक्यूलरिज्म'' का हिन्दी शब्द बनाया गया ''धर्म निरपेक्षता''। कुछ विद्वानों का विचार है कि ''सैक्यूलरिज्म'' के लिए हिन्दी में सही अनुवाद 'पंथ निरपेक्षता' होना चाहिए, ''धर्म निरपेक्षता'' नहीं। उनका तर्क एक सीमा तक सही है। 'धर्म' के अंतर्गत हम नैतिकता के सामान्य सिद्धांतों को लेते हैं, जाति विशेष को नहीं। महात्मा गांधी भी जब ''धर्मविहीन'' राजनीति का विरोध करते थे तो उनका अभिप्राय किसी जाति या सम्प्रदाय विशेष से नहीं, अपितु नैतिकता के सामान्य सिद्धांतों से ही था। उनका धर्म, मानव धर्म था, जो राजनीति का अभिन्न अंग होना चाहिए। उसके अभाव में राजनीति केवल राक्षस नीति बनकर रह जाती है। अंग्रेजी शब्द के हिन्दी में इस गलत अनुवाद से व्यवहार में कोई विशेष अंतर नहीं पड़ा। व्यवहार में ''धर्म निरपेक्षता'' का अर्थ हम पंथ निरपेक्षता ही लगाते रहे हैं और उसी रूप में इस शब्द का प्रयोग करते हैं।

यूरोप के समान अमेरिका में भी यह शब्द सिद्धांत में जितना प्रिय है, उतना व्यवहार में नहीं। वहाँ गैर यूरोपियन नस्ल के लोगों को, विशेषतः वहाँ के मूल निवासियों को आम व्यवहार में दोयम दर्जे का नागरिक समझा जाता है। इजरायल केवल यहूदियों का राज्य है और अरब राज्य केवल मुसलमानों के राज्य हैं। साम्यवादी देश चीन में साम्यवाद स्वयं अपने आप में एक सम्प्रदाय है, जहाँ किसी भी दूसरे सम्प्रदाय के लिए कोई स्थान नहीं हो सकता। सोवियत संघ के बिखराव के बाद मुस्लिम बहुल इकाइयों में भी मुस्लिम कट्टरता की भावनाएँ पूरी तरह उभर चुकी हैं। पड़ौसी देश पाकिस्तान तो कट्टर धर्म पर आधारित मुस्लिम देश ही है। अन्य मुस्लिम देशों की स्थिति भी लगभग यही है।

जहाँ तक भारत का संबंध है, हमें इस पर तनिक विस्तार से विचार करना होगा। प्राचीन भारत में ''धर्म निरपेक्षता'' जैसे किसी शब्द की आवश्यकता महसूस नहीं की गई। उस समय यहाँ निवास करने वाली विभिन्न जातियों में यदा कदा विवाद उत्पन्न होते थे। ये जातियां, देव, दानव, वानर, गरुड़ तथा नाग आदि थीं। महात्मा मनु ने इन सब को मिलाकर एक समन्वित संस्कृति को जन्म दिया, जो उनके नाम से मानव संस्कृति कहलाई। एक-दूसरे को सम्मान सूचक सम्बोधन के रूप में ये लोग आपस में 'आर्य' कहते

और इसी से इस मानव संस्कृति के लोग कालान्तर में 'आर्य' तथा बाद में 'हिन्दू' कहलाये। 'हिन्दू' कैसे और किस प्रकार से कहलाये यह अपने आप में एक अलग स्वतंत्र विषय है जिस पर विभिन्न विरोधी विचारधाराएँ हैं। मूलतः समन्वय की भावना से युक्त होने के कारण हिन्दुओं ने सहज ही हूण आदि उन विदेशियों को भी अपने में पचा लिया, जो भले ही आक्रमणकारी के रूप में यहाँ आये, मगर जिन्होंने मिलजुल कर यहाँ रहने की भावना प्रकट की। ब्रह्म, शैव तथा वैष्णव आदि लोगों में भी बीच में कुछ समय के लिए विवाद रहा, मगर बाद में, ब्रह्म, शिव तथा विष्णु इन तीनों को समान रूप से पूज्य मानकर उस विवाद को हमेशा के लिए समाप्त कर दिया गया। समन्वय तथा मिलजुलकर रहने की हमारी भावना ने हमेशा ही आपसी विवादों पर विजय प्राप्त की।

**''धर्म निरपेक्षता'' जैसे किसी शब्द के अभाव के बावजूद, धर्म निरपेक्षता और पंथ निरपेक्षता भारतीय संस्कृति की सदैव आवश्यक अंग रही। हमारे प्राचीन साहित्य में न्याय में निष्पक्षता की आवश्यकता का सदैव प्रतिपादन किया गया और उसे अपनाया गया। यह सब इतना स्वाभाविक माना गया कि इसके लिए किसी अलग शब्द की आवश्यकता का ही अहसास नहीं हुआ।**

मुसलमान आक्रमणकारी के रूप में यहाँ आये, मगर सत्ता पर कब्जा मिल जाने के उपरांत वे यहीं पर बस गये। उनका एक प्रमुख उद्देश्य अपने धर्म का प्रचार करना भी था। हिन्दू धर्म की उदारता तथा शासन शक्ति के प्रभाव के कारण उन्हें अपने इस उद्देश्य में काफी सफलता भी मिली। बाहर से आये मुसलमानों की संख्या तो बहुत नगण्य थी। अधिसंख्यक मुसलमान यहीं के वे हिन्दू थे, जिन्होंने अलग-अलग कारणों से धर्म परिवर्तन कर लिया। इसलिए वे सहज रूप में ही यहाँ रहते रहे। इससे धर्म परिवर्तन के बावजूद उनमें मिलजुल कर रहने की प्रवृत्ति बनी रही। इसी भावना से यहाँ एक नया ''उपनिषद्'' भी तैयार किया गया ''अल्लोपनिषद्''। इसमें अल्लाह को भी ईश्वर के एक रूप में स्वीकार किया गया। मगर सत्तासीन और कट्टर लोगों को यह बात पसन्द नहीं आयी। नतीजा यह हुआ कि हिन्दुओं के समन्वयवाद में मुसलमान शामिल नहीं हो सके। फिर भी कुछ अपवादों को छोड़कर मुस्लिम शासन में मिलजुलकर रहने की ही भावना पनपी। सत्तासीन लोगों के द्वारा स्वधर्मियों का समर्थन एक स्वाभाविक बात थी। यही सोचकर हिन्दुओं में कोई विशेष मुस्लिम विरोधी भावना नहीं पनपी। इसीलिए उस समय भी ''धर्म निरपेक्षता'' जैसे किसी शब्द की आवश्यकता महसूस नहीं की गई।

अंग्रेज हमारे यहाँ व्यापारी के रूप में आये। ईसाई धर्म के प्रचारकों को भी यहाँ का वातावरण अच्छा लगा। उन्हें हिन्दू धर्म की उदारता तथा जातीय दृष्टि से एक-दूसरे को छोटा-बड़ा समझने की भावना अपने अनुकूल लगी। इसलिए उन्होंने भी यहाँ अपना झंडा गाड़ दिया। धीरे-धीरे जब उन्हें यहाँ की शासन सत्ता प्राप्त होने लगी, तब तो उनके पौ बारह-पच्चीस हो गए। शासन सत्ता के माध्यम से उन्होंने अपने व्यापार तथा धर्म प्रचार के कार्य को खूब चमकाया। इतने बड़े देश पर अपना नियंत्रण बनाये रखने के लिए उन्होंने हिन्दू और मुसलमानों के बीच भेदभाव की दीवार को भी बढ़ाया। चूंकि उन्होंने शासन सत्ता मुसलमानों से प्राप्त की थी, इसलिए उन्हें प्रारंभ में मुसलमानों की तरफ से विद्रोह का खतरा अधिक था। तद्नुसार अंग्रेजों की प्रारंभिक नीति मुसलमानों के विरुद्ध और हिन्दुओं के पक्ष में रही। बाद में जब अंग्रेजों ने यह महसूस किया कि हिन्दू काफी अधिक तरक्की कर चुके हैं तथा मुसलमान काफी अधिक दब चुके हैं, तब उन्हें खतरा हिन्दुओं की तरफ से नजर आया। कांग्रेस सहित सभी राष्ट्रीय संस्थाओं में बहुलता भी हिन्दुओं की ही थी। इसलिए अब उनकी नीति हिन्दुओं के विरुद्ध तथा मुसलमानों के पक्ष में हो गयी। उनकी यही नीति मोटे रूप में अंत तक बनी रही। इसी नीति के अनुरूप अंग्रेजों के इशारे पर मुसलमानों के अनेक छोटे-बड़े संगठन बने तथा अंत में अंग्रेजों के इशारे पर ही उनका राजनीतिक संगठन बना मुस्लिम लीग। मुस्लिम लीग ने जनसंख्या के अनुपात में मुसलमानों के लिए सरकारी नौकरियों में आरक्षित स्थान तथा पृथक निर्वाचन क्षेत्र से अपनी मांगों को शुरू करके उन्हें देश के विभाजन तक पहुँचा दिया। स्पष्ट ही इन मांगों के पीछे अंग्रेजी दिमाग काम कर रहा था। अंग्रेजी शासन काल में, अंग्रेजों की ही नीति के अनुरूप देश में भयानक साम्प्रदायिक दंगे भी हुए। इन परिस्थितियों ने देशवासियों को और विशेषतः उस समय के एकमात्र प्रमुख राजनीतिक दल कांग्रेस को धर्म निरपेक्षता के सिद्धांत पर विचार करने और अपनाने पर बाध्य कर दिया।

कांग्रेस के लिए ''धर्म निरपेक्षता'' का अर्थ सदैव मुस्लिम तुष्टिकरण रहा। स्वतंत्रता-संघर्ष के दौरान कांग्रेस को हमेशा यह आशंका रहती कि यदि मुसलमान उसके साथ नहीं रहेंगे तो उसे केवल हिन्दुओं की संख्या मान लिया जायेगा और उस स्थिति में वह राष्ट्रीय दल के रूप में अपना स्वतंत्रता-संघर्ष नहीं चला पाएगी। इसलिए वह प्रारंभ से ही इस बात के प्रति विशेष सतर्क रही कि मुसलमान पर्याप्त संख्या में उसके साथ जुड़े रहें। इसके लिए वह उनकी उचित या अनुचित सभी मांगों को मानने के लिए भी तैयार रहती थी। चालाक कट्टर मुस्लिम नेताओं ने कांग्रेस की इस कमजोरी का भरपूर लाभ उठाया। वे उसके सामने तरह की मांग रखते रहे और कांग्रेस उन्हें स्वीकार करती रही। 1916 का लखनऊ समझौता भी एक प्रकार से कट्टरवादी मुस्लिम नेताओं के सामने आत्मसमर्पण जैसा ही था।

प्रथम विश्व युद्ध के बाद जब सन्धि की बातें चलने लगीं तो मित्र देशों ने तय किया कि वे शत्रु देश टर्की के खलीफा को सत्ता से हटाकर वहाँ जनतंत्रीय शासन व्यवस्था स्थापित करेंगे। उन दिनों टर्की का खलीफा विश्वभर के मुसलमानों का धर्म गुरू होता था। इसलिए भारत के मुसलमानों को स्वभावतः मित्र राष्ट्रों का यह निर्णय रुचिकर नहीं लगा। उन्होंने इसके विरोध का निर्णय लिया। कांग्रेस को यह समय, मुसलमानों को अपनी तरफ मिलाने के लिए एक उपर्युक्त अवसर लगा। इसलिए उसने इस शुद्ध धार्मिक मसले को भी अपने असहयोग आंदोलन में शामिल कर लिया, जिसका अंत चौरा चौरी कांड के साथ हुआ। यह असहयोग आंदोलन कहने को तो कांग्रेस का आंदोलन था और इसके नेता थे महात्मा गांधी। मगर फिर भी अधिकांश मुसलमानों पर हुक्म चलाता था, उन्हीं के अपने नेताओं का स्पष्ट ही यह मुस्लिम तुष्टिकरण और राष्ट्रीय एकता की दृष्टि से भले ही उचित हो, मगर धर्म निरपेक्षता की भावना के अनुरूप नहीं था।

देश का विभाजन भी मोहम्मद अली जिन्ना की दो राष्ट्र की विचारधारा के आधार पर हुआ और उसके अनुरूप पाकिस्तान ने अपने को मुस्लिम राष्ट्र घोषित कर दिया। इस परिप्रेक्ष्य में तर्कसंगत बात तो यह होती कि भारत को भी हिन्दू राष्ट्र घोषित कर दिया जाता, मगर आदर्श की डोर से बंधे होने वोट की राजनीति के कारण ऐसा नहीं किया गया। इसलिए स्वाधीनता के बाद भी हमारे यहाँ धर्मनिरपेक्षता की आवश्यकता महसूस की जाती रही।

कांग्रेस की दृष्टि में बनी धर्म निरपेक्षता की परिभाषा स्वाधीनता के बाद भी कमोबेश रूप में यथावत रही। इस समय मुस्लिम तुष्टिकरण के पीछे उसका उद्देश्य मुसलमानों के वोट बटोरने का रहा। मुख्य बात यह रही कि कांग्रेस की दृष्टि में मुसलमानों की तुष्टिकरण का अर्थ आम मुसलमान से नहीं, अपितु उनके कट्टरवादी नेताओं से रहा। इसीलिए एक बेसहारा परित्याक्ता मुस्लिम महिला शाहबानों की गुहार को अनसुना करके, कट्टरवादी नेताओं की भावनाओं के अनुरूप कानून में संशोधन करके न्यायालय की परोक्ष अवमानना तक कर दी गयी। स्पष्ट संवैधानिक व्यवस्था के बावजूद देश में कभी भी समान व्यवहार संहिता के लिए कोई कदम नहीं उठाया गया। कट्टरवादी नेताओं को अधिक महत्त्व देने का मुख्य कारण यह रहा कि आम मुसलमानों पर उनका काफी अधिक प्रभाव रहता है और धर्म की दुहाई देकर वे उन्हें किसी भी रास्ते पर सरलता से ले जा सकते हैं। धर्म का जितना प्रभाव आम मुसलमान पर रहता है, उतना आम हिन्दू पर नहीं। इसलिए हिन्दुओं पर उनके धर्माधिकारियों का भी अधिक प्रभाव नहीं रहता। फलस्वरूप चुनावों में हिन्दुओं के वोट जितने अधिक बंटते हैं, उतने मुसलमानों के नहीं। इसीलिए कांग्रेस ने तथा अन्य अधिकांश दलों ने भी धर्म के आधार पर हिन्दुओं के वोटों को आकर्षित करने का प्रयत्न नहीं किया। हाँ जातीय आधार पर उनके संगठन बनाकर, उन संगठनों के नेताओं को अपने पक्ष में रखने का प्रयत्न अवश्य करती रही।

प्रारंभिक दौर में हिन्दुओं का कोई मजबूत संगठन भी नहीं था। जनसंघ का प्रभाव क्षेत्र भी काफी सीमित था। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ का प्रचार-प्रसार तो केवल उसके अपने सदस्यों की व्यक्तिगत आस्था तक सीमित था। भारतीय जनता पार्टी ने अपने निर्माण के तत्काल बाद इस दिशा में तेजी से कदम बढ़ाये। अयोध्या में राम मंदिर निर्माण के मुद्दे ने उसकी लोकप्रियता को काफी अधिक बढ़ा दिया। इतिहास में संभवतः पहली बार हिन्दुओं में संगठन की भावना दृष्टिगत हुई। हालात को देखते हुए हिन्दुओं ने इसकी आवश्यकता भी महसूस की। इसीलिए भारतीय राजनीति में भारतीय जनता पार्टी का वर्चस्व बढ़ा।

कांग्रेस के लिए यह संकट की घड़ी रही। हिन्दुओं में धार्मिक जागृति और भावना उत्पन्न होने से उनके वोट सामूहिक रूप से उसके हाथ से फिसलने लगे। मुसलमानों के वोट भी अब पहले के समान, संगठित नहीं रहे। वे कांग्रेस के अतिरिक्त जनता दल, बसपा, सपा आदि दलों में विभक्त हो गए। कुछ अन्य दलों ने भी उन पर कब्जा किया। भाजपा सहित सभी दलों ने भी कमोबेश रूप में मुस्लिम तुष्टिकरण की नीति को अपनाया। अल्पसंख्यकों को रिझाने में कम्यूनिस्ट भी पीछे नहीं रहे। धर्मनिरपेक्ष पार्टी का दावा करते हुए भी कांग्रेस ने केरल में मुस्लिम लीग से समझौता करने में कभी परहेज नहीं किया, जबकि देश के विभाजन के लिए पूरी तरह मुस्लिम लीग ही उत्तरदायी थी।

छः दिसम्बर 1992 की अयोध्या घटना से कांग्रेस ने राजनीतिक लाभ उठाना चाहा और उसके लिए उसने फिर से मुसलमानों को अपने पक्ष में करने का प्रयत्न किया। इसीलिए उसने विवादास्पद बाबरी ढांचे को बार-बार मस्जिद कहकर संबोधित किया तथा उसको नष्ट करने का सम्पूर्ण उत्तरदायित्त्व भाजपा पर डालकर मस्जिद के पुनर्निर्माण की बात कही। इससे मुसलमानों में कांग्रेस के प्रति रुझान बढ़ने के तो विशेष प्रमाण नहीं

**अंग्रेजी के इसी शब्द ''सैक्यूलरिज्म'' का हिन्दी शब्द बनाया गया ''धर्म निरपेक्षता''। कुछ विद्वानों का विचार है कि ''सैक्यूलरिज्म'' के लिए हिन्दी में सही अनुवाद 'पंथ निरपेक्षता' होना चाहिए, ''धर्म निरपेक्षता'' नहीं। उनका तर्क एक सीमा तक सही है। 'धर्म' के अंतर्गत हम नैतिकता के सामान्य सिद्धांतों को लेते हैं, जाति विशेष को नहीं।**

मिले, मगर मस्जिद के ध्वंस होने की बात ने उनकी भावनाओं को उभारा अवश्य, जिसके परिणाम स्वरूप देश में साम्प्रदायिक दंगों की बाढ़-सी आ गई। मस्जिद के पुनर्निर्माण की बात कहकर कांग्रेस उलझन में भी फँस गयी। विवादास्पद स्थान पर कार सेवकों के द्वारा हाथों हाथ मंदिर बना दिया गया था, जिसे हटाने का अब परिणाम होगा हिन्दुओं की नाराजगी मोल लेना। संभवता इसके लिए कांग्रेस तैयार नहीं हो सकती।

गुजरात में गोधरा स्टेशन पर 58 हिन्दू कार सेवकों को जीवित जला देने के बाद भड़के साम्प्रदायिक दंगों का भी कांग्रेस सहित सभी राजनीतिक दलों ने लाभ उठाना चाहा। इससे किस दल को कितना लाभ हुआ यह तो अभी बतलाना कठिन है, लेकिन राजनीतिक दलों की साम्प्रदायिक टिप्पणियों से दंगे अवश्य काफी अधिक उभरे।

वस्तुस्थिति यह है कि इस समय हमारे यहाँ लगभग सभी दल अपने को धर्म निरपेक्ष दल कहते हैं और विभिन्न धर्मावलम्बियों की वोट प्राप्त करने के लिए धर्म निरपेक्षता का दामन थामते हैं। इस दृष्टि से भाजपा भी अपने को असली धर्म निरपेक्ष दल कहने में गर्व महसूस करती हैं। व्यवहार में इस समय कोई भी दल सही अर्थों में धर्म निरपेक्ष नहीं है। धर्म निरपेक्ष दल के रूप में उनसे यह अपेक्षा नहीं की जा सकती कि वे धार्मिक मामलों में हस्तक्षेप करें, किसी की धार्मिक भावनाओं को उभारें और धर्म तथा जाति पर आधारित संगठनों का समर्थन करें। वास्तव में हमारे सभी राजनीतिक दल ये सब काम करते रहे हैं। चुनाव में उम्मीदवार बनाने से लेकर राजनीतिक लाभ बांटने तक उनकी मुख्य भावना धर्म और जाति की ही होती है। देश में विशिष्ट राजनीतिक पदों के लिए उम्मीदवारों के चयन में भी योग्यता के स्थान पर धर्म और जाति को ही वरीयता दी जाती है। ऐसी स्थिति में धर्म और जातीयता के उर्वरक से तैयार की गयी राजनीति की भूमि पर धर्म निरपेक्षता की फसल की आशा कैसे की जा सकती है? हमारी राजनीति में धर्म निरपेक्षता केवल ऐसा मुखौटा बनकर रह गयी है, जिसे हमारा प्रत्येक राजनीतिक दल आवश्यकतानुसार तोड़ मोड़ कर अपने चेहरे पर लगा लेता है, जिससे उस मुखौटे का असली स्वरूप ही अब विकृत हो चुका है। धर्मनिरपेक्षता की आड़ में पिछले दिनों राजनीतिक दलों की जो भूमिका देखने को मिली, उससे यही लगता है कि उनकी नजर में देश की प्राचीन संस्कृति और हिन्दुत्त्व या हिन्दू हितों की बात करना साम्प्रदायिकता है और प्राचीन संस्कृति का विरोध तथा अल्पसंख्यकों का समर्थन धर्म निरपेक्षता है। इस विचारधारा से देश के दो प्रमुख सम्प्रदायों में न तो सहज संबंध स्थापित हो पाते हैं और न ही उनमें निकटता का अहसास हो पाता है। इसके विपरीत उनमें अलगाववादी भावनाएँ ही पनपती हैं।

देश में सही रूप में धर्म निरपेक्षता का वातावरण बनाने के लिए यह आवश्यक है कि हमारे राजनेता किसी भी मामले पर धर्म के आधार पर सोचना बंद कर दें। चुनाव में उम्मीदवारों का चयन करने के समय भी उनकी केवल योग्यता और ईमानदारी का ध्यान रखें, जाति या धर्म का नहीं। राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, स्पीकर या इसी प्रकार के उच्च पदों पर नियुक्ति के समय तो धर्म या जाति के आधार पर कोई निर्णय लेना स्वयं धर्मनिरपेक्षता की ही हत्या करना है। वस्तुस्थिति तो यह है कि देश की आम जनता में आज भी सामान्यतः धर्म निरपेक्षता की ही भावना है। इस भावना को सर्वाधिक ठेस हमारे राजनेता ही पहुँचाते हैं। **हमारे राजनेता धर्म जाति या सम्प्रदाय अथवा अल्पसंख्यक और बहुसंख्यक जैसे शब्दों का प्रयोग जितना कम करेंगे, उतना ही इस देश का कल्याण होगा। देश के प्रत्येक व्यक्ति को केवल एक नागरिक के रूप में देखा जाए और उसकी योग्यता तथा गुणों के लिए ही उसे सम्मानित किया जाए।** दूसरी तरफ उसके अपराधों के लिए उसे दंडित भी किया जाए। इन कार्यों में उसकी जाति या धर्म की चर्चा व्यर्थ है। धर्म मनुष्य का पूरी तरह व्यक्तिगत मसला है। इसलिए उसे व्यक्तिगत सीमा तक ही छोड़ दिया जाए। हमारा कोई भी निर्णय धर्म या जाति के आधार पर नहीं होना चाहिए। तभी हम सही अर्थों में धर्म निरपेक्षता की दुहाई दे सकते हैं। देश के संविधान में जिस समान नागरिक संहिता का समर्थन किया गया है, हमें उस दिशा में भी आगे बढ़ना चाहिए। देश के धर्म स्थल भी केवल पूजा या इबादत के लिए हों, उनका राजनीतिक उपयोग करने वालों को दंडित किया जाना चाहिए। इसी प्रकार की कुछ बातों पर ईमानदारी से ध्यान देकर यदि हमारे राजनेता और प्रशासक अपने निर्णय लें और उन्हें क्रियान्वित करें। तो निश्चित ही हम सही रूप में धर्म निरपेक्षता को अपने यहाँ लागू कर सकेंगे।

*10/611, मानसरोवर*
*जयपुर–302020 (राजस्थान)*

**बिना धार्मिकता एवं आध्यात्मिकता के आजादी की सुरक्षा नहीं रह सकती।**

● आचार्य तुलसी ●

*संप्रसारक :*

**एम.जी. सरावगी फाउंडेशन**

41/1-सी, झावूतल्ला रोड, बालीगंज-कोलकाता-700019

● दूरभाष : 22809695

# स्वस्थ जीवन और पंच तत्त्व, पंच रंग संतुलन

मुनि किशनलाल

"पंच तत्त्व से बना शरीरा", भारतीय मानस में यह उक्ति खूब प्रचलित है। जहाँ कोई भी एक तत्त्व हो वहाँ वर्ण, गंध, रस, स्पर्श भी होगा। इससे यह स्पष्ट हो रहा है कि जहाँ तत्त्व है वहाँ रंग (वर्ण) अवश्यंभावी है। इसलिए यह कहा जा सकता है 'पंच रंग से बना शरीरा'। शरीर में पाँचों रंग है। पाँच रंगों से यह शरीर बना है। जैसा रंग वैसा ढंग, जैसा ढंग वैसा रंग। रंग और जीवन व्यवहार में बड़ा सामंजस्य है। रंग को ठीक करने से जीवन ठीक हो जाता है। जैसे तत्त्वों की कमी से शरीर रुग्ण हो जाता है, वैसे ही रंगों की कमी से भी शरीर अस्वस्थ हो जाता है। स्वास्थ्य और रंगों का गहरा संबंध है। केवल स्वास्थ्य से ही नहीं जीवन के हर पहलू से रंगों का संबंध है। रंगों की लेश्या (रंगीन भावधारा) से संबंध है। रंग केवल रंगीन ही नहीं उसका भावों के साथ संबंध है और भाव चेतना से जुड़े हुए हैं, अतः यह स्पष्ट हो जाता है कि रंग हमारी चेतना को भी प्रभावित करते हैं।

ज्ञानी जन कहते हैं कि अपनी लेश्या को विशुद्ध रखो। लेश्या (रंगीन भावधारा) भी प्रशस्त और अप्रशस्त दोनों होती है। कृष्ण, नील और कापोत अप्रशस्त लेश्याएँ होती हैं जबकि तेजः, पद्म और शुक्ल तीनों लेश्याएँ अत्यन्त प्रशस्त हैं। अप्रशस्त का परिहार कर प्रशस्त को अपनाया जाये। लेश्या, भाव और योग तीनों के परस्पर संबंध हैं। किस कार्य क्षेत्र को अपनाया जाये, जिससे कर्मों का परिष्कार किया जा सके? रंग भी कर्म वर्गणाओं को विलय में सहभागिता निभा सकता है।

पाँच तत्त्वों से बने इस ढाँचें का साधना के लिए क्या उपयोग हो सकता है? यह महत्त्वपूर्ण चिन्तनीय बिन्दु है। यथार्थ में पाँच तत्त्वों से बने इस मानव देह से व्यक्ति नर से नारायण बन सकता है। आत्मा से परमात्मा बन सकता है। इस शरीर के माध्यम से अध्यात्म की साधना की जा सकती है।

पाँच तत्त्व प्रतिदिन किस रूप में बहते हैं? यह जानने से रंग भी उनके साथ कैसे प्रवाहित होते हैं और तत्त्वों तथा रंगों का सामंजस्य किस प्रकार बिठाया जा सकता है? यह जाना जा सकता है। पृथ्वी का रंग पीला, जल का रंग सफेद, अग्नि का रंग लाल (अरुण), वायु का रंग हरा/मेघ वर्ण तथा आकाश रंग बिरंगा (शेष रंग)। पाँच तत्त्व और पाँचों रंग एक साथ व्यवस्थित हो जाते हैं। इनके गुण और धर्म को पहचानना सरल हो जाता है और हम रंग और तत्त्वों की संयुक्त महत्ता का उपयोग कर सकते हैं।

**पाँच तत्त्व विज्ञान**

स्वर शास्त्र में पाँचों तत्त्वों का निर्देश देते हुए लिखा है "बहेत्तावद घटी मध्ये पंच तत्त्वानि निर्देशेत्" प्रतिदिन दिन-रात 24 घंटे, 60 घड़ियों में ढ़ाई-ढ़ाई घड़ी के हिसाब से एक नासाछिद्र से निश्चित क्रमानुसार वायु का प्रवाह चलता है। एक घड़ी 24 मिनट की होती है। 24 मिनट एक स्वर चलता है। अर्थात् एक घड़ी में एक, दूसरी घड़ी में दूसरा स्वर चलता है और आधी घड़ी दोनों साथ-साथ चलते हैं। इस तरह ढ़ाई घड़ी (एक घन्टा) एक चक्र (सर्किल) पूरा होता है। एक घड़ी (24 मिनट) में स्वर चलता है। स्वरों के साथ तत्त्वों का प्रवाह भी नासाछिद्रों में होता है। श्वास चलने के समय पाँच तत्त्वों का क्रमशः प्रवाह चलता है। पहले वायु फिर अग्नि, पृथ्वी, जल और आकाश तत्त्व का उदय होता है। श्वास-प्रश्वास की गति, स्थिति को जानकर ही हम स्वस्थ रह सकते हैं।

तत्त्वों के प्रवाह में सबसे पहले है वायु तत्त्व। वायु का रंग हरा होता है। हरे रंग के प्रवाह से शरीर और नाड़ी की शुद्धि होती है। दूसरे क्रम पर है अग्नि तत्त्व। अग्नि का रंग अरुण है। अरुण रंग शक्ति का परिचायक है। नाड़ी शोधन के साथ शक्ति चाहिए इसलिए अग्नि तत्त्व का प्रवाह हुआ। अग्नि के पश्चात् पृथ्वी तत्त्व का क्रम है। पृथ्वी तत्त्व का रंग पीला है जो उत्साहवर्द्धक है अर्थात शक्ति के उदय से उत्साह पैदा होता है। अगले क्रम में जल तत्त्व का उदय होता है। जल का रंग सफेद है जो शान्ति और शीतलता का रंग माना जाता है अर्थात् उत्साह के साथ शान्ति और शीतलता का सामंजस्य होना आवश्यक है। और सबसे अन्त में आकाश तत्त्व का उदय होता है। आकाश तत्त्व को विविध रंगों वाला माना जाता है। आकाश अवकाश प्रदान करता है। इस प्रकार तत्त्वों के साथ रंगों की सहभागिता अपना विशिष्ट महत्त्व रखती है। पाँचों तत्त्वों एवं रंगों के गुण-धर्म एवं विशेषताओं से परिचित होना स्वास्थ्य से परिचित होना है।

**पृथ्वी तत्त्व**

मनुष्य के शरीर में पृथ्वी तत्त्व का स्थान मूलाधार चक्र है। यह चक्र गुदा के समीप, सुषुम्ना का अन्तिम बिन्दु है। यह भूलोक का प्रतिनिधि है। पृथ्वी तत्त्व का ध्यान मूलाधार चक्र पर किया जाता है। पृथ्वी तत्त्व का रंग पीला है, आकृति चतुष्कोण की है। इसका गुण गंध है। इसकी ज्ञानेन्द्रिय नासिका है। कर्मेन्द्रिय गुदा है। पाडु (खुजली), भय आदि रोग इसकी विकृति से पैदा होते हैं।

मूलाधार चक्र में ध्यान स्थिर करने से पाडु (खुजली) आदि विकास स्वतः शान्त हो जाते हैं। मूलाधार में ध्यान के समय आसन वज्रासन, हाथों की मुद्रा में अंगुलिया पेट की ओर रहेगी। नासाग्र पर ध्यान करें। लं बीजाक्षर का जप करें। चोकोण पीले रंग की पृथ्वी का ध्यान करें।

*लं बीजां धरणीं ध्यायेच्च चतुरस्रां सुपीतभाम्।*
*सुगन्धं स्वर्णवर्णत्त्व मारोग्यं देहलाघवम्।।*

इसको करने से नासिका सुगन्ध से भर जाती है। शरीर वर्ण कान्तिमान हो जाता है। ध्यान करते समय पृथ्वी के गुणों

का स्मरण करना चाहिए। 'लं' बीज का जप करते रहना चाहिए।

**जल तत्त्व**

यह तत्त्व शरीरस्थ 'स्वाधिष्ठान चक्र' में है। इसकी अवस्थिति पेडू अर्थात् लिंग मूल में है। यह तत्त्व शरीर में भुवः लोक का प्रतिनिधि है। इसमें जल तत्त्व का निवास है। जल तत्त्व का रंग श्वेत होता है। अर्द्धचन्द्र की आकृति होती है। कटु तिक्त, अमल, कषाय आदि रसों का आस्वाद इसी तत्त्व के कारण होता है। ज्ञानेन्द्रिय जिह्वा है और कर्मेन्द्रिय जनेन्द्रिय लिंग है। मोह आदि विकार इसी तत्त्व के कारण होते हैं। वज्रासन में हाथों की मुद्रा अंगुलियाँ पेट की ओर रहेगी।

*वं बीजं वरुणं ध्यायेदर्द्धचन्द्रं शशिप्रभाम्।*
*क्षुद् पिपासा सहिष्णुत्त्वं जल मध्येषु मज्जनम।।*

भूख, प्यास का अभाव, सहने की शक्ति का विकास, जल में अव्याबाध गति हो जाती है।

**तेज (अग्नि)**

इस तत्त्व का निवास शरीर में मणिपुर चक्र, तेजस् केन्द्र में है। यह नाभि में स्थित है। यह 'स्वलोक' का प्रतिनिध है। अग्नि तत्त्व का रंग लाल, गुण 'रूप' कहा गया है। इसकी आकृति त्रिकोणात्मक है। इसकी ज्ञानेन्द्रियआँख है, कर्मेन्द्रिय पांव है। क्रोधादि विकार तथा सृजन आदि में इस तत्त्व की प्रधानता है। इस तत्त्व की सिद्धि से अपच, पेट के विकार दूर होते हैं। वज्रासन में बैठकर 'रं' बीजाक्षर का जप करें। त्रिकोणात्मक पिरामिड में लाल प्रभा वाले चक्र का ध्यान करें। इससे अत्यन्त अन्न पानी ग्रहण करने की शक्ति, अग्नि सहन करने की क्षमता आ जाती है।

*रं बीजंशिखिनं ध्यायेत् त्रिकोण अरुण प्रभम्।*
*बह्वन्न पान भोक्तृत्त्व मातपाग्नि सहिष्णुता।।*

**वायु तत्त्व**

यह तत्त्व शरीरस्थ अनाहत चक्र में स्थित है। इसकी अवस्थिति हृदय प्रदेश में की गई है। यह महः लोक का प्रतिनिधित्त्व करता है। वायु का रंग हरा है, इसकी आकृति षट्कोण और गोल दोनों मानी गई है। इसका गुण स्पर्श है। इसकी ज्ञानेन्द्रिय त्वचा है। कर्मेन्द्रिय हाथ है। दमा, वायु आदि रोग इसी तत्त्व की विकृति से होते हैं।

वज्रासन में बैठकर 'यं' बीजाक्षर वाले गोलाकार हरि प्रभा वाले, वायु तत्त्व का उक्त गोलाकार में ध्यान करें। इससे शरीर में लघुता, हल्कापन प्रकट होता है।

**आकाश तत्त्व**

शरीर में इस तत्त्व का स्थान विशुद्धि चक्र है। इसका स्थान कंठ है। आकाश का रंग नीला कहा गया है। इसकी आकृति अण्डे जैसी है। इसे निराकार भी कहते हैं। आकाश का कोई आकार नहीं है। इसका गुण शब्द है, इसकी ज्ञानेन्द्रिय कान हैं, कर्मेन्द्रिय वाणी है।

इसकी ध्यान विधि वज्रासन में बैठकर 'हं' बीज का जप करते हैं। निराकार विचित्र रंग वाले आकाश का ध्यान करें।

*हं बीजं गगनं, ध्यायेन्निराकारं बहुप्रभम् ।*
*ज्ञानं त्रिकाल विषयमैश्वर्य मणिकादिकम्।।*

छः माय जप से ये तत्त्व सिद्ध होते हैं।

**श्वास में चल रहे तत्त्व को पहचानें**

तत्त्वों की पहचान के लिए अभ्यास करना होता है। बिना अभ्यास के कोई विद्या सिद्ध नहीं होती इसलिए पुरुषार्थ के द्वारा विद्या को सिद्ध करें। श्वास हमेशा नाक से बहता है। इस श्वास का नासा में बहते हुए प्रवाह किस ओर है। पानी की धार जैसे पृथ्वी अथवा नदी में बहती है वैसे ही आकाश में हवा बहती रहती है। आकाश तो विशाल है आप कैसे उसे मापेंगे लेकिन आपका नासाछिद्र छोटा-सा है किन्तु इस छोटे नासाछिद्र में श्वास बह रहा है। वह कभी दाएँ से कभी बाएँ से तो कभी दोनों से उसका विवरण पीछे आ गया है। बायाँ स्वर चन्द्र है, दायाँ स्वर सूर्य है। दोनों साथ चलते हैं तब सुषुम्ना है। श्वास की गति का जब नासा में उदय होता है अर्थात् बाएँ नासा से हवा का प्रवाह चालू हो गया है। मध्य में हवा का प्रवाह तो समझना चाहिए जल तत्त्व का प्रवाह है। यदि नीचे की ओर बह रहा है तो समझना चाहिए पृथ्वी तत्त्व है। यदि ऊपर की ओर चल रहा है तो समझना चाहिए अग्नि तत्त्व है। यदि तिरछा चल रहा है तो समझना चाहिए वायु तत्त्व का प्रवाह गतिमान है। यदि वह भंवर की तरह चल रहा है तो आकाश तत्त्व है। प्रत्येक तत्त्व के अपने रंग है, आकृतियाँ हैं। पाँच रंग की कांच की गोलियाँ लीजिये। अपने हाथों में मुट्ठी में बन्द रखें। आँख बन्द कर दर्शन केन्द्र पर ध्यान केन्द्रित कर मन ही मन सोचें जिस तत्त्व का प्रवाह भीतर चल रहा है, मेरा अचेतन जागृत है, वह मुझे सहयोग करेगा। जो तत्त्व चल रहा है, उसका जो रंग है, वह गोली मेरे हाथ में आ जाए। आप हैरान होंगे जो तत्त्व चल रहा है उस रंग की गोली आपकी हथेली में है। यह चमत्कार नहीं हमारे अचेतन मन की क्षमता है।

शरीर में विद्यमान विभिन्न चक्रों के तत्त्व स्थित है। उन स्थानों पर ध्यान करने जिसमें विशेष सक्रियता हो वह तत्त्व अभी चल रहा है। रंग के लिए भी कहा गया है

*आपः श्वेताः क्षितिःयीता, रक्त वर्णो हुतासनः।*
*मारूता नील जीमूत आकाशो भूरि वर्णकः।।*

दोनों हाथों के अंगूठों को कान में डालें, अनामिका और मध्यमा सेआँखों को बंद करें। अनामिका से नाक बंद करें। छोटी अंगुली से मुंह बंद करें। जो रंग दिखाई दे उस तत्त्व का प्रवाह प्रवाहित है। स्वाद से भी तत्त्व और रंग की पहचान होती है। यदि मुंह का मीठा स्वाद है तो पृथ्वी तत्त्व। कसैला जान पड़े तो जल तत्त्व। यदि कड़वा स्वाद जान पड़े तो अग्नि तत्त्व यदि खट्टा स्वाद जान पड़े तो आकाश तत्त्व की उपस्थिति समझना चाहिए।

तत्त्व सिद्धि के लिए निरन्तर कम से कम छः महिने और अधिक से अधिक तीन वर्ष लग सकते हैं। यह तो व्यक्ति की अपनी लगन, अभ्यास और जागरूकता पर निर्भर करता है। कौन साधक जागरूकता से श्वास की प्रेक्षा कर रहा है। साथ ही उसे अपने दृढ़ संकल्प और प्रत्येक श्वास की साधना का अभ्यास करना होता है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि साधना करने वाला एक दिन अवश्य सफल होता है। यदि वो असफल भी हो जाए जो असफलता ही सफलता का द्वार है। अभ्यास और केवल अभ्यास से ही सिद्धि प्राप्त होती है।

# राष्ट्रीय शर्म दिवस

**जसविंदर शर्मा**

नेताजी आज फिर अपने भव्य राजप्रासाद में बीसियों चमचों से घिरे सिर झुकाए बैठे थे। वे आज फिर दुखी थे, बेजार थे और पश्चाताप की आग में बुरी तरह जल रहे थे। शर्म उनके अंग-अंग से टपक रही थी। सुप्रीम कोर्ट ने राजस्थान में गुर्जरों द्वारा की गयी व्यापक हिंसा, आगजनी और उग्र प्रदर्शन पर गहरी चिंता व्यक्त की तो हमारे नेताजी का सिर सच में शर्म से झुक गया।

बड़ी देर तक वह इसी शर्मनाक, गमनाक लेकिन खतरनाक मुद्रा में गुमसुम और अफसोसजदा बैठे धरती को डबडबायीआँखों से देखते रहे। आसपास खड़े लोगों का चेहरा उतर गया था। नेताजी के बिना कई काम अटके हुए थे। कई हड़तालों, बन्द और धरनों के ऑर्डर बुक थे। उनके आसपास के लोगों को डर था कि नेताजी को अगर ऐसा शमशान वैराग्य हो गया तो फिर सारा धंधा ही चौपट हो जाएगा।

विपक्ष वाले तो पहले ही तने बैठे हैं कि कब नेताजी का मनोबल गिरे और वे उबरकर सामने आएं। चुनाव सिर पर हैं और अब जात-पात का कार्ड बड़ी सफलता से चलेगा और इधर नेताजी ने यह शर्मनाक बखेड़ा खड़ा कर दिया। सुबह से हजार बार कह चुके हैं कि हमें शर्म आनी चाहिए। हम सबको डूब मरना चाहिए। अरे मियां! बहुत हो गया यह शर्म-वर्म का ढकोसला। अब लौट चलो, देखो कितना काम पड़ा है।

हम मानते हैं कि हमें शर्म आनी चाहिए और हम शर्मसार भी हो लिए मगर इस शर्मनाक मामले में सभी राजनैतिक व धार्मिक दल वालों को बराबर की शर्म आनी चाहिए न। हम अकेले ही क्यूं ये मगरमच्छी टेंसुए बहाएं। सबने अपने स्वार्थ के लिए आरक्षण के अजगर को दूध पिलाया था और जब वह काटने दौड़ा तो सब पीछे हट गए और दुख आम जनता को उठाने पड़े। ये भला क्या बात हुई कि हम तो सुबह से ही शर्मसार बैठे हैं और सत्तादल वाले जरा भी शर्मिन्दा नहीं हैं। वे कहते हैं कि सी.बी.आई. से मामले की जांच होनी चाहिए और अगर रिपोर्ट में उनका कोई कसूर निकलेगा तो वे भी एक दिन शर्मिन्दा हो लेंगे।

अपने नेताजी तो सच में 'सेंटिमेंटल फूल' निकले। सुबह से एक ही रट लगा रहे हैं कि यह कितने बड़े राष्ट्रीय शर्म का मामला है। नेताओं को तो शर्म से ही डूबकर मर जाना चाहिए और पुलिस को तो मरने के लिए चुल्लू भर पानी भी उपलब्ध नहीं करवाया जाना चाहिए। बेचारे गरीब लोग मरते रहे, सड़कें जाम होती रही, सरकारी सम्पत्ति फुंकती रही और ये नामर्द पुलिस के कार्टन खड़े-खड़े सारा तमाशा देखते रहे।

मीडिया के खड़पेंच मुगल दंगों की मूवी बना-बनाकर टी.वी. पर दिखाते रहे और अरबों-खरबों के विज्ञापन बटोरते रहे और ये हराम के पिस्सू मूक दर्शक बने रहे। इन मूर्ख पुलिसवालों को इतनी अक्ल नहीं आई कि कुछ और नहीं हो सकता था तो मीडियावालों के कैमरे ही छीन लेते। उन्हें पीटकर कौन-सा बवाल मचना था। अब आ गई न दिक्कत। सुप्रीम कोर्ट ने इन दंगों की फुटेज भेजकर कहा है कि दंगे करने वालों की पहचान करो और उनके खिलाफ कार्यवाही करो। राष्ट्रीय सम्पत्ति की भरपाई करवाई जाए।

तभी तो अपने नेताजी डिपरेशन में चले गए। सुबह से ही समाधि पर बैठे हैं। नेताजी का मानना है कि अब तो उन्हें पैंतरा बदलना होगा। दंगे तो चलो हमने करवाए, अब जब बात सुप्रीम कोर्ट तक पहुँच गई है और अदालत ने शेम-शेम कह दी है तो अब लोगों से राष्ट्रीय शर्म महसूस करने-करवाने का हमारा फर्ज बनता है। यह भी एक नया मुद्दा है कि हमें शर्म आनी चाहिए। अहा! क्या नयी संकल्पना है। कल्पना करिए कि जब हर साल इस दिन हर भारतवासी खुद को अफसोसजदा और शर्मसार महसूस करेगा तो दंगों में मरने वालों की आत्मा को कितनी शांति मिलेगी। बाबरी मस्जिद गिरने-गिराने से बड़ी बात थी कि हर 6 दिसम्बर के आसपास हम सब शर्म के समुद्र में डूब जाते हैं।

हमें दुख होता है कि हमने ऐसा क्यों किया। तरोताजा होकर हम फिर उसी जीवट के साथ ऐसे तोड़-फोड़ के कामों में लग जाते हैं। हम जानते हैं कि बहुत बड़ा अपराध हो जाने पर हम शर्मसार हो लेंगे और जनता हमें माफ कर देगी क्योंकि जनता के पास हमारे खिलाफ सोचने या बोलने का समय व मंच ही नहीं है। प्रेस हमारे साथ है, पूँजीपति हमारे साथ हैं, बजट हमारे हाथ में है और गरीब वोटर हमारे कब्जे में हैं। मरने वाले शहीदों के परिवारों के लिए दस लाख रुपए की रकम कम नहीं होती। फिर यह सब हम जनता के फायदे के लिए ही तो करते हैं। बंद, हड़ताल, आगजनी और चक्का जाम से लोगों में जागृति आती है और वे अपने अधिकारों की मांग करने लगते हैं।

बहुत देर तक ऐसे ही निठल्ले चिंतन के बाद नेताजी ने अपना सिर ऊपर उठाया। अब उनकीआँखों में एक नए किस्म की चमक थी। उन्हें एक नया आत्मबोध हुआ था। आसपास खड़े चमचों की बांछें खिल गई। नेताजी नए आत्मविश्वास से गदगद होकर बोले, 'आज का यह ऐतिहासिक दिन हर साल राष्ट्रीय शर्म दिवस के रूप में मनाया जाना चाहिए।

***5/2डी, रेल विहार, मंसादेवी,***
***पंचकुला – 134109 (हरियाणा)***

# नैतिक मूल्यों का ह्रास

**कुसुम जैन**

जीवन की मूलभूत अपेक्षाओं में शिक्षा का स्थान महत्त्वपूर्ण है। भोजन, मकान और चिकित्सा का सम्बन्ध शरीर से अधिक है तथा शिक्षा का सम्बन्ध जीवन से अधिक है। शिक्षा शास्त्री शैक्षणिक स्तर को उन्नत करने के लिए प्रयत्नशील है। शिक्षा संस्थानों की संख्या में वृद्धि हो रही है। छोटे-छोटे गांवों में पाठशालाओं की स्थापना हो रही है किन्तु शिक्षा का स्तर नीचा होता जा रहा है। शिक्षा का उद्देश्य मात्र डिग्री पाना और उससे अधिक नौकरी पाने की व्यवस्था जुटाना मात्र बनता जा रहा है। शिक्षा जीवन के लिए कृत्रिम प्रतिष्ठा का अर्जन करने के लिए आवश्यक बनती जा रही है।

व्यक्ति के साथ अभेद रूप से जुड़ा हुआ तत्त्व है उसका व्यक्तित्त्व। आज व्यक्तित्त्व को विकसित करने, उसे निखारने के लिए अनेक प्रयोगशालाएँ खुली हैं। माता-पिता बच्चे के उज्जवल व्यक्तित्त्व का सपना उसके बचपन से ही देखने लगते हैं, किन्तु बहुत कम यह जानते हैं कि शारीरिक और बौद्धिक बहिरंग व्यक्तित्त्व के साथ-साथ मानसिक और भावात्मक अंतरंग व्यक्तित्त्व का विकास भी आवश्यक होता है।

जीवन रूपांतरण के लिए चार बातें स्मरणीय हैं 1. दृष्टि, 2. दिशा, 3. आस्था और 4. गति। दृष्टि के बिना दिशा का चयन नहीं हो सकता। दिशा का निर्धारण हो जाने पर भी आस्था के अभाव में गतिशीलता नहीं होगी। गति के बिना लक्ष्य की प्राप्ति असंभव है। इन चारों के समन्वय का अर्थ ही रूपांतरण का प्रारम्भ है।

पर निर्माण की चिंता है किसे? अपने-अपने स्वार्थ और अपने-अपने मनोरंजन। समाज में नैतिक मूल्यों की स्थिरता के लिए आध्यात्मिक प्रयोगों की जरूरत है। अर्थहीन परम्पराओं का बोझ ढोते-ढोते जर्जर हो रहे समाज को रुढ़ियों से मुक्त करके शक्ति सम्पन्न और जागरूक समाज बनाया जा सकता है।

अध्यात्म पर भौतिकवाद हावी है। अध्यात्म और भौतिकता के बीच का संतुलन-सेतु यदि टूट जायेगा तो यह स्थिति अत्यन्त भयावह होगी। आज संसार में जितना दुःख और अशांति है उसका मूलभूत कारण जीवन के प्रति भौतिकता प्रधान दृष्टिकोण है। सुख और शांति का एक मात्र रास्ता अध्ययन है। 'अध्यात्म' जीवन के यथार्थ दर्शन को प्रस्तुति देता है और वहाँ उपस्थित होने वाले अवरोधों को समाप्त कर चिंतन को प्रशस्त बना देता है।

आज एक उल्टा प्रवाह चल रहा है। पश्चिम के लोग सदा से भारत के प्रति आशावान रहे हैं। वे यहाँ से अध्यात्म की प्रेरणा पाते रहे हैं। मानसिक संत्रास और घुटन की स्थिति में उनको भारत की धरती पर सुख और शांति के आसार दिखाई देते हैं किन्तु भारतीय पश्चिम की ओर आकृष्ट हैं। पश्चिम के लोग जिस स्थिति से अधा रहे हैं भारतीय उस ओर खिंचे जा रहे हैं। यह स्थिति अच्छी नहीं है। भारत की आध्यात्मिक परम्परा और उन्नत संस्कृति से बहुत कुछ सीखा जा सकता है। मेरा विश्वास है कि आज भी भारत में ऐसे व्यक्ति हैं जो अध्यात्म की ऊँचाई तक पहुँचे हुए हैं। वे विश्व को शांति का संदेश दे सकते हैं।

आज बड़े कहलाने वाले राष्ट्र जिस ढंग से भयंकर शस्त्रास्त्रों के निर्माण की होड़ में लगे हैं, आणविक अस्त्रों का अंबार लग गया है।

सारा संसार इस स्थिति से आतंकित और आशंकित है। पता नहीं, कब किस राष्ट्राध्यक्ष के दिमाग में पागलपन का भूत सवार हो जाए। पता नहीं कब उसका संतुलन गड़बड़ा जाए और वह अपने शस्त्रागार में स्विच ऑन कर दे। क्या उन भयावह क्षणों की कल्पना की जा सकती है? आज हिंसा और युद्ध के विरुद्ध जनमत जागृत करना अहिंसकों का कर्त्तव्य है। पश्चिम के लोग हिंसा से ऊब गये हैं। वहाँ लाखों व्यक्ति ऐसे प्रदर्शनों में सम्मिलित हो रहे हैं और जनभावना को सुदृढ़ बना रहे हैं।

जैन दर्शन विज्ञान सम्मत संपूर्ण दर्शन है। इसमें विश्व धर्म बनने की क्षमता है। इसकी व्यापकता की कमी का कारण जैन दर्शन की नहीं, जैनों की दुर्बलता है। जैन दर्शन हमारे देश की एक ऐसी कौम के हाथ में आ गया जो अर्थ प्रधान है। जिस धर्म-दर्शन को मानने वाले अर्थ-केन्द्रित होकर रहेंगे, वे अपने धर्म का प्रचार-प्रसार कैसे कर सकेंगे?

जैनों में वैज्ञानिक बहुत कम हुए इसलिए वैज्ञानिकों के सामने जैन-दर्शन की यथार्थ प्रस्तुति नहीं हो सकी। कोई तत्त्व ही सामने नहीं आयेगा तो उसका नया अनुसंधान नहीं होगा। इसके अभाव में वह एक दायरे में सीमित हो जाएगा। वैसे जैन ग्रंथों में वैज्ञानिक तत्त्वों की जितनी सूक्ष्म विवेचना है वैसी अन्यत्र उपलब्ध नहीं। जैन प्रबुद्ध संतों/मुनियों को और विचारना चाहिए। वर्तमान में हो रहे नैतिक मूल्यों के ह्रास को रोकने के लिए ठोस उपाय होने चाहिए, तभी इस समस्या का समाधान किया जा सकता है।

***संपादिका : 'णाणसायर' (शोध पत्रिका)***
***बी–5/263, यमुना विहार, दिल्ली–53***

# आंगन से कचहरी

**तारा सुराना**

आधुनिक युग में एक की आमदनी से घर चलना मुमकिन नहीं है, ऐसे में पति-पत्नी दोनों द्वारा कमाना कोई बुराई नहीं है। लेकिन इससे पारिवारिक सुख-शांति न छिने, इसके लिए कुछ बातों का ध्यान रखना जरूरी है।

सोमित्र और राहुल के बीच 'हाऊस टैक्स सिस्टम' को लेकर बहस छिड़ी हुई थी। चाय-नाश्ते के साथ सोमित्र की पत्नी कमरे में पहुँची तो भाभी जी की ओर मुखातिब होकर टैक्स के बारे में कुछ कहने ही वाले थे कि सोमित्र ने बीबी का मजाक उड़ाया, ''छोड़ यार, किससे कह रहे हो? इनसे तो चौके-चूल्हे की बातें करो। साधारण जोड़ घटाना तो आता नहीं, हाऊस टैक्स का समीकरण क्या समझेंगी?

बेचारी सोमित्र की पत्नी कीआँखें नम हो आई। औरत और उसके कार्यों के प्रति पुरुष का यह दृष्टिकोण नया नहीं बरसों पुराना है। अरस्तु ने कहा है कि औरत केवल पदार्थ है, जबकि पुरुष गति है, पुराणों व शास्त्रों में वर्णित कथाओं से पता चलता है कि सामाजिक जीवन के आरम्भ से ही पुरुष अपनी जैविक विशिष्टता की वजह से स्वयं को सर्वोच्च सत्ता के रूप में रखता आया है। अपनी शक्ति का विकृत आनन्द लेते हुए पुरुष अपनी नजरों में महत्त्वपूर्ण बनने की कोशिश करता हुआ उन तमाम बंधनों और अंकुशों से स्वतंत्र रहा, जिन्हें खुद दूसरों पर थोपने में उसे कोई हिचकिचाहट महसूस नहीं होती थी। उसने स्त्री को अपनी संपत्ति के रूप में स्वीकार किया। सच पूछा जाए तो पुरुष नारी में व्यक्तित्त्व का विकास देखना ही नहीं चाहता था।

**चारदीवारी से निकला नया रूप :** यह सब देखकर औरत की स्थिति में सुधार की बात की गई लेकिन औरत को हमेशा ही दोयम दर्जा मिला। समाज में मिली इसी उपेक्षा का परिणाम है कि नारी ने अपने कामों को हीन समझ कर पुरुषों के कामों को महत्त्वपूर्ण माना और हीन भावना से ग्रस्त नारी के मन में पुरुष की तरह बनने, उसकी तरह काम करने और समाज में उस जैसा बनने का आकर्षण जागृत हुआ।

एक बार औरत चारदीवारी से बाहर निकली तो उसे मान-सम्मान मिला, सराहना मिली। इसी से प्रेरित होकर उसमें पुरुष जैसी बनने की ललक पैदा हो गई। उसकी चाल-ढाल और वेषभूषा में बदलाव आया। सिर से पल्ला उतरा। साड़ियों का स्थान सलवार सूट और जींस ने ले लिया। कांच की चूड़ियों का स्थान प्लास्टिक की चूड़ियों ने ले लिया, सिंदूर के स्थान पर स्टीकर वाली बिंदी लगाने लगीं। सॉफ्टवेयर का जमाना है, कई देशों में जब दिन होता है, यहाँ रात होती है। कॉल सेंटर पूरी तरह खुले रहते हैं। पैसा कमाने की होड़ में पति-पत्नी का अधिकांश समय घर से बाहर ही बीतता है। न बोलचाल के लिए समय है और न खाना पकाने के लिए, फास्ट फूड से काम चलने लगा।

समझौता, समर्पण जैसी कोई बात जेहन में आती ही नहीं। दिल और जज्बात का तो नामोनिशान नहीं रह गया। बच्चों की परवरिश की बात कौन कहे? कई शादीशुदा औरतें बच्चे ही नहीं चाहती क्योंकि वह जहाँ रहती है वह जगह बच्चों के अनुकूल नहीं, स्कूल दूर है। आवाजाही की समस्या बड़ी है। प्रसूति अवकाश नहीं मिलेगा, शारीरिक आकृति खराब होगी। बच्चा कहाँ रहेगा? कौन पालेगा? ससुराल वालों से बना के नहीं रखती क्योंकि धैर्य और सहिष्णुता की कमी है। शिशुगृह में बच्चा रखने की समस्याएँ हैं। इसीलिए बीज अपने बीजत्त्व को प्राप्त करने से पहले ही समूल उखाड़ कर फैंक दिया जाता है।

यह सच है कि महंगाई बढ़ी है। इसी के साथ इच्छाएँ भी बढ़ी है। वे दिन गए जब घर की औरत से कहा जाता था कि तुम अंदर रहो, हम मर्दों के रहते तुम बाहर क्यों जाओगी? प्रतिस्पर्धा के आधुनिक युग में मात्र एक आमदनी से जरूरतें पूरी करना मुश्किल ही नहीं नामुमकिन सा भी हो गया है। ऐसे में पति-पत्नी दोनों ही कमाएँ तो कुछ भी बुरा नहीं है। नरनारी जब विवाहबंधन में बंधकर एक नीड़ का निर्माण करते हैं तो परिवार के प्रति दोनों के ही कुछ दायित्त्व होते हैं, पर पारिवारिक सुख चैन और शांति की कीमत पर संपन्नता हासिल करना क्या सही है? आधुनिक परिवेश में टाँग से टाँग जोड़कर बेटियों को बैठने की सलाह देने वाली माएँ उन्हें जींस, मीडी, गहरे गले के टॉप पहनने के लिए प्रेरित करती है। गहरे गले के तंग कपड़े पहन कर बहू-बेटियाँ झुकती हैं तो कभी पीठ दीखती है तो कभी वक्षस्थल ये पहनावे मर्दों की कामोत्तेजना को बढ़ाते हैं। तभी तो अश्लीलता व यौन अपराध बढ़े हैं।

**कुछ सुझाव :** औरत जब बाहरी क्षेत्रों की बराबरी के लिए प्रयत्नशील हुई तो संतुलन ही बिगड़ गया। ऐसे माहौल में सभी दुःखी रहने लगे। गृहक्लेश उत्पन्न हुआ। आर्थिक सम्पन्नता तो आई मगर सुख चैन, शांति सभी को उड़ा ले गई। तलाक की संख्या बढ़ी। परिवार टूटे। ऐसा समाज निर्मित हुआ जहाँ रहना तो दूर सांस लेना भी मुश्किल हो गया।

मशहूर कवि टेनिसन ने कहा था कि नई व्यवस्था को स्थान देने के लिए पुरानी व्यवस्था बदलनी पड़ती है। यही बात भारतीय संस्कृति के साथ भी है। परिवार एक तानाशाही की पाठशाला है। जिसमें तानाशाही के गुणों के साथ-साथ इसके अवगुणों को भी खुराक मिलती है। होना यह चाहिए कि परिवार उत्पीड़न, उन्मुक्तता, उच्छृंखलता जैसे विचारों को त्याग कर परस्पर सहानुभूति और प्रेम-पूर्वक एक साथ जीना सिखाने वाली पाठशाला हो। जहाँ एक के शासन दूसरे के अनुशासन वाली स्थिति न हो। नए परिवर्तन को एक सकारात्मक दिशा प्रदान करने की जरूरत है, तभी सुंदर और स्वस्थ समाज का निर्माण होगा वरना हमारी संस्कृति आंगन से कचहरी की ओर प्रस्थान करेंगी।

***कल्पना इंडस्ट्रीज लिमिटेड,***
***2–बी, प्रिटोरिया स्ट्रीट, ग्राउंड फ्लोर,***
***कोलकाता – 700071***

**क्षेत्रवाद से भारत का एकात्म स्वरूप आहत होता है। हर परिवार, समाज, हर प्रांत, राष्ट्र ओर हर धर्म, जाति सब मानवधर्म की इकाई हैं। क्षेत्रवाद से राष्ट्र की अस्मिता को खतरा है। उसे दूर करना ही होगा। क्षेत्रवाद की राजनीति से स्वार्थसिद्धि करने वाले राष्ट्र के शत्रु हैं। यह फोड़ा नया नहीं, पुराना है, चाहे जब रिसने लगता है। इस मवाद को खत्म करना होगा। हमें इंसानियत, राष्ट्रीयता, समष्टि एवं समग्रता की बात सोचनी होगी। क्षेत्रवाद राजनैतिक स्वार्थ का उत्पाद है। यदि पृथकतावादी दृष्टिकोण बढ़ता रहेगा तो हम युगांतकारी महान् आविष्कारों, असीम सुख-सुविधाओं के बीच भी असभ्य, जंगली एवं पशुवत् बनते चले जायेंगे। यह घातक है, इसे रोकना होगा।**

# भारतीय संस्कृति

**रूप नारायण काबरा**

'आनन्द भाव को हमने सिद्ध कर रखा है' को यदि यूं कहा जाए कि '.. ....सिद्ध कर रखा था' तब तो यह एक सत्य है पर आज भी यदि हम ऐसा कहते हैं तो यह एक छलावा है, प्रवंचना है। अब कहाँ रह गया है वह आनन्द भाव! कहाँ है वह वेद-सम्मत निश्छल प्रेम एवं सहज सरल सार्थक मानव जीवन प्रणाली! अब तो आनन्द भाव ही बदल गए हैं और बदलते जा रहे हैं। हमारी संस्कृति भोगवादी एवं भौतिकवादी बनती जा रही है और अब हमारी युवा पीढ़ी का आनन्द-भाव तो हिंसा, सेक्स एवं मनोरंजन के इर्द-गिर्द केन्द्रित हो गया है। प्रौढ़ों का आनन्द केन्द्रित है संग्रह में। यदि हमने आनन्द भाव को स्थिर कर रखा हो तो क्यों होते रहते हैं यह मजहबी झगड़े और भाषाई विवाद? यदि हमारी संस्कृति अक्षुण्ण एवं प्रदूषण रहित है तो फिर यह फिरकापरस्ती, तंगख्याली, संकीर्णता, मिलावट, रिश्वतखोरी एवं बढ़ते अपराध क्यों हैं?

हम अपनी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के आधार पर हम कहते हैं कि स्त्री परिवार की धुरी के रूप में स्थिर है। आज के पुरुष-प्रधान वातावरण में समानाधिकार के इस युग में भी स्त्री मात्र भोग्या है, गृहस्थी को संभालने का एक साधन मात्र है। यह धुरी तो अब घर-परिवार से बाहर निकल कर दफ्तरों में पहुँच गई है। नारी के सम्मान की बात तो दूर अब तो उन पर अधिक अत्याचार होने लगे हैं, उनका अधिक शोषण होने लगा है। क्या यही आनन्द भाव का प्रक्षेपण है?

आज शहर ही नहीं गांव का माहौल भी पवित्र, सरल, सहज एवं निश्छल नहीं है। हमारे मेले त्यौहार मनाए जाते हैं पर यह बस एक परम्परा-निर्वाह है अन्यथा मनोभाव तो बदल चुके हैं। आज के युग की प्रतिद्वन्द्विता, दूरदर्शन एवं वीडियो, फिल्मों एवं अवांछनीय साहित्य द्वारा जो सांस्कृतिक आक्रमण हो रहा है उसके नीचे हमारी वैदिक सनातन संस्कृति सिसक रही है। राष्ट्रीय पहचान तक पर प्रश्नचिह्न लग चुका है। चुनावों ने हमारे मन-मानस को कम प्रदूषित नहीं किया है क्योंकि हमारे यहाँ चुनावों का आधार योग्यता न होकर कुछ और तत्त्व है। आज गांव-गांव में विरोधी दल हैं। पंच अब परमेश्वर नहीं रह गया है। शिक्षित बेरोजगारी बढ़ती जा रही है। महंगाई ने कमर तोड़ रखी है फिर आनन्द भाव है कहाँ जिसे हमने सिद्ध कर रखा है?

कुछ परम्पराओं को चलते रहने देना ही संस्कृति का भाव नहीं होता है। पेड़ की पूजा करना वह भी वर्ष में किसी पर्व पर या गाय को किसी प्रयोजन विशेष से पूज लेना पर्यावरणीय संचेतना नहीं है यह तो मात्र लीक पीटना है। हमारे राष्ट्रीय जीवन की मुख्यधारा ने मार्ग बदल लिया है और तीव्र गति से आनन्द भाव के धाम से तनाव, असंतोष, असहिष्णुता एवं तृष्णा के रास्ते पर चल पड़ी है। कहाँ है वह पिता-पुत्र भाव, गुरु-शिष्य भाव, मालिक-अनुचर भाव और समाज सेवा भाव, देव-भाव? सब ओर स्वार्थपूर्ति का घोर आलम है। परिवार संस्था चरमरा चुकी है पवित्र आनन्द भाव तो तिरोहित होता जा रहा है और विषय वासना, व्यसन एवं सस्ते मनोरंजन का आनन्द हावी होता जा रहा है। यह एक सत्य है इसे स्वीकारना ही होगा। कहीं-कहीं नखलिस्तान के रूप में कभी कुछ 'अच्छा और आनन्दप्रद' दिख जाता है वह न सर्वकालिक है न सर्वसुलभ। फिर कहाँ स्थिर आनन्द भाव दिखाई दे रहा है? 'जय गंगे' कहते-कहते तो हमने गंगा मैया को मैला कर डाला है। संस्कृति की धारा भी इसी भांति मैली होती जा रही है और आनन्द भाव तो न मन में है, न घर में और न बाहर। स्थिर आनन्द भाव के प्रति यह मेरा नैराश्य भाव नहीं है, यह तो यथार्थ है।

*ए–438, किशोर कुटीर, वैशाली नगर, जयपुर – 302021 (राज.)*

# कमर तोड़ महंगाई

कमर तोड़ महंगाई ने जीना किया हराम!
इस अपंग सरकार से हुआ न बंदोबस्त।
महंगाई की मार से आम आदमी त्रस्त।।
समझो! रस्सी गाय की किसने रखी थाम।
चारा महंगा हो गया बढ़े दूध के दाम।।
महंगाई के दौर में पड़े दोहरी मार।
घर में डर मेहमान का बाहर चोर-चकार।।
आग सब्जियों में लगी, बढ़े दाल के दाम।
कमर तोड़ महंगाई ने जीना किया हराम।।
दूध की पैदावार में हुआ इज़ाफ़ा और।
माना पर सरकार ने, कभी किया न गौर।।
उल्टा-पुल्टा हो गया, बापू तेरा पाठ।
गांव गुलामी कर रहा शहर मारता ठाठ।।
बापू जी तस्वीर की ढीली हो गई कील।
जज को अंधा कर रहा, धोखेबाज़ वकील।।
हद है यहाँ गरीब को पानी नहीं नसीब।
वो नेता सच बोलता ऊपर उठा गरीब।।
आग झोपड़ों में लगी साफ़ हुआ फुटपाथ।
नेता बांटे मुआवजा घर-घर हाथों-हाथ।।
घर गरीब गुरबत बुरी कहीं न सुख-संतोष।
बहू बिके बेटी बिके बिके कुंवारी कोख।।

■ **भगवानदास ऐजाज़**
***टी–451, बलजीत नगर, नई दिल्ली–110008***

# जीवन क्रान्ति

जीवन एक वरदान है बोझ नहीं।
यह मिलता रोज रोज नहीं।
जीवन में इन्कलाब पैदा कर।
कुछ करने के ख्वाब पैदा कर।
फूल बनकर महक जाना।
जगत में कुछ नया कर दिखाना।
तुम ही हो राम, तुम ही हो कृष्ण।
बुद्ध, महावीर, महाप्रज्ञ छिपा है तुम्हारे अन्दर।
थोड़ा-सा साहस जुटाओ, आगे कदम बढ़ाओ।
मंजिल जिस दिन पाओगे, आनन्द विभोर हो जाओगे।
सोचोगे जो तुमने खोया है उसका कुछ भी नहीं था मूल्य।
और जो तुमको मिलेगा वो होगा बहुमूल्य।
तोड़ दो जन्मों-जन्मों की भ्रान्ति।
और पैदा करो जीवन में क्रान्ति।
पैदा करो जीवन में क्रान्ति।

■ **धर्मचंद चपलोत**
***अणुव्रत समिति मरोली (गुजरात)***

# आदमी

(1)
जाने कैसा शहर हो गया।
आदमी दर-बदर हो गया।
आदमी को सुनो - आजकल,
आदमी का ही डर हो गया।
चांद सूरज कहाँ छिप गए,
बस अंधेरों का घर हो गया।
हर तरफ है धुआं ही धुआं।
उसमें गुम ये शहर हो गया।
जाने किसने छुआ है इन्हें,
हर पियाला जहर हो गया।
कच्ची दीवारें छत भी नहीं,
सिर्फ कहने को घर हो गया।
जब भी पत्थर कहीं से गिरा,
बीच में मेरा सर हो गया।

(2)
बासी अखबार हुआ आदमी।
कितना बेकार हुआ आदमी।
टंग गया जाके दीवारों पर,
एक इश्तहार हुआ आदमी।
बस जुलूस में ही ढल गया,
लम्बी कतार हुआ आदमी।
खा गया सारे संबंध भी,
कैसा खूंखार हुआ आदमी।
झूठ-पाखंड, छल और कपट,
सजकर तैयार हुआ आदमी।

(3)
आदमीयत का बल्ब तो देखो,
बिल्कुल ही फ्यूज़ हो गया यारो।
मर के अखबार में छप जाता है,
आदमी-न्यूज हो गया यारो।।

■ **इकराम राजस्थानी**
***सुकून डी–36, संजय नगर हाऊसिंग बोर्ड,
शास्त्री नगर जयपुर – 302016 (राज.)***

# आशा की किरण

गांधी तेरा साया, इस
जमीं से उठ गया।
मुझे तो लगता है, कि
तेरे जाने के बाद यह जनमानस
भी तुझसे रूठ गया।।

तभी तो हो रही तोड़फोड़ व सांप्रदायिक दंगे
हर पचासवें व्यक्ति के हाथ दिखते हैं खून से रंगे।

आज कौन पसन्द कर रहा है देशी पहनावा,
आडम्बर और भ्रष्टाचार के बल पर होता छलावा।
ऊँच-नीच, जात-पांत की बरकरार रहती दीवारें
हम नहीं करेंगे भेदभाव जोरों से लगते हैं नारे।।

क्षेत्रीयता-भाषावाद व स्वार्थपन से, कौन है जो ऊपर उठ पाते हैं,
अवसर मिलते ही उल्लू सीधा करने में लग जाते हैं।।

आज राम का नाम लेना दूभर हो गया।
क्योंकि वह भी सांप्रदायिकवाद में बंध गया।
कैसे बने धार्मिक यह प्रश्न चिह्न लग गया।।

फिर भी उच्च आदर्शों को कौन ठुकरा पाया।
इन्सान है जो इन्सानियत को पहचान पाया।।

लेकिन मुझे लगता है गांधी,
तेरा होगा पुनः जग प्रवेश।
और इस दुनिया को मिलेगा,
निश्चित ही नया दिशा-निर्देश।

तभी 'प्रकाश' की रश्मियाँ अपने आलोक से जगमगायेगी।
पूरे राष्ट्र में सुख-समृद्धि व आनन्द की नयी बहारें लायेंगी।।

■ **प्रकाशचंद बोहरा**
***भगवानदास मार्केट, कांकरोली***

# कसम तुम्हें जवानी की

शहीदों का लहू कभी
बेमानी नहीं होता
वतन पर मिटने वालों का
कोई सानी नहीं होता।

हवाएँ सुनाती हैं
कहानी कुर्बानी की
दगा न देना देश को
कसम तुम्हें जवानी की।

चमन लबरेज है
कई तरह के गुलों से
सबक लें हम अपनी
पुरानी भूलों से।

फूट के बीजों के लिए
कहीं जमीं न हो
दिलों की मोहब्बत
कभी कम न हो।

यूं तो यारों हमने
देखे हैं कई मंजर
जो लूटने आए थे
हाथों में लेकर खंजर।

नामों निशां उन्हीं का
दुनिया से मिट गया है
आँखों के सामने यह
सरजमीं आज भी है।

■ **हुकमचंद सोगानी**
***श्रीपाल प्लाजा, द्वितीय माला,***
***फ्लैट नंबर, 201, महावीर मार्केट,***
***नई पेठ, उज्जैन – 456006 (म.प्र.)***

व्यक्तित्व

# आचार्य काका कालेलकर 125 वां जयंती वर्ष

**बीसवीं शताब्दी के दो महापुरुषों महात्मा गांधी और गुरुदेव टैगोर के निकट संपर्क में आये और उनसे प्रेरणा प्राप्त करने का अवसर काकासाहेब को प्राप्त हुआ था। स्वातंत्र्य सेनानी, लोकशिक्षक, पंडित, देश के सांस्कृतिक दूत, साहित्य सेवक आदि सभी दृष्टियों से काकासाहेब कालेलकर का व्यक्तित्व महान है। सरदार पटेल विश्वविद्यालय, आणंद, गुजरात विश्वविद्यालय और काशी विद्यापीठ ने उन्हें मानद् डी. लिट. से और साहित्य अकादमी नई दिल्ली ने 'फेलो' से अलंकृत किया।**

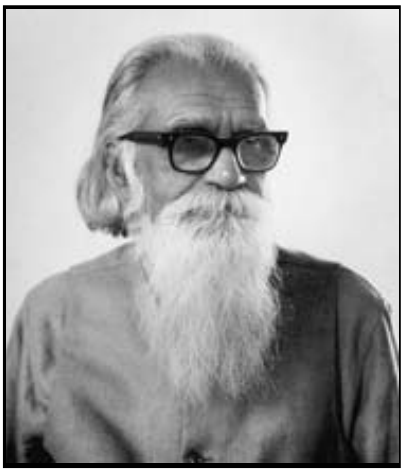

शिक्षाशास्त्री, भाषाशास्त्री, पत्रकार, साहित्यकार, चिंतक, दार्शनिक, सांसद, महात्मा गांधी तथा गुरुदेव रविन्द्रनाथ टैगोर के दर्शन के भाष्यकार और सर्वधर्म समभाव के प्रणेता आचार्य काका साहेब कालेलकर (दत्तात्रेय बालकृष्ण कालेलकर) का जन्म 1 दिसम्बर 1885 सातारा (महाराष्ट्र) में हुआ। उन्होंने राष्ट्रीय सार्वजनिक जीवन के विविध क्षेत्रों में सतत 75 वर्षों तक रचनात्मक योगदान किया। फर्ग्युसन कॉलेज से 1907 में उन्होंने बी.ए. की परीक्षा पास की। कुछ समय बेलगांव की एक राष्ट्रीय शिक्षा संस्था में काम किया। फिर पिताजी के आग्रह के कारण बम्बई जाकर कानून का अध्ययन करने लगे। उसी समय लोकमान्य तिलक की प्रेरणा से बम्बई से 'राष्ट्रमत' नामक दैनिक-पत्र का प्रकाशन राष्ट्रीय विचारों के प्रचार के लिए शुरू हुआ, जिसके संपादक-मंडल में काका साहेब सम्मिलित हुए। कुछ ही समय बाद सरकार के क्रोध के कारण वह पत्र बंद हो गया। इसी समय काका साहेब ने मराठी में स्वामी रामतीर्थ की जीवनी लिखी जो उनकी पहली पुस्तक है। तब से लेकर आज तक काका साहेब की लिखी मराठी में 29, गुजराती में 69, हिन्दी में 98 और अंग्रेजी में 12 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

माता और पिता के स्वर्गवास के बाद काका साहेब 1910 में बड़ौदा जाकर वहाँ एक राष्ट्रीय विद्यालय में आचार्य के रूप में काम करने लगे। विद्यालय के संस्थापक-संचालक केशवराव देशपांडे और श्री अरविंद के विचारों से प्रभावित थे। विदेशी सरकार के रोष के कारण तीन साल बाद विद्यालय बंद हो गया। 1912 में काकासाहेब उत्तर की यात्रा पर निकल पड़े और ढाई हजार मील की पदयात्रा की। उसके बाद नेपाल की यात्रा की और बंगाल में गुरुदेव टैगोर के शान्ति निकेतन के दर्शन किये। हरिद्वार के समीप एक ऋषिकुल के अधिष्ठाता के रूप में कुछ समय काम किया। गुरुकुल कांगड़ी, वैष्णवों का आचार्यकुल, महेन्द्रप्रताप का प्रेम महाविद्यालय, सिन्धु ब्रह्मचर्याश्रम आदि शिक्षा संस्थाओं का निरीक्षण किया। शान्तिनिकेतन में छः महीने बिताने के बाद काका साहेब ने ब्रह्मदेश की यात्रा की। शान्तिनिकेतन में फरवरी 1915 में उन्हें गांधीजी से पहली बार मिलने का मौका मिला और शान्तिनिकेतन में अध्यापक के नाते स्थायी रूप से रहने का उनका निश्चय बदल गया। 1917 में गांधीजी के आदेश के अनुसार वे अहमदाबाद के पास सत्याग्रह आश्रम में सम्मिलित हो गये। उसी साल गांधीजी की अध्यक्षता में गुजरात शिक्षा परिषद् का अधिवेशन हुआ जिसमें राष्ट्रभाषा हिन्दी पर काका साहेब ने एक लेख प्रस्तुत किया। गांधीजी के साथ काका साहेब ने सिंध की यात्रा की। 1918 में गांधीजी ने इंदौर में साहित्य सम्मेलन के अधिवेशन की अध्यक्षता की जिसमें काकासाहेब भी उपस्थित थे। 1920 से काकासाहेब ने गुजराती में लेख और ग्रंथ लिखना शुरू किया। गांधीजी के 'यंग इंडिया' तथा 'नवजीवन' पत्रों में काकासाहेब के लेख छपने लगे। असहयोग आंदोलन के फलस्वरूप 1920 में गुजरात विद्यापीठ की स्थापना हुई, जिसमें काकासाहेब आचार्य थे और 1928 में कुलनायक भी बने।

1922 में गांधीजी को सजा हो गयी, जिस कारण उनके नवजीवन पत्र को चलाने का उत्तरदायित्व काकासाहेब को निभाना पड़ा। एक ही साल बाद उन्हें जाब्ता फौजदारी की धारा 124(अ) के अंतर्गत एक साल की कड़ी कैद की सजा हो गयी। उन्होंने गांधीजी के साथ दक्षिण-भारत और श्रीलंका की यात्रा की। बारडोली के सत्याग्रह में गुजरात विद्यापीठ के कई छात्रों ने भाग लिया। काकासाहेब विद्यापीठ के कुलनायक थे। गुजराती भाषा में प्रचलित वर्तनी की अराजकता को हटाने के लिए काकासाहेब ने गुजराती का जोडणी कोश बनाया। 1930 में संपूर्ण स्वातंत्र्य का प्रस्ताव कांग्रेस द्वारा स्वीकृत किये जाने पर जलगांव में महाराष्ट्र राष्ट्रीय शिक्षा परिषद् के अध्यक्ष के नाते काकासाहेब ने आजादी के युद्ध में भाग

लेने के लिए युवकों का आह्वान किया। सत्याग्रह में सजा पाने के बाद यरवडा जेल में काकासाहेब को गांधीजी के साथ रहने का मौका मिला।

गांधीजी ने 1935 में इंदौर में हिन्दी साहित्य-सम्मेलन की दूसरी बार अध्यक्षता की। राष्ट्रभाषा के लिए राष्ट्रभाषा-प्रचार समिति नियुक्त की गयी, जिसकी जिम्मेदारी काकासाहेब को सौंपी गयी। गांधीजी ने 1942 में हिन्दुस्तानी प्रचर सभा की स्थापना की। उसी साल 'भारत छोड़ो' आंदोलन छिड़ गया जिसमें काकासाहेब को गिरफ्तार कर तीन साल तक जेल में रखा गया। 1945 में जेल से छूटकर आते ही काकासाहेब ने 'हिन्दुस्तानी प्रचार सभा' के प्रचार का अभियान जारी किया। नागरी लिपि के सुधार के लिए उन्होंने स्वराखडी का प्रयोग आदि कई सुझाव दिये, जिन्हें गांधीजी ने स्वीकार किया था।

1936 में गांधी सेवा संघ कायम हुआ, संघ की ओर से 'सर्वोदय' नामक मासिक पत्रिका 1938 से दस साल तक प्रकाशित होती रही, जिसके संपादक काकासाहेब और दादा धर्माधिकारी थे। 1939 से दो साल तक वर्धा राष्ट्रभाषा प्रचार-समिति द्वारा 'सबकी बोली' मासिक पत्रिका प्रकाशित की जाती रही, जिसके संपादक काकासाहेब और श्रीमन्नारायण थे। स्व. डॉ. राजेन्द्र बाबू राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के अध्यक्ष रहे, लेकिन उपाध्यक्ष के नाते काकासाहेब ही सारे कामों का संचालन करते थे। काकासाहेब ने सिंध, सौराष्ट्र, गुजरात, महाराष्ट्र, उत्कल, बंगाल, आसाम आदि अहिंदी-भाषी प्रांतों में महाराष्ट्र-प्रचार के लिए प्रांतीय समितियां संगठित करायीं। महाराष्ट्र में उन्हीं की प्रेरणा से महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा प्रचार समिति 25 मई 1939 को बनी। द्रविड़ भाषा-भाषी दक्षिण-भारत के प्रांतों में भी काकासाहेब ने दौरा करके 'दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार-सभा' की मदद की। 1955 में गांधी हिन्दुस्तानी साहित्य सभा की स्थापना हुई। काकासाहेब उसके संस्थापक अध्यक्ष बने।

गांधीजी के स्वर्गवास के बाद देशभर के रचनात्मक कार्यकर्ताओं ने वर्धा में एकत्रित होकर सर्वसेवा संघ की स्थापना की। उस संघ के पहले दो अधिवेशनों की अध्यक्षता काकासाहेब ने की। 1949 में गांधी स्मारक निधि की स्थापना हुई। जिसके अंतर्गत गांधी- स्मारक संग्रहालय कायम हुआ। काकासाहेब ने संग्रहालय के संचालन के कार्य को संभाला। 1948 में भारत सरकार ने हिन्दी टंकण और आशुलेखन समिति काकासाहेब की अध्यक्षता में नियुक्त की।

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा, वर्धा ने भारतीय गणराज्य की स्थापना के दिन 'मंगल प्रभात' नामक हिन्दी पत्रिका शुरू की। काकासाहेब प्रारंभ से उसके संपादक रहे। 1958 से चार साल तक सेवाग्राम के हिन्दुस्तानी तालीमी संघ के अध्यक्ष-पद का कार्यभार काकासाहेब ने संभाला। 1952 से बारह साल तक वे संसद की राज्यसभा के राष्ट्रपति की ओर से मनोनीत सदस्य रहे। 1953 में भारत सरकार ने उनकी अध्यक्षता में पिछड़ी जातियों के सुधार के लिए जांच आयोग नियुक्त किया। आयोग ने दो साल तक देशभर में भ्रमण किया और पिछड़े वर्गों की हालत के सुधार के लिए उपयुक्त सुझाव दिये।

काकासाहेब ने 1950 में पूर्व अफ्रीका का सफर किया। उपाध्यक्ष के रूप में उनके अनुरोध पर इंडियन कौन्सिल फॉर कल्चरल रिलेशन्स में अफ्रीका का विभाग खोला गया। 1958 में उन्होंने पश्चिम यूरोप और अफ्रीका के गोल्डकोस्ट, नाइजीरिया, मिस्र आदि देशों का दौरा किया। 1958 में वे जापान में विश्वशांति परिषद् में उपस्थित रहे। 1957 में जापान में अणुबम विरोधी शांति परिषद् में सम्मिलित हुए और चीन की भी यात्रा की। 1962 में तीसरी बार जापान गये। 1958 में उन्होंने दक्षिण अमेरिका में वेस्ट इंडीज, ब्रिटिश गियाना, ट्रिनिडाद की यात्रा की, संयुक्त राज्य अमेरिका के कुछ दर्शनीय स्थान देखे और अमेरिकी नीग्रो नेताओं से भेंट की तथा मिस्र, इटली, पश्चिमी जर्मनी, बेल्जियम, ब्रिटेन आदि देशों में भी गांधी विचार का प्रचार किया। 1959 में उन्होंने मारिशस, माडागास्कर, पूर्व अफ्रीका की यात्रा की। 1962 में रूस जाकर उन्होंने विश्वशान्ति परिषद् में भाग लिया। काकासाहेब ने देश-विदेश की अपनी यात्राओं के बड़े रोचक संस्मरण लिखे हैं, जो भारतीय साहित्य की श्रेष्ठ निधि समझे जाएंगे। भ्रमण, लेखन और भाषण काकासाहेब के स्थायी भाव बन गये थे। वे जो कुछ भी लिखते और बोलते हैं, वह उच्च कोटि के साहित्य में स्थान पा ही लेता है।

संपूर्ण गांधी-साहित्य के लिए नियुक्त परामर्शदात्री समिति के काकासाहेब एक सदस्य रहे। 1959 में काकासाहेब ने गुजराती साहित्य परिषद् के अधिवेशन की अध्यक्षता की। 1969 में 76वीं वर्षगांठ के अवसर पर अहमदाबाद में उन्हें गुजराती में कालेलकर-अध्ययन-ग्रंथ समर्पित कर सम्मानित किया गया। 1964 में भारत सरकार द्वारा उन्हें पद्मविभूषण की उपाधि से अलंकृत किया गया। कृतज्ञ राष्ट्र द्वारा 1965 में 81वीं वर्षगांठ पर 'संस्कृति के परिव्राजक' तथा 95वें जन्मदिन पर 'समन्वय के साधक' अभिनन्दन-ग्रंथ अर्पित किये गये।

काकासाहेब की लिखी पुस्तकों की सूची से स्पष्ट हो जाता है कि वे स्वतंत्र चिंतक, साहित्य के प्रणेता, गांधी विचार-धारा के व्याख्याता तथा भारतीय संस्कृति के परिव्राजक हैं। उनके कुछ हिन्दी ग्रंथ हैं राष्ट्रीय शिक्षा के आदर्शों का विकास, सहजीवनी की समस्या, सप्त-सरिता, कला : एक जीवन दर्शन, हिन्दुस्तानी की नीति, बापू की झांकियां, हिमालय की यात्रा, उस पार के पड़ोसी, उत्तर की दीवारें, स्मरण-यात्रा, जीवन-साहित्य, लोकजीवन, जीवन-संस्कृति की बुनियाद, नक्षत्रमाला, जीवनलीला, सूर्योदय का देश (जापान), गांधीजी की अध्यात्म-साधना, स्वराज संस्कृति के संतरी, भाषा, कठोर कृपा, गीतारत्नप्रभा, आश्रम-संहिता, नमक के

प्रभाव से, प्रजा का राज प्रजा की भाषा में, यात्रा का आनन्द, समन्वय, सत्याग्रह-विचार और युद्ध-नीति, परमसखा मृत्यु, उपनिषदों का बोध, युगमूर्ति रवीन्द्रनाथ, राष्ट्रभारती हिन्दी का मिशन आदि। काकासाहेब की लिखी मराठी पुस्तकों की सूची स्वामी रामतीर्थ, गीतेचें समाजरचना-शास्त्र, हिंडलग्याचा प्रसाद, जीवंत व्रतोत्सव, ब्रह्मदेशाचा प्रवास, भारतदर्शन, गोमांतक; रवीन्द्र प्रतिभेचे कोंवळे किरण, लोकजीवन, मृगजळांतील मोती, स्मरणयात्रा, बापूजींचीं ओझरतीं दर्शनें, साहित्याची कामगिरी, लोकमाता, हिंदूचें समाजकारण, लाटांचे तांडव, आमच्या देश वें दर्शन, सामाजिक प्रश्न, इत्यादि। गुजराती में प्रकाशित स्वदेशी धर्म, कालेलकरना लेखो, जीवननो आनंद, जीवन-विकास, जीवन-भारती, जीवन- संस्कृति, गीता-सार, जीवनलीला, धर्मोदय, जीवन-प्रदीप, मधुसंचय, जीवन-चिंतन, जीवन-व्यवस्था, भारतीय संस्कृतिनो उद्‌गाता, शुद्ध जीवनदृष्टिनी भाषानीति, आवती कालना प्रश्नो इत्यादि।

मराठी-भाषी होने पर भी काकासाहेब ने मराठी से अधिक गुजराती और राष्ट्रभाषा हिन्दी की सेवा की है। शिक्षा, साहित्य, संस्कृति, भाषा आदि के क्षेत्रों में उनका योगदान अनुपम है। वे सही मायने में विश्वकोश थे। राजनीति, समाजशास्त्र, विज्ञान, इतिहास, भूगोल, अर्थशास्त्र, अध्यात्म आदि कोई भी ऐसा विषय नहीं है जिस पर उन्होंने प्रामाणिक लेखन न किया हो। वे किसी बात का ज्ञान प्राप्त करने मात्र से संतुष्ट नहीं होते। उसके बारे में मौलिक दृष्टि से चिंतन करते हैं। उनकी स्मरण की क्षमता बड़ी अद्‌भुत है। स्थानों, व्यक्तियों, संस्थाओं के नाम उन्हें याद रहते हैं। काकासाहेब कलासक्त और सौंदर्यप्रेमी हैं। उनकी भव्य आकृति उनकी कलाशक्ति के दर्शन कराती हैं उनके हर काम में सहज सुधरी कला होती है। उनके द्वारा निर्मित साहित्य प्रेरक विचारों का एक विशाल भंडार है। विभिन्न क्षेत्रों में उन्होंने इतना कार्य किया है कि वे एक संस्था बन गये थे। उनके प्रेरक और कलापूर्ण साहित्य के चुने हुए अंशों का अनुवाद सभी भारतीय भाषाओं में होना चाहिए। बीसवीं शताब्दी के दो महापुरुषों महात्मा गांधी और गुरुदेव टैगोर के निकट संपर्क में आये और उनसे प्रेरणा प्राप्त करने का अवसर काकासाहेब को प्राप्त हुआ था। उनके कार्य और चिंतन पर गांधी और टैगोर की छाप स्पष्ट रूप से लक्षित होती है।

सन् 65 में ही भारतीय साहित्य अकादमी ने राष्ट्रपति के हाथों, काकासाहेब को उनके 'जीवन-व्यवस्था' शीर्षक गुजराती लेख-संकलन पर रुपये पाँच हजार का पुरस्कार देकर सम्मानित किया था। स्वातंत्र्य के सेनानी, लोकशिक्षक, पंडित, देश के सांस्कृतिक दूत, साहित्य सेवक आदि सभी दृष्टियों से उनका व्यक्तित्व महान है।

सरदार पटेल विश्वविद्यालय, आणंद, गुजरात विश्वविद्यालय और काशी विद्यापीठ ने उन्हें मानद् डी.लिट. से और साहित्य अकादमी नई दिल्ली ने 'फेलो' से अलंकृत किया।

***– गांधी हिन्दुस्तानी साहित्य सभा, नई दिल्ली***

# झाँकी है हिन्दुस्तान की

## संसद में नहीं लगा मन

जनता सांसदों को चुनकर संसद भेजती है ताकि वहां उनकी समस्याओं को उठाया जा सके। 15वीं लोकसभा में सांसदों की उपस्थिति का रजिस्टर देखें तो साफ है कि ज्यादातर जनप्रतिनिधियों को अपनी इस जिम्मेदारी का अहसास नहीं है। 48 फीसदी सांसदों ने एक भी बहस में हिस्सा नहीं लिया। 26 नवंबर को महंगाई पर चर्चा के दौरान भी महज 26 सदस्य ही लोकसभा में पहुंचे। यह खुलासा नीति अनुसंधान पर केन्द्र की संस्था पीआरएस नियामक अनुसंधान की रिपोर्ट में हुआ है।

## भत्ता लिया और गायब....

संसद की कार्रवाई में हिस्सा लेने के एवज में सांसदों को 1000 रुपए प्रतिदिन भत्ता मिलता है। जिस दिन यह भत्ता लेना होता है, उस दिन के पहले सत्र में अधिकतर सांसद मौजूद रहते हैं और दूसरे सत्र से फिर 'जनसेवा' में लग जाते हैं।

**उपस्थिति : 100 फीसदी**

- गुरुदास दासगुप्ता, सीपीआई
- रमेश कुमार, कांग्रेस
- एमबी राजेश, सीपीएम
- राजीव रंजन सिंह, जदयू

**उपस्थिति : 40 फीसदी से कम**

- विजय शान्ति, टीआरएस : 17 फीसदी
- नवजोतसिंह सिद्धू, भाजपा : 33 फीसदी
- सुवेन्दु अधिकारी, टीएमसी : 33 फीसदी
- जेके रितीश, डीएमके : 37 फीसदी

## सवाल

**सबसे अधिक**

- आनन्द राव, शिवसेना : 208
- हंसराज अहीर, भाजपा : 207
- प्रदीप मांझी, कांग्रेस : 200
- सुप्रिया सुले, राकांपा : 186

**एक भी नहीं**

- सोनिया गांधी, कांग्रेस
- राहुल गांधी, कांग्रेस
- एचडी कुमार स्वामी, जेडीएस
- मुलायम सिंह यादव, सपा

**'राजस्थान पत्रिका' से साभार**

**शासन भक्त स्व. हुकमचंद सेठिया, श्रीडूंगरगढ़**
की पुण्यस्मृति में सुपुत्र ताराचंद, दीपचंद, ठाकरमल सेठिया के सौजन्य से

# अणुव्रत लेखक पुरस्कार 2008

## डॉ. आनंद प्रकाश त्रिपाठी, लाडनूं

लोकमानस में नैतिक मूल्यों की पुनर्प्रतिष्ठा, चारित्रिक विकास, सौहार्द, सद्भाव तथा मैत्री की स्थापना के लिए, स्वस्थ एवं रचनात्मक लेखन के नैसर्गिक प्रतिभा के धनी, हिन्दी साहित्य के विद्वान् साहित्यकार-पत्रकार तथा अणुव्रत आंदोलन के जमीनी कार्यकर्ता डॉ. आनंदप्रकाश त्रिपाठी को वर्ष 2008 का लब्धप्रतिष्ठित अणुव्रत लेखक पुरस्कार समर्पित करते हुए अणुव्रत महासमिति गौरव का अनुभव करती है।

### विनम्र स्वभाव

डॉ. त्रिपाठी सुख-दुःख, जय-पराजय एवं विषम परिस्थितियों में भी सम रहते हैं। व्यवहार में इनकी सहजता, सरलता एवं विनम्रता इनके व्यक्तित्त्व को द्विगुणित करती हैं। इनका सादगीमय जीवन अणुव्रत के घोष **''संयम ही जीवन है''** को साकार कर रहा है।

### कुशल साहित्यकार

साहित्य जगत् के सशक्त युवा हस्ताक्षर डॉ. त्रिपाठी की लेखनी से निःसृत एवं प्रकाशित चालीस से अधिक ग्रंथ इनके लेखन कौशल के साक्षी हैं। कहानी, बालकथा, नाटक, निबंध, कविता, जीवनी एवं समसामयिक विषयों पर इनकी लेखनी निरंतर चल रही है। कादम्बिनी, नवनीत, मधुमती, राष्ट्रधर्म, प्रतियोगिता दर्पण, अणुव्रत, भास्कर, राजस्थान पत्रिका, जागरण, अमर उजाला, राष्ट्रीय सहारा, पंजाब केसरी इत्यादि पत्र-पत्रिकाओं में आपकी रचनाओं का नियमित प्रकाशन आपके लेखन कौशल को उजागर करता है। समसामयिक विषयों को उकेरना एवं अणुव्रत दर्शन के आधार पर उन्हें समाहित करना आपके लेखन का वैशिष्ट्य है। साहित्य जगत् के विविध पुरस्कार-सम्मान-अलंकरण आपको समय-समय पर समर्पित हुए जो आपके लेखन कौशल को महिमामंडित करते हैं।

### अणुव्रत सेवी

अणुव्रत समिति लाडनूं के माध्यम से आप सन् 1985 में अणुव्रत आंदोलन से जुड़े और समर्पित कार्यकर्ता के रूप में लाडनूं तहसील में अणुव्रतों के प्रचार-प्रसार में संलग्न हो गये। ''कर्म ही पूजा है और चरैवेति-चरैवेति'' को जीवन की थाती मानकर आगे बढ़ते रहना आपकी नियति है। लाडनूं तहसील में नशामुक्ति अभियान, चुनावशुद्धि अभियान और अणुव्रती बनो अभियान का सफल संचालन आपके हाथों हुआ है। एक प्रखर वक्ता के रूप में आपने जनमानस को प्रभावित किया है। अणुव्रत ग्रामों के निर्माण में प्रखर श्रम रहा तो अणुव्रत यात्राओं में भी आपकी सक्रिय भागीदारी रही है। अणुव्रत के प्रति अगाध निष्ठा और समर्पण भाव ने आपको अणुव्रती कार्यकर्ताओं की अग्रिम पंक्ति में प्रतिष्ठापित किया है। अणुव्रत आंदोलन को प्रदत्त सेवाओं के संदर्भ में अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य तुलसी ने आपको सन् 1995 में अणुव्रत सेवी अलंकरण से विभूषित किया। अणुव्रत महासमिति एवं अणुव्रत समिति के विभिन्न पदों पर रह आपने रचनात्मक कार्यों को गति दी है।

### कुशल समायोजक

विगत 25 वर्षों से आप लाडनूं में रहते हुए नई पीढ़ी को नैतिक एवं मानवीय मूल्यों से परिचित कराते हुए राष्ट्रभाषा हिन्दी एवं अणुव्रत आंदोलन की सेवा में सतत् समर्पित हैं। जैन विश्व भारती, मान्य विश्व विद्यालय के दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के समन्वयक के रूप में आपने अपनी प्रशासकीय क्षमता का परिचय दिया है।

कुशल लेखक, पत्रकार, प्राध्यापक, प्रशासक एवं कार्यकर्ता के रूप में डॉ. आनंद प्रकाश त्रिपाठी का परामर्श अणुव्रत परिवार को प्राप्त है। आप उत्तरोत्तर अपने व्यक्तित्त्व एवं कृतित्त्व के माध्यम से उदात्त मनस्विता, नैतिकता एवं अणुव्रत का स्वर संचालित करें यही अणुव्रत परिवार की शुभकामना है।

**31 दिसम्बर, 2009 : श्रीडूंगरगढ़** **अणुव्रत महासमिति, नई दिल्ली**

# बढ़ें संयम पथ पर

Golchha Organisation
INDUSTRY • COMMERCE • WELFARE

**लोकमान्य गोल्छा**
अध्यक्ष
गोल्छा ऑर्गेनाइजेशन
एवं
समस्त गोल्छा परिवार

**गोल्छा हाउस, काठमांडो (नेपाल)**
**फोन नं. : 4250001/4249939 (D)**
**फैक्स : 00977-1-4249723**

### विश्व मंगल गौ ग्राम यात्रा में हुआ दो संस्कृतियों का मिलन

# वैज्ञानिक ढंग से बताएं गाय की उपयोगिता

**श्रीडूँगरगढ़ 25 दिसम्बर।** विश्वमंगल गौ ग्राम यात्रा के कस्बे में आगमन पर भारत की दो संस्कृतियों का मिलन देख लोग हर्ष से फूले नहीं समा रहे थे। आचार्य महाप्रज्ञ एवं शंकराचार्य राघवेन्द्र भारती का मंच पर समागमन हुआ तो जैन संस्कृति एवं वैदिक संस्कृति की गूंज एक साथ सुनाई दी। प्रज्ञा समवसरण मे उपस्थित विशाल जनसमुदाय को संबोधित करते हुए आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा कि गाय की उपयोगिता पर वैज्ञानिक ढंग से प्रकाश डाला जाना चाहिए। जो दया, करुणा और अहिंसा को आत्मसात कर चुका है वही इसकी रक्षा के लिए चिंतन करता है। वर्तमान में गाय पर ध्यान कम दिया जा रहा है और नकली दूध, घी का सेवन किया जा रहा है। जो अनेक बीमारियों को पैदा कर रहा है। इस यात्रा में गौ रक्षा का संकल्प दिलाया जाता है इसके साथ नकली दूध, घी से दूरी रखने का संकल्प हो और प्रत्येक घर में गाय रखने का विचार हो तो अनेक समस्याओं का समाधान हो सकता है। आचार्य महाप्रज्ञ ने शंकराचार्य को करुणाशील एवं सरल हृदय बताते हुए जैन विश्व भारती को देखने की ओर इंगित किया। उन्होंने बताया कि जैन विश्व भारती को आचार्य तुलसी ने कामधेनु बताया है। इसके विशाल परिसर के मध्य में विशाल कामधेनु को स्थापित किया गया है। शंकराचार्य ने कहा कि गौ माता की हत्या का समर्थन कोई भी धर्म नहीं करता हैं। इसका समर्थन करने वाला कोई राक्षस ही हो सकता है। उन्होनें कहा कि हमारा लक्ष्य मानवता से माधवता की ओर बढ़ाना है। जो दूसरों का बुरा करता है वह अपना ही बूरा करता है। उन्होनें राष्ट्र को आचार्य महाप्रज्ञ जैसे प्रज्ञावान महापुरुषों की जरुरत बताते हुए कहा कि जो यात्रा की जा रही है लोगों की दृष्टि बड़ी बात हो सकती है परन्तु आज मेरे लिए इससे भी बड़ी बात है महाप्रज्ञ जी जैसे महायोगी से मिलना । इस यात्रा के कारण मैं इनसे दो बार मिल चुका हूँ इसलिए मैं इस यात्रा को महत्त्वपूर्ण मानता हूँ। युवाचार्य महाश्रमण ने कहा कि जैन परम्परा में गौचरी, गोष्ठी आदि अनेक शब्दों में गाय के वाचक शब्दों का प्रयोग होता है। गाय की हत्या हिंसा है। प्रत्येक प्राणी के प्रति हमारा मैत्री का भाव होना चाहिए एवं प्राणीमात्र को अपने समकक्ष समझना चाहिए। उन्होंने ग्राम संस्कृति में नशामुक्ति अभियान चलाने की प्रेरणा देते हुए कहा कि नशे के कारण ग्रामीण उत्थान नहीं कर पाते हैं। आज गांवों में अल्प विकास के साथ नशा मुक्ति पर बल देना भी जरुरी है।

## समता की साधना करने वाला ही योगी

**श्रीडूँगरगढ़, 26 दिसम्बर।** युवाचार्य महाश्रमण ने प्रातः-कालीन उद्‌बोधन में कहा जिसने मोह, माया को त्याग दिया और जिसने आत्म साधना के पथ पर अपने आपको समर्पित कर दिया वह सन्यासी होता है, उन्होनें कहा कि केवल वेश परिवर्तन से कोई सन्यासी या योगी नहीं बन जाता है। वेश का अपना मूल्य है उससे भी ज्यादा मूल्य फल परिवर्तन का है। जिसका क्लेश उपशम हो जाता हैं और समता की साधना करता है वह योगी होता है। मात्र प्राणायाम करना ही योग नहीं हैं। प्राणायाम योग का एक अंग है। उन्होंने बैंगलोर से समागत ज्ञानशाला के बालक-बालिकाओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि भावी पीढ़ी में ज्ञान और त्याग दोनों का विकास होना चाहिए। बच्चों के भीतर जैन विद्या का ज्ञान हो और उपासक, प्रशिक्षक बनने की भावना के साथ संघ में योगदान देने का विचार भी पु ठ होना चाहिए। युवाचार्य ने भावी पीढ़ी का निर्माण होने पर समाज, धर्मसंघ और राष्ट्र के लिए महत्त्वपूर्ण बताया।

## रिलेटिव इकॉनोमिक्स पुस्तक का लोकार्पण

**श्रीडूंगरगढ़, १७ दिसम्बर।** अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ के सान्निध्य में रिलेटिव इकॉनोमिक्स पुस्तक का लोकार्पण हुआ। आचार्य महाप्रज्ञ को समर्पित इस पुस्तक में आचार्यप्रवर के सापेक्ष अर्थशास्त्र के दर्शन को प्रस्तुति दी गई है। प्रो. जयनारायण शर्मा एवं डॉ. बच्छराज दूगड़ द्वारा आलेखित इस पुस्तक की भूमिका भारत सरकार के आर्थिक सलाहकार माणकचन्द सिंघी ने लिखी है।

डॉ. दूगड़ ने पुस्तक का परिचय देते हुए समागत विद्वानों का स्वागत किया। आज के कार्यक्रम में विशेष रूप से समागत कुमायूं विश्वविद्यालय के प्रोफेसर आर.सी. यादव, प्रो. विनोद त्यागी, प्रो. के. सी. अग्निहोत्री ने महावीर के अर्थशास्त्र एवं सापेक्ष अर्थशास्त्र पर सारगर्भित विचार व्यक्त करते हुए कहा 'आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा प्रवर्तित सापेक्ष अर्थशास्त्र की अवधारणा में अर्थशास्त्रीय समस्याओं के समाधान निहित हैं।'

प्रो. जे. एन. शर्मा एवं डॉ. बच्छराज दूगड़ ने 'रिलेटिव इकॉनोमिक्स' की प्रथम प्रति आचार्यश्री एवं युवाचार्यश्री को उपहृत की। प्रायोजक गुलाबचन्द श्यामसुखा ने समागत अतिथियों का साहित्य भेंट कर सम्मान किया। कार्यक्रम का संयोजन वंदना कुंडलिया ने किया।

युवाचार्य महाश्रमण ने कहा आचार्यप्रवर महात्मा गांधी से साक्षात् रूप तो नहीं मिले, किन्तु विचारों से अवश्य मिले हैं। विचारों के स्तर पर मिलना भी महत्त्वपूर्ण होता है। लोकार्पित कृति के संदर्भ में युवाचार्यश्री ने कहा 'यह पुस्तक बहुत उपयोगी प्रतीत हो रही है। सापेक्ष अर्थशास्त्र के अध्ययन में इसका अच्छा उपयोग किया जा सकता है। यह प्रयत्न आगे बढ़ता रहे, जिससे समाज का कल्याण हो।'

आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा 'मैंने जैन आगमों के साथ दर्शन को पढ़ा। दर्शन के साथ आचारशास्त्र पर ध्यान केन्द्रित हुआ। ज्ञान का सार है आचार। इस संदर्भ में मैंने बारह व्रतों को पढ़ा। बारह व्रत सापेक्ष अर्थशास्त्र का प्रमुख आधार बन गए।

आज विकास की परिकल्पना को बदलना जरूरी है। आर्थिक विकास, भौतिक विकास, नैतिक विकास और आध्यात्मिक विकास इन चारों का संतुलन जरूरी है। प्रो. जयनारायण शर्मा और डॉ. बच्छराज दूगड़ ने सापेक्ष अर्थशास्त्र के विचारों को पुस्तकाकार रूप देकर सुन्दर कार्य किया है।'

## अणुव्रत लेखक पुरस्कार-2008

# नैतिक लेखन को प्रोत्साहन मिले

**श्रीडूँगरगढ़ 31 दिसम्बर।** जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय, लाडनूं के दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के उपनिदेशक डॉ. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी 'रत्नेश' को अणुव्रत लेखन के क्षेत्र में दिये गये विशिष्ट योगदान के क्रम में अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ के सान्निध्य में श्रीडूंगरगढ़ में अणुव्रत लेखक पुरस्कार-2008 प्रदान किया गया। ताराचंद सेठिया ने मोमेण्टो, राकेश सेठिया ने प्रशस्ति-पत्र तथा ठाकरमल सेठिया ने 51000 रु. का चेक डॉ. त्रिपाठी को प्रदान किया। यह पुरस्कार अणुव्रत महासमिति द्वारा शासन भक्त स्व. हुकमचंद सेठिया, श्रीडूंगरगढ़ की पुण्यस्मृति में सुपुत्र ताराचंद, दीपचंद, ठाकरमल सेठिया के सौजन्य से दिया जाता है। डॉ. त्रिपाठी राजस्थान के वरिष्ठ साहित्यकारों में से हैं। उन्होंने साहित्य की अनेकानेक विधाओं पर अपनी लेखनी चलायी है और अब तक उनकी लगभग 40 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। इस अवसर पर डॉ. त्रिपाठी ने अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ को अपनी दार्शनिक कृतियां भारतीय दर्शन, नीतिशास्त्र, सांख्य-योग, दर्शन सम्प्रत्यय एवं धर्म-दर्शन भेंट कीं। डॉ. त्रिपाठी कई राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं के नियमित लेखक हैं तथा आकाशवाणी एवं जयपुर दूरदर्शन पर इनकी वार्ताएं एवं परिचर्चाएं प्रसारित होती रहती हैं। इससे पूर्व यह पुरस्कार धर्मचंद चोपड़ा, डॉ. निजामुद्दीन, राजेन्द्र अवस्थी, विश्वनाथ सचदेव, डॉ. नरेन्द्र शर्मा 'कुसुम' को दिया जा चुका है।

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ ने अपने उद्बोधन में कहा कुछ शब्द मेरे मन को आकृष्ट करते हैं उनमें एक शब्द है आचार्य तुलसी और दूसरा शब्द है अणुव्रत। आचार्य तुलसी ने नैतिक क्रांति के लिए अणुव्रत आंदोलन का प्रवर्तन किया। भगवान महावीर ने गृहस्थों के लिए अणुव्रत दिया। अणुव्रत के माध्यम से आचार्य तुलसी ने राष्ट्रीय चरित्र के निर्माण पर बल दिया। प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद इस आंदोलन से अत्यन्त भावित थे। यदि राष्ट्र अणुव्रत का बराबर मूल्यांकन करता तो चरित्र के संदर्भ में पहले नंबर पर आता। हर भारतीय को राष्ट्रहित में अणुव्रत को स्वीकारना चाहिए। डॉ. त्रिपाठी जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय में प्राध्यापक हैं, अणुव्रत के समर्पित कार्यकर्ता हैं। स्थानीय समिति से लेकर महासमिति तक जुड़े हैं। इनकी देख-रेख में स्थानीय समिति अच्छा कार्य कर रही है। अच्छा लिखते हैं हर एक कार्य समर्पण भाव से करते हैं। ये श्रद्धालु श्रावक भी हैं। अणुव्रत लेखकीय मंच द्वारा जो पुरस्कार दिया गया है इनके लिए यह पुरस्कार छोटा है। इन्होंने काम बड़ा किया है और अधिक कार्य करते रहें यही शुभकामना है। नैतिक लेखन को प्रोत्साहन मिलते रहना चाहिए।

युवाचार्य महाश्रमण ने कहा अणुव्रत लेखक पुरस्कार का संदर्भ है। लेखक पहले सरस्वती का पुजारी होता है। लेखन विभिन्न विषयों में हो सकता है। नैतिक और आचार सम्बन्धी लेखन करना विशेष बात है। डॉ. त्रिपाठी जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय एवं अणुव्रत महासमिति से जुड़े हुए हैं। जितना मैंने इन्हें देखा और समझा है ये सौम्य स्वभाव के व्यक्ति हैं। सौम्यता का होना अणुव्रत का प्रभाव है। अपने कार्यों द्वारा समाज की पुनीत सेवा करते रहे हैं। प्रारंभ में राजस्थान प्रादेशिक अणुव्रत समिति के अध्यक्ष सम्पत सामसुखा एवं प्रायोजक ठाकरमल सेठिया ने लेखकों का स्वागत किया। लेखक मंच के संयोजक डॉ. नरेन्द्र शर्मा 'कुसुम' ने अणुव्रत लेखक मंच पुरस्कार का विस्तार से परिचय दिया। अणुव्रत प्रभारी मुनि सुखलाल ने अणुव्रत आंदोलन का परिचय देते हुए डॉ. त्रिपाठी द्वारा अणुव्रत लेखन की सराहना की। अणुव्रत पाक्षिक के संपादक एवं अणुव्रत महासमिति के संरक्षक डॉ. महेन्द्र कर्णावट ने प्रशस्ति-पत्र का वाचन करते हुए कहा नैतिक लेखन के लिए दिया जाने वाला यह पुरस्कार योग्यतम व्यक्ति को मिल रहा है, इस बात की मुझे बहुत खुशी है। डॉ. त्रिपाठी ने सभी के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त किया। मुनि सुधाकर ने भी अपने विचार रखे। संचालन मुनि मोहजीतकुमार ने किया।

## मुख्यमंत्री से वार्तालाप

**सूरत।** महिला मंडल सूरत द्वारा गुजरात राज्य के मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी से वार्तालाप किया। वार्तालाप में ''बेटी बचाओ अभियान'' के अंतर्गत ज्ञापन पत्र, साहित्य शक्ति पोस्टर, भ्रूणहत्या रोकथाम केलेण्डर व महिला मंडल की सभी गतिविधियों की किट पूरी जानकारी के साथ भेंट की गयी। महिला मंडल की बहनों ने भ्रूणहत्या जैसे जधन्य अपराध को रोकने हेतु अजन्मे मासूम की आवाज को राज्य सरकार तक पहुँचाने के लिए यह कदम उठाया है। इस अवसर पर सरोज बांठिया, मधु देरासरिया, चंदा भोगर, सरोज सेठिया, रानी राठौड, नेमकंवर जीरावाला, राजूल चौरड़िया, पूनम गुजरानी, भवरीदेवी सुराणा एवं कनक बरड़िया उपस्थित थी।

## पारसमल दूगड़ को 'महाराष्ट्र रत्न-2009'

**कांदिवली।** प्रेक्षाध्यान व अहिंसात्मक चिकित्सा के क्षेत्र में विशिष्ट कार्य के लिए अनेक पुरस्कारों से पुरस्कृत पारसमल डी. दूगड़ कांदिवली को इस वर्ष जनहित सामाजिक प्रतिष्ठान मुंबई द्वारा ''महाराष्ट्र रत्न-2009'' प्रदान करने की घोषणा की गयी। पारसमल दूगड़ कांदिवली (मुंबई) में 13 वर्षों से प्रेक्षाध्यान योग साधना केन्द्र का नियमित संचालन कर मुंबई समाज को निःशुल्क व निःस्वार्थ भाव से अपनी सेवाएं दे रहे हैं। इस केन्द्र के माध्यम से प्रेक्षाध्यान पद्धति के माध्यम से जन-जन तक पहुँचाया जा रहा है। साथ ही लगभग 53000 लोगों को प्रेक्षाध्यान का निःशुल्क प्रशिक्षण दिया जा चुका है। केन्द्र द्वारा हर माह किसी आश्रम में, अनाथ आश्रम, अपंग आश्रम, अंधाश्रम व आदिवासी क्षेत्र में कार्यशाला का आयोजन किया जाता है।

# अणुव्रत सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता

**लाडनूं**। अणुव्रत के मूल्यों के प्रचार-प्रसार एवं विद्यार्थियों में अणुव्रत मूल्यों को आत्मसात कराने की दृष्टि से अणुव्रत समिति लाडनूं द्वारा ''अणुव्रत सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता'' का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में वस्तुनिष्ठ प्रश्न दिये गये थे। अणुव्रत समिति के मंत्री डॉ. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने बताया कि यह प्रतियोगिता जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय एवं समाज कार्य विभाग में पृथक-पृथक आयोजित हुए। आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के अंतर्गत बी.ए. तृतीय वर्ष की छात्रा रितु घोषाल ने प्रथम, बी.ए. द्वितीय वर्ष की छात्रा रोहिणी बांगड़ ने द्वितीय एवं चेतना बैद ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। इसी प्रकार समाज कार्य विभाग की सरला जैन ने प्रथम, इशू गोयल ने द्वितीय एवं हेमन्त कुमार खत्री ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। अध्यक्ष ओमप्रकाश सोनी ने बताया कि विजेता प्रतियोगियों को समिति के विशेष समारोह में पुरस्कृत किया जायेगा। प्रतियोगिता की आयोजना में डॉ. प्रतिभा जैन मिश्रा, रामकैलाश जोशी एवं सुनीता इन्दौरिया का सराहनीय श्रम रहा।

## अणुव्रत कार्यकर्ता का अभिनन्दन

**बाढ़ (बिहार)**। अणुव्रत शिक्षक संसद और अणुव्रत समिति के बिहार राज्य इकाई के लिए समर्पित वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय आरा के पूर्व रजिस्ट्रार डॉ. धर्मेन्द्र आचार्य के राष्ट्रीय अणुव्रत शिक्षक संसद के राष्ट्रीय सहसंयोजक मनोनीत होने पर बाढ़ जनपदीय इकाई द्वारा अभिनन्दन किया गया। इस अवसर पर अणुव्रत शिक्षक संसद के राष्ट्रीय परामर्शक डॉ. हीरालाल श्रीमाली ने विशेष रूप से भाग लिया एवं डॉ. धर्मेन्द्र आचार्य और प्रो. साधुशरण सिंह 'सुमन' का शॉल ओढ़ाकर संस्था की ओर से सम्मान किया।

बाढ़ के अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र परिसर में आयोजित समारोह का शुभारंभ 'अणुव्रत सेवी' तनसुखलाल बैद द्वारा अणुव्रत गीत से हुआ। बाढ़ नगर परिषद की चेयरमैन निर्मला देवी ने बाढ़ जनपद में अणुव्रत आंदोलन से आए बदलाव पर प्रकाश डाला और सभी का स्वागत किया। संगठन के जिला अध्यक्ष डॉ. अशोक कुमार सिंह ने अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र की भूमिका पर प्रकाश डाला। संगठन के जिला अध्यक्ष डॉ. अशोक कुमार सिंह ने अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र की भूमिका पर प्रकाश डाला।

समारोह में डॉ. हीरालाल श्रीमाली ने भावपूर्ण उद्बोधन प्रदान करते हुए कार्यकर्ताओं की संख्या एवं शक्ति के विकास से होने वाले बदलावों को रेखांकित किया। छात्र संसद के संयोजक राणा शत्रुघ्न, प्रशिक्षक सुधीर कुमार गुलशन, अलहाज डॉ. आलेहसन आजाद, सुनीता सारंगपाणि एवं रंजना रानी ने भी अपने विचार रखे। शिक्षक संसद के राज्य संयोजक नवलकिशोर प्रताप सिंह का भी सम्मान किया गया। उन्होंने बिहार राज्य में हो रहे संसद के कार्यों पर प्रकाश डाला। समारोह का संयोजन केन्द्र प्रभारी 'अणुव्रत सेवी' प्रो. साधुशरण सिंह सुमन ने किया।

# दरभंगा में अणुव्रत की गूंज

**नई दिल्ली**। अणुव्रत महासमिति के उपमंत्री डॉ. बी.एन. पांडेय ने 19 दिसंबर 09 से 29 दिसंबर 09 के मध्य बिहार प्रांत की संगठन यात्रा की। इस दौरान उन्होंने निम्न क्षेत्रों का दौरा किया

**दरभंगा :** दरभंगा जिला अणुव्रत समिति के प्रयास से कमतौल, दरभंगा में दो दिवसीय भ्रष्टाचार उन्मूलन, प्रशिक्षण, नशाबन्दी, पारिवारिक हिंसा कैसे रुके, ग्रामीण क्षेत्र में सफाई तथा योगध्यान शिविर का आयोजन 20-21 दिसंबर 09 को किया गया। स्थानीय एवं जिला स्तरीय प्राध्यापक, अध्यापकगण एवं प्रबुद्ध नागरिकों ने अपने विचार व्यक्त किये, स्कूली छात्र-छात्राओं का योगदान भी सराहनीय रहा। कार्यशाला में 126 लोगों ने दो दिन तक भाग लिया। अंतिम दिन लगभग 2000 की संख्या में पांच स्कूलों के विद्यार्थियों एवं स्थानीय नागरिकों ने रैली निकालकर 12 किलोमीटर मार्ग तय किया।

**ईस्ट चम्पारण :** घोड़ा सहन में गांधी विद्या निकेतन में 24-25 दिसंबर 09 को दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में विभिन्न स्कूलों के अध्यापक, वकील, बुद्धिजीवी, वरिष्ठ नागरिक, छात्र-छात्राओं के अभिभावकों के अतिरिक्त कई सरकारी पदाधिकारियों ने भाग लिया। इसमें 82 लोगों की उपस्थिति रही। कार्यशाला का उद्घाटन, आचार्य संतोष सिन्हा ने किया। स्वागत वक्तव्य में प्रखंड विकास पदाधिकारी गोपालराम, प्रधानाचार्य श्यामवशिष्ट मिश्रा ने वर्तमान में अणुव्रत की महती आवश्यकता की बात कही।

लोगों ने संकलप लिया कि हम सप्ताह में कम से कम एक घंटे का समय अणुव्रत आचार संहिता में उद्धृत कार्यक्रम में समय लगा देंगे। तत्पश्चात एक भव्य जुलूस का भी आयोजन हुआ। जुलूस देखने के लिए हजारों की तादाद में लोग घरों से निकल पड़े। कार्यशाला की समाप्ति पर हजारों लोगों की भीड़ देखकर डॉ. बी.एन. पांडेय की आंखों में अश्रु बह चली और जवानी में यहां के लोगों के बीच का स्मरण हो आया।

**भ्रष्टाचार उन्मूलन कार्यशाला**

**कमतौल :** जिला अणुव्रत समिति कमतौल दरभंगा के तत्वावधान में भ्रष्टाचार उन्मूलन कार्यशाला का आयोजन माँ शांति औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान कमतौल के प्रांगण में किया गया। कार्यशाला में वयोवृद्ध स्वतंत्रता सेनानी एवं अणुव्रत महासमिति के उपमंत्री डॉ. बी.एन. पांडेय ने विशेष रूप से भाग लेकर उद्घाटन किया। कार्यशाला को संबोधित करते हुए जिलाध्यक्ष डॉ. संजय कुमार, महासचिव दीनानाथ, रामबालक, अनिल मिश्र, जिला प्रमुख रंजीत प्रसाद, कमतौल मुखिया मोहन बैठा ने उपस्थित प्रतिभागियों का मनोबल बढ़ाया। धन्यवाद ज्ञापन एम्ब्रिज स्कूल ऑफ एजुकेशन के प्राचार्य चन्द्रिका प्रसाद ठाकुर ने किया।

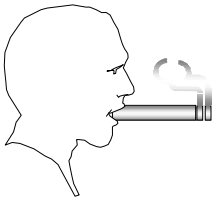

आपका मुँह
ऍश-ट्रे या कूड़ादान
नहीं

## सही परामर्श से होती है मंजिल आसान

**लाडनूं, 19 दिसंबर।** जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय लाडनूं के कैरियर एवं काउंसलिंग सैल द्वारा आयोजित "शिक्षा के क्षेत्र में कैरियर कैसे बनाएं" विषयक कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए केशव विद्यापीठ के प्राचार्य शिक्षाविद् प्रो. अशोक शर्मा ने बी.एड. एवं एम.एड. के विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा विद्यार्थी सही मार्गदर्शन के अभाव में भटकता रहता है। वह कभी एम.एस-सी. करता है तो कभी एल.एल. बी. तो कभी बी. एड. करता है, कभी कम्प्यूटर कोर्स करता है। इस तरह के भटकाव में ही जीवन का काफी समय निकल जाता है। अगर विद्यार्थी प्रारंभ से ही सही परामर्श के द्वारा सही रास्ते का चयन करे तो अपनी लक्षित मंजिल को आसानी से प्राप्त कर सकता है। सही परामर्श से रास्ते और मंजिल बहुत आसान हो जाते हैं। विद्यार्थी सदैव जागरूक रहें और सकारात्मक सोच रखें तो मंजिल तलाशने में कभी दिक्कत नहीं होगी।

विश्वविद्यालय की कुलपति समणी डॉ. मंगलप्रज्ञा ने समारोह की अध्यक्षता करते हुए कहा आज विश्वविद्यालय में नई शुरुआत हो रही है ताकि विद्यार्थियों को भविष्य का दर्शन मिल सके। अपने मार्ग को आसान बनाने के लिए सही मार्गदर्शन की जरूरत होती है। कैरियर काउंसलिंग सैल की स्थापना होने से विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों को सही परामर्श मिल सकेगा। यह परामर्श प्रकोष्ठ चर्चा-परिचर्चा का केन्द्र बने, एतदर्थ समय-समय पर इसके द्वारा विचार गोष्ठी भी आयोजित होती रहनी चाहिएं। जीवन में सफलता के लिए कल्पना कीजिए, स्वप्न देखिए और सपनों को साकार कीजिए।

डॉ. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी ने कहा विश्वविद्यालय का यह परामर्श प्रकोष्ठ देश-विदेश की नौकरियों की सूचना के साथ विद्यार्थियों की क्षमता के अनुसार उन्हें अपना क्षेत्र चयन करने की प्रेरणा देगा। यह प्रकोष्ठ समय- समय पर अनेकानेक क्षेत्र के विद्वानों को आमंत्रित कर कैरियर के संदर्भ में मार्गदर्शन प्रदान करेगा। कार्यक्रम के अंत में शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. बी.एल. जैन ने आभार ज्ञापन किया।

उद्घाटन समारोह के पश्चात् कुलपति समणी डॉ. मंगलप्रज्ञा के सान्निध्य में मुख्य अतिथि प्रो. अशोक शर्मा ने फीता खोलकर प्रकोष्ठ का विधिवत् उद्घाटन किया। इस अवसर पर कुलसचिव डॉ. जे.पी.एन. मिश्रा, समन्वयक डॉ. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी, विभागाध्यक्ष डॉ. बी.एल. जैन, मनीष भटनागर, बी. प्रधान, अमिता जैन, सरोज राय, गिरिराज भोजक, आभा सिंह, घासीलाल शर्मा, कैलाश जोशी, शरद जैन एवं एम.एड. की छात्राएं उपस्थित थी।

## सशक्त समाज के निर्माण में महिलाओं की भूमिका

**नई दिल्ली।** महिलाओं में वह शक्ति है जिससे वे एक सशक्त व संस्कारित समाज का निर्माण कर सकती हैं। वर्तमान युग जिस गति से आगे बढ़ रहा है, महिलाएं वहाँ अपने आपको कहाँ स्थिर कर पा रही है, यह विचारणीय प्रश्न है। आज महिला सशक्तिकरण की हवा चारों ओर बह रही है। महिलाओं में आत्मविश्वास बढ़ा है, वह अपने आपको आर्थिक दृष्टि से सुरक्षित महसूस करती है। रफ्तार के इस युग में संयमरूपी गति रोधक की आवश्यकता है, अन्यथा दुर्घटना की संभावना रहती है। ये विचार साध्वी यशोधरा ने महिला मंडल दिल्ली द्वारा आयोजित एक विचार संगोष्ठी में व्यक्त किए। साध्वीश्री ने कहा कि केवल सुविधावाद के बलबूते विकास संभव नहीं है। संयमित व संतुलित जीवन ही हमारे विकास के पथ को प्रशस्त कर सकता है। जया राखेचा, अरुणा डूंगरवाल, भारती कांठेड़ एवं अन्य महिलाओं ने अपने विचार रखे।

## विश्व धर्म संसद में बालोदय की प्रस्तुति

**राजसमंद, 22 दिसंबर।** आस्ट्रेलिया के शहर मेलबोर्न में दिसम्बर माह में आयोजित विश्व धर्म संसद (पार्लियामेंट ऑफ वर्ल्ड्स रिलिजन्स) में अणुव्रत विश्व भारती के महामंत्री संजय जैन ने राजसमंद में संचालित बालोदय कार्यक्रम की सशक्त प्रस्तुति दी। उन्होंने "जैन पर्सपेक्टिव ऑन नॉन वायलेंस एंड सेल्फ कन्ट्रोल ए मॉडल फोर एज्युकेशन" विषय पर पावर पाइंट प्रजेन्टेशन के माध्यम से अहिंसा एवं संयम के आधार पर आदर्श व्यक्तित्व के निर्माण में बालोदय कार्यक्रम की भूमिका पर प्रकाश डाला। बालोदय कार्यक्रम की चित्रमय प्रस्तुति ने सत्र में उपस्थित संभागियों को बेहद प्रभावित किया। अनेक देशों के प्रतिनिधियों ने बालोदय को एक नया प्रयोग माना एवं इसके बारे में अनेक प्रश्न रखे, साथ ही इस कार्यक्रम से जुड़ने की इच्छा प्रकट की। कुछ प्रतिनिधियों ने यह भी जानना चाहा कि इस प्रकार का प्रकल्प यदि वे अपने देश में प्रारंभ करना चाहें तो अणुविभा से किस प्रकार का सहयोग मिल सकता है।

मेलबोर्न से लौटकर संजय जैन ने बताया कि यह विश्व का सबसे बड़ा अन्तर-साम्प्रदायिक सम्मेलन है जो पाँच वर्ष में एक बार आयोजित होता है। 1893 में शिकागो में प्रसिद्ध धर्म-संसद का आयोजन हुआ था। जिसमें भारत का ऐतिहासिक प्रतिनिधित्व स्वामी विवेकानंद ने किया था। इस सम्मेलन के 100 वर्ष बाद शिकागो में ही सन 1993 में पुनः धर्म-संसद का आयोजन हुआ। इसी क्रम में यह पाँचवी विश्व धर्म संसद थी जिसमें दुनियाभर से 8000 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। मेलबोर्न के भव्य कन्वेन्शन सेंटर में 3 से 9 दिसंबर तक यह सम्मेलन चला जिसे दलाई लामा, रविशंकर सहित अनेक धर्म गुरुओं ने संबोधित किया।

अणुव्रत विश्व भारती (अणुविभा) का प्रतिनिधित्व इसके अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. सोहनलाल गांधी, महामंत्री संचय जैन, उपाध्यक्ष नरेश मेहता ने किया। जैन विश्व भारती की उपकुलपति समणी डॉ. मंगलप्रज्ञा एवं अन्य समणीवृंद ने जैन धर्म के सिद्धांतों की सशक्त प्रस्तुति दी।

## पर्यावरण की चेतना का जागरण जरूरी

**अहमदगढ़, 9 दिसंबर।** मुनि सुमेरमल 'लाडनूं' ने कहा पूरे प्राणी जगत् पर खतरा मंडरा रहा है। कई पशु, पक्षियों की दुर्लभ प्रजातियां विलुप्त हो गई हैं तो कई विलुप्तता के कगार पर हैं। वन क्षेत्र संकुचित होते जा रहे हैं। ग्लेशियर पिंघलते जा रहे हैं। यह सब पर्यावरण प्रदूषण के कारण हो रहा है। इसके प्रति चेतना का जागरण नहीं हुआ तो पूरी दुनिया को इसका खामियाजा भुगतना पड़ेगा। मुनिश्री अहमदगढ़ में आयोजित 'पर्यावरण जागरूकता रैली" को संबोधित करते हुए बोल रहे थे। रैली में बड़ी संख्या में स्कूली बच्चे व अध्यापक सम्मिलित थे। ग्रीन वेली पब्लिक स्कूल द्वारा आयोजित इस रैली में बच्चों के हाथों में बेनर व तख्तियां थी, जिन पर लिखे नारों, वाक्यों से पर्यावरण जागरूकता की अपील की।

मुनिश्री ने अणुव्रत आंदोलन की चर्चा करते हुए कहा अणुव्रत आंदोलन की आचार संहिता में पर्यावरण संरक्षण पर पूरा बल दिया गया है। ऐसी रैलियां निश्चित रूप से जागरूकता पैदा करेंगी। मुनि उदितकुमार ने भी अपने विचार रखे।

सचिव भूषण जैन ने मुनिश्री का स्वागत किया। मुनि विजयकुमार ने पर्यावरण गीत का संगान किया। प्राचार्या कविता ग्रोवर ने आभार ज्ञापन किया।

## तीन दिवसीय एक्यूप्रेशर कार्यशाला

**गांधीनगर, 21 दिसंबर।** सभा भवन गांधीनगर में समणी नूतनप्रज्ञा एवं उन्नतप्रज्ञा के सान्निध्य में युवक परिषद् बैंगलोर एवं महाप्रज्ञ एक्यूप्रेशर तथा वास्तु क्लिनिक बैंगलोर के संयुक्त तत्वावधान में तीन दिवसीय एक्यूप्रेशर वर्कशॉप का समापन हुआ। इसमें लगभग 200 संभागियों ने भाग लिया। बंशीलाल पीतलिया ने सभी डॉक्टरों एवं संभागियों का तीन दिवसीय कार्यशाल में सहयोग हेतु धन्यावाद एवं आभार व्यक्त किया। डॉ. रवि ने एक्यूप्रेशर कार्यशाला में भाग लेने वाले सभी संभागियों के प्रति मंगलकामना व्यक्त की। समणी नूतनप्रज्ञा एवं उन्नतप्रज्ञा ने संभागियों को संबोधित किया। कार्यशाला में आरोग्य मंदिर जोधपुर राजस्थान से डॉ. रविकांत एवं डॉ. रूबी ने विशेष रूप से भाग लिया एवं तीन दिन तक संभागियों को प्रशिक्षण दिया। कार्यशाला के संयोजक रमेश दक, सुधीर सिसोदिया का विशेष सहयोग रहा। महिला मंडल की अध्यक्ष कान्ता लोढ़ा, राजेन्द्र बैद, जयंतिलाल बोहरा, रूपचंद देसरला, सुरेन्द्र गिरिया, प्रवीण नाहर, कैलाश गांधी, महावीर चौपड़ा, राकेश खटेड़, अरविन्द बैद, रोहित कोठारी उपस्थित थे। संचालन रमेश दक ने किया। अतिथियों का सम्मान युवक परिषद् द्वारा किया गया। आभार ज्ञापन प्रदीप संकलेचा ने किया।

## पब्लिक स्कूल में जीवन विज्ञान

**श्रीगंगानगर।** मुनि प्रशांतकुमार के सान्निध्य में युवक परिषद् के तत्वावधान में प्रेक्षाध्यान शिविर का आयोजन हुआ। शिविर में लगभग सभी सम्प्रदायों के 150 लोगों ने भाग लिया। विनोबा बस्ती पार्क में नियमित रूप से चलने वाली योगा कक्षाओं में भाग लेने वाले एवं वहाँ प्रातः भ्रमण करने वाले प्रायः सभी लोगों ने इस शिविर में प्रशिक्षण प्राप्त किया। मुनि प्रशांतकुमार ने प्रेक्षाध्यान पद्धति और उसके साथ चिकित्सात्मक प्रयोगों के बारे में विस्तार से प्रशिक्षण देते हुए प्रयोग करवाये। जीवन विज्ञान प्रशिक्षक राजेन्द्र आंचलिया ने प्रेक्षाध्यान के संबंध में पूर्व भूमिका प्रस्तुत की। मुनिश्री ने शिविर में कायोत्सर्ग, अनुप्रेक्षा एवं जीवन विज्ञान के संकल्पों के प्रयोग करवाए। मुनि कुमुदकुमार ने साधकों को प्रेक्षाध्यान का महत्त्व समझाया।

## जयपुर अणुव्रत समिति का चुनाव सम्पन्न

**जयपुर, 20 दिसंबर।** जयपुर अणुव्रत समिति के अध्यक्ष पद का चुनाव अणुव्रत महासमिति के अध्यक्ष निर्मल रांका की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इसमें अध्यक्ष पद के लिए आशा नीलू टांक के नाम की घोषणा चुनाव अधिकारी हिम्मत डोसी ने सर्वसम्मति से की।

इस चुनाव प्रक्रिया में समिति की पूर्व अध्यक्षा विमला दूगड़ के कार्यकाल की उपस्थित सदस्यों ने सराहना करते हुए धन्यवाद प्रस्ताव पारित किया। इस अवसर पर जयपुर अणुव्रत समिति की पूर्व मंत्री आशा नीलू टांक ने पिछले कार्यकाल में संपादित हुए कार्यों का ब्यौरा प्रस्तुत किया।

## शिक्षक समाज को सही दिशा दे सकता है

**भिलाई, 26 दिसंबर।** जीवन विज्ञान अकादमी दुर्ग-भिलाई छत्तीसगढ़ एवं शिक्षा विभाग के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित 6 दिवसीय जीवन विज्ञान शिक्षक प्रशिक्षण शिविर पोरवाल प्रेक्षा भवन, नेहरू नगर भिलाई में दानमल पोरवाल की अध्यक्षता में आयोजित हुआ। प्रारंभ अणुव्रत गीत के संगान से हुआ। वर्धापन कार्यक्रम से पूर्व सभी संभागियों, प्रशिक्षकों एवं जीवन विज्ञान अकादमी दुर्ग के कार्यकर्ताओं ने भिलाई-3 स्थित जैन भवन में मुनि भूपेन्द्र कुमार के दर्शन कर आशीर्वाद लिया।

मुनि भूपेन्द्रकुमार ने शिक्षकों को संबोधित करते हुए कहा गिरते हुए जीवन मूल्यों के संताप से समाज को उबारने में जीवन विज्ञान पद्धति ही अन्तिम उपाय के रूप में हमारे सामने है, जिसके द्वारा बालकों के सर्वांगीण विकास की भूमिका प्रशस्त कर समाज को सही दिशा और दशा प्रदान की जा सकती है और मात्र शिक्षक ही एक ऐसा शिल्पी है जो समाज को सही दिशा प्रदान करने में सक्षम है।

मुख्य अतिथि हेमन्त उपाध्याय जिला शिक्षा अधिकारी, दुर्ग ने कहा माता-पिता बालक को जन्म देते हैं परन्तु शिक्षक उसे जीने का ज्ञान देकर उसके सम्पूर्ण जीवन को रूपांतरित कर सकता है। वर्तमान शिक्षा पद्धति के अधूरेपन को मानसिक एवं भावनात्मक विकास के द्वारा जीवन विज्ञान शिक्षा द्वारा पूर्ति की जा सकती है।

सरस्वती शिशु मंदिर के अध्यक्ष रतनलाल शर्मा ने कहा हमारे विद्यालय में विगत कई वर्षों से प्रार्थना सभा में जीवन विज्ञान का कार्यक्रम संचालित किया जा रहा है। जिसके परिणाम स्वरूप विद्यार्थियों के जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सकारात्मक परिवर्तन दृष्टिगोचर हो रहा है। इस अवसर पर रूपनारायण सिन्हा, रामनरेश पाण्डेय एवं भोजराम साहू ने अपने विचार रखे।

पोरवाल चेरीटेबल ट्रस्ट के अध्यक्ष दानमल पोरवाल ने शिक्षकों को आह्वान किया शिक्षक समाज के प्रति अपने उत्तरदायित्व को और अधिक गहराई से समझ कर बाल एवं युवा पीढ़ी को संस्कारित बनाने में अपना योगदान प्रदान करें एवं जीवन विज्ञान के प्रयोगों से अपने विद्यार्थियों को लाभान्वित करें।

जीवन विज्ञान अकादमी दुर्ग भिलाई के अध्यक्ष किशोरी लाल कोठारी ने धन्यवाद ज्ञापित किया। इस अवसर पर तिलोकचंद बरमेचा, विजय जैन, संजय बरमेचा, कुशालचंद कोठारी उपस्थित थे। संचालन शिक्षक भूपेन्द्र कुमार देवांगन ने किया।

## राजेन्द्र अवस्थी का निधन

**नई दिल्ली, 31 दिसंबर।** हिन्दी के जाने माने साहित्यकार, पत्रकार एवं उपन्यासकार राजेन्द्र अवस्थी का 79 वर्ष की आयु में 30 दिसंबर 09 को दिल्ली के एस्कॉर्ट अस्पताल में आकस्मिक निधन हो गया। उन्होंने दिल्ली में बच्चों की पत्रिका 'नंदन' का प्रारंभ किया एवं कादम्बिनी और साप्ताहिक हिन्दुस्तान का भी संपादन किया। श्री अवस्थी ने अनेक उपन्यास और कहानी लिखे जो काफी चर्चित रहे उनकी कृतियों के अनुवाद विश्व की अनेक भाषाओं में हुए हैं। उन्हें साहित्य के क्षेत्र में अनेक सम्मान एवं पुरस्कारों से नवाजा गया।

दिवंगत आत्मा को अणुव्रत महासमिति परिवार की भावभीनी श्रद्धांजलि।

# अणुव्रत योगक्षेमी विसर्जन योजना

अणुव्रत की आचार संहिता व्यापक आचार संहिता है। अणुव्रत का अर्थ है– नैतिकता। आज चहुँ ओर हाहाकार है। समूचा मानव समाज पीड़ित है अनैतिकता से। विधायिका, कार्यपालिका, न्यायपालिका, संचार माध्यम, शिक्षण संस्थान सभी भ्रष्टाचार, नशा और आडम्बर में लिप्त हैं। बढ़ते भ्रष्टाचार, नशा और आडम्बर ने हमारी विकास यात्रा की गति को मंद कर दिया है। समाज में व्याप्त इन बुराइयों के विरुद्ध आवाज उठाना भी आसान नहीं है क्योंकि हर डाल पर वे अपना डेरा डाले बैठे हैं। हाँ, इन बुराइयों के मूल कारणों पर प्रहार कर एक दीपक जला समाज में नैतिकता के प्रति निष्ठा को पुनः पैदा किया जा सकता है।

अणुव्रत आंदोलन ने समाज में व्याप्त बुराइयों पर अँगुली उठाई है। हमारे साधन, शक्ति सीमित हैं। अँगुली निर्देश का यह क्रम न सिर्फ गतिशील रहे वरन् लोकव्यापी बने और अणुव्रत की कार्यकर्ता शक्ति अनैतिकता के सामने प्रतिरोधक शक्ति बनकर खड़ी हो इस दृष्टि से अणुव्रत महासमिति के पास पूरे साधन हो यह भी अत्यन्त आवश्यक है।

आने वाले पाँच वर्षों में अणुव्रत की सर्व प्रवृत्तियाँ सुचारू रूप से संचालित हो और अणुव्रत के आंदोलनात्मक स्वरूप में तेजस्विता आए इस दृष्टि से अणुव्रत योगक्षेमी विसर्जन योजना का वर्ष 2009–10 से प्रारंभ हुआ है। इस योजना के अन्तर्गत प्रतिवर्ष एक निश्चित अर्थ राशि विसर्जित करने वाले अर्थ प्रदाताओं के तीन वर्ग हैं–

| | |
|---|---|
| **विशिष्ट अणुव्रत योगक्षेमी** | **प्रतिवर्ष 51000=00 रु. का अर्थ सहयोग** |
| **विशेष अणुव्रत योगक्षेमी** | **प्रतिवर्ष 21000=00 रु. का अर्थ सहयोग** |
| **अणुव्रत योगक्षेमी** | **प्रतिवर्ष 11000=00 रु. का अर्थ सहयोग** |

अणुव्रत योगक्षेमी विसर्जन योजना के अन्तर्गत पाँच वर्षों तक नियमित रूप से अर्थ विसर्जन का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। महाप्रतापी अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य तुलसी के जन्म शताब्दी वर्ष को दृष्टिगत रखते हुए अणुव्रत महासमिति की प्रवृत्तियों के सुचारू संचालन हेतु इस योजना का श्रीगणेश हुआ है। आप सभी से विनम्र अनुरोध है कि अणुव्रत योगक्षेमी विसर्जन योजना से जुड़कर अणुव्रत आंदोलन के प्रचार–प्रसार में सहभागी बनें। आपका अर्थ सहयोग हमारे कार्य का आधार सम्बल बनेगा। अणुव्रत योगक्षेमी विसर्जन योजना में अभी तक निम्न महानुभावों ने जुड़कर अणुव्रत के आंदोलनात्मक स्वरूप को निखारने में अपनी सहभागिता अंकित कराई है–

- **विशिष्ट अणुव्रत योगक्षेमी**

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1. श्री जुगराज नाहर | चैन्नई | 2. श्रीमती शांता नाहर | चैन्नई |
| 3. श्री बी.सी भलावत | मुम्बई | 4. श्री रमेश धाकड़ | मुम्बई |
| 5. श्री कमलेश भादानी | तिरूपुर | 6. श्री मगन जैन | तुषरा |

- **विशेष अणुव्रत योगक्षेमी**

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1. श्री बाबूलाल गोलछा | दिल्ली | 2. श्री सम्पत वागरेचा | वाशी |
| 3. श्री सम्पत सामसुखा | भीलवाड़ा | 4. श्री जसराज बुरड़ | जसोल |
| 5. श्री निर्मल नरेन्द्र रांका | कोयम्बतूर | 6. श्री गोविन्दलाल सरावगी | कोलकाता |

- **अणुव्रत योगक्षेमी**

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1. श्री जी.एल.नाहर | जयपुर | 2. श्री विजयराज सुराणा | दिल्ली |
| 3. श्री मीठालाल भोगर | सूरत | 4. श्री बाबूलाल दूगड़ | आसीन्द |
| 5. श्री गुणसागर डॉ. महेन्द्र कर्णावट | राजसमन्द | 6. श्री अंकेशभाई दोषी | सूरत |
| 7. श्री महावीर मेड़तवाल | राजाजी का करेड़ा | | |

आइये! अणुव्रत योगक्षेमी विसर्जन योजना से जुड़कर हम सभी प्रयास करें स्वस्थ समाज संरचना के सपने को धरती पर उतारने का। इस क्रम में आपका त्वरित सहयोग प्राप्त हो यही अनुरोध है। आप अपनी विसर्जन राशि बैंक ड्राफ्ट से अणुव्रत महासमिति के नाम से नई दिल्ली भिजवायें या केनरा बैंक की किसी भी स्थानीय शाखा में अणुव्रत महासमिति के खाता क्रमांक **0158101010750** में जमा करायें।

**आपका सहयोग : हमारा आधार संबल**